35 वाँ राष्ट्रीय फिल्म समारोह 1988

35TH NATIONAL FILM FESTIVAL, 1988

विषय सूची

CONTENTS

	पृष्ठ संख्या Page No	
दादा साहेब फाल्के पुरस्कार	6	Dada Saheb Phalke Award
कथा चित्र निर्णायक मण्डल	8	Jury for Feature Films
गैर कथा चित्र निर्णायक मण्डल	10	Jury for Non-Feature Films
सिनेमा लेखन निर्णायक मण्डल	10	Jury for Writing on Cinema
कथा चित्र पुरस्कार		**AWARDS FOR FEATURE FILMS**
सर्वोत्तम कथा चित्र	12	Best Feature Film
निर्देशक की सर्वोत्तम प्रथम फिल्म के लिए इंदिरा गांधी पुरस्कार	14	Indira Gandhi Award for the Best First Film of a Director
लोकप्रिय एवं स्वस्थ मनोरंजन प्रदान करने वाली सर्वोत्तम फिल्म के लिए पुरस्कार	16	Best Film providing Popular and Wholesome Entertainment
राष्ट्रीय एकता पर सर्वोत्तम कथा चित्र के लिए नरगिस दत्त पुरस्कार	18	Nargis Dutt Award for the Best Film on National Integration
सामाजिक मुद्दों संबंधी सर्वोत्तम फिल्म	20	Best Film on Social Issues
सर्वोत्तम बाल फिल्म	22	Best Children's Film
सर्वोत्तम निर्देशन	24	Best Direction
सर्वोत्तम अभिनेता	26	Best Actor
सर्वोत्तम अभिनेत्री	28	Best Actress
सर्वोत्तम सह-अभिनेता	30	Best Supporting Actor
सर्वोत्तम सह-अभिनेत्री	32	Best Supporting Actress
सर्वोत्तम बाल कलाकार	34	Best Child Artiste
सर्वोत्तम पार्श्व गायक	36	Best Male Playback Singer
सर्वोत्तम पार्श्व गायिका	38	Best Female Playback Singer
सर्वोत्तम छायांकन	40	Best Cinematography
सर्वोत्तम पटकथा	42	Best Screenplay
सर्वोत्तम ध्वनि आलेखन	44	Best Audiography
सर्वोत्तम संपादन	46	Best Editing
सर्वोत्तम कला निर्देशन	48	Best Art Direction
सर्वोत्तम वेशभूषा	50	Best Costume Design
सर्वोत्तम संगीत निर्देशन	52	Best Music Direction
सर्वोत्तम गीत	54	Best Lyrics
विशेष निर्णायक मण्डल पुरस्कार	56	Special Jury Award
सर्वोत्तम असमिया फिल्म	58	Best Assamese Film
सर्वोत्तम बंगला फिल्म	60	Best Bengali Film
सर्वोत्तम हिन्दी फिल्म	62	Best Hindi Film
सर्वोत्तम कन्नड़ फिल्म	64	Best Kannada Film
सर्वोत्तम मलयालम फिल्म	66	Best Malayalam Film
सर्वोत्तम मराठी फिल्म	68	Best Marathi Film
सर्वोत्तम उड़िया फिल्म	70	Best Oriya Film
सर्वोत्तम तमिल फिल्म	72	Best Tamil Film
गैर कथा चित्र पुरस्कार		**AWARDS FOR NON-FEATURE FILMS**
सर्वोत्तम गैर कथा चित्र	76	Best Non-Feature Film
सर्वोत्तम मानवशास्त्रीय/मानवजातीय फिल्म	78	Best Anthropological/Enthnographic Film
सर्वोत्तम जीवनी संबंधी फिल्म	80	Best Biographical Film

सर्वोत्तम कला/सांस्कृतिक फिल्म	82	Best Arts/Cultural Film
सर्वोत्तम वैज्ञानिक फिल्म (पर्यावरण तथा परिस्थिति विज्ञान सहित)	84	Best Scientific Film (including Environment and Ecology)
सर्वोत्तम औद्योगिक फिल्म	86	Best Industrial Film
सर्वोत्तम कृषि/पशुपालन/दुग्ध उत्पादन आदि फिल्म	88	Best Agricultural/Animal Husbandry/Dairying etc. Film
सर्वोत्तम ऐतिहासिक पुनर्निर्माण/संकलन फिल्म	90	Best Historical Reconstruction/Compilation/Film
सामाजिक मुद्दों पर सर्वोत्तम फिल्म	92	Best Film on Social Issues
सर्वोत्तम शैक्षिक/अभिप्रेरक फिल्म	94	Best Educational/Motivational Film
सर्वोत्तम खोजी/साहसी फिल्म (खेलों को शामिल करना)	96	Best Exploration/Adventure Film (to include Sports)
सर्वोत्तम समाचार चित्र	98	Best News Film
सर्वोत्तम कार्टून चित्र	100	Best Animation Film
निर्णायक मण्डल विशेष पुरस्कार	102	Special Jury Award
सर्वोत्तम लघु कल्पित फिल्म (फिल्म की अवधि 70 मिनट से अधिक न हो।)	104	Best Short Fiction Film (not exceeding 70 minutes duration)
सिनेमा पर लेखन पुरस्कार		**AWARDS FOR WRITING ON CINEMA**
सर्वोत्तम सिनेमा पुस्तक	108	Best Book on Cinema
सर्वोत्तम सिनेमा पत्रकार	110	Best Film Journalist
विशेष उल्लेख/पुरस्कार जो नहीं दिए गए।	112	**Special Mention/Awards not given**
कथासार: कथाचित्र		**Synopses : Feature Films**
अनन्तरम् (मलयालम)	115	Anantaram (Malayalam)
अन्तरयलि यात्रा (बंगला)	116	Antaryali Yatra (Bengali)
एकती जीबन (बंगला)	117	Ekti Jiban (Bengali)
हलोधिया चोराय बाओधान खाए (असमिया)	118	Halodhia Choraye Baodhan Khai (Assamese)
ऋतुभेदम (मलयालम)	119	Hrithubhedam (Malayalam)
इजाजत (हिन्दी)	120	Ijaazat (Hindi)
कादिना बेनकी (कन्नड़)	121	Kaadina Benki (Kannada)
नायकन (तमिल)	122	Nayakan (Tamil)
निषिद्धा स्वप्न (उड़िया)	123	Nisidhha Swapna (Oriya))
ओरे ओरु ग्रामथिले (तमिल)	124	Ore Oru Gramathiley (Tamil)
पेस्टनजी (हिन्दी)	125	Pestonjee (Hindi)
प्रथम रागिनी (असमिया)	126	Pratham Ragini (Assamese)
पुरुषार्थम (मलयालम)	127	Purushartham (Malayalam)
पुष्पक विमाना (कन्नड़)	128	Pushpaka Vimana (Kannada)
सर्जा (मराठी)	129	Sarja (Marathi)
स्वामी (हिन्दी)	130	Swamy (Hindi)
तमस (हिन्दी)	131	Tamas (Hindi)
उन्नीकले ओरु कथा प्रयाम (मलयालम)	132	Unnikale Oru Katha Parayam (Malayalam)
वेदम पुतितु (तमिल)	133	Vedham Puthithu (Tamil)
वीडु (तमिल)	134	Veedu (Tamil)
कथासार : गैर कथाचित्र		**Synopses : Non-Feature Films**
अंगोरा फॉर वूल	137	Angora For Wool
अंटार्कटिका-ए कन्टीन्यूइंग मिस्टरी (समाचार चित्र संख्या 101)	137	Antractica — A Continuing Mystery (News Magazine No. 101)

बैरन हारवैस्ट	138	Barren Harvest
बशिर - द मैन	138	Basheer — The Man
भोपाल:बियॉंड जेनोसाइड	139	Bhopal : Beyond Genocide
कलर्स ऑफ लाइफ (समाचार चित्र संख्या 100)	139	Colours of Life (News Magazine No. 100)
ए को–ऑपरेटिव फॉर स्नेक कैचर्स	140	A Cooperative for Snake Catchers
द ऐट कॉलम आफेयर	140	The Eight Column Affair
एंडगेम	141	Endgame
गोल्डन मुगा सिल्क–द कल्चरल हेरीटेज ऑफ असम	141	Golden Muga Silk — The Cultural Heritage of Assam
द किंगडम ऑफ गॉड	142	The Kingdom of God
लुकिंग बैक	142	Looking Back
पानी	143	Pani
रास्ते बंद हैं सब	143	Raaste Bund Hain Sub
संकल्प	144	Sankalp
द स्टोरी ऑफ देहली	144	The Story of Delhi

दादा साहेब फाल्के पुरस्कार

DADASAHEB PHALKE AWARD

दादा साहेब फाल्के पुरस्कार

राज कपूर

स्वर्ण कमल 1,00 000/- रुपये का नकद पुरस्कार और शाल

राज कपूर का जन्म 14 दिसम्बर 1924 को पेशावर में हुआ। उनका असली नाम रणबीर राज कपूर है। उन्होंने शुरू में अपने पिता पृथ्वी राज कपूर के साथ नाटकों में काम किया। फिल्म जगत में राज कपूर ने बम्बई टाकिज स्टूडियों में क्लैपर ब्वाय के रूप में प्रवेश किया। 1946 में वे केदार शर्मा के सहायक बने। 1948 में इन्होंने निर्माता निर्देशक और अभिनेता के रूप में पहली फिल्म **आग** बनाई।

अपनी दूसरी फिल्म **बरसात** की सफलता के बाद 1950 मे इन्होंने चैम्बूर में आर.के. स्टूडियो का निर्माण किया। इसके साथ-साथ उन्होंने अपनी तीसरी फिल्म **आवारा** बनाई जो 1951 में रिलीज हुई। यह फिल्म भारत में ही नहीं बल्कि सोवियत संघ तथा मध्य पूर्व के देशों में भी बेहद लोकप्रिय हुई। इससे वे भारतीय सिनेमा की विश्व प्रसिद्ध हस्तियों में गिने जाने लगे।

इसके बाद वे फिल्म निर्माण के क्षेत्र में सदा आगे बढ़ते रहे और उनकी अनेक फिल्मों ने फिल्म निर्माण को नई दिशायें दी हैं।

आग (1948), **बरसात**,(1949) **आवारा**, (1951) **श्री 420** (1955), **संगम** (1964) और **मेरा नाम जोकर** (1970) के निर्माता, निर्देशक और अभिनेता होने के साथ उन्होंने 50 से अधिक फिल्मों में अभिनय किया है।

निर्माता, निर्देशक के रूप में उनकी फिल्में हैं : **बाबी** (1973), **सत्यम् शिवम् सुन्दरम्** (1978), **प्रेम रोग** (1982) **राम तेरी गंगा मैली**। जिन फिल्मों का निर्माण करने के साथ-साथ राज कपूर ने उनमें अभिनय भी किया है, वे हैं- **आह** (1953) **जागते रहो** (1956), **एक दिन रात्रे** (जागते रहो का बंगला संस्करण (1956), **जिस देश में गंगा बहती है** (1960), **कल आज और कल** (1971), और **धरम करम** (1976)

उन्होंने **बूट पालिश** (1954), **अब दिल्ली दूर नहीं** (1957) तथा **बीवी ओ बीवी** (1981) फिल्मों का निर्माण किया।

दादा साहेब फाल्के पुरस्कार से इनके पिता स्वर्गीय श्री पृथ्वीराज कपूर को भी 1972 में सम्मानित किया जा चुका है।

dada saheb phalke award

RAJ KAPOOR

Swarna Kamal, a Cash Prize Of Rs. 1,00,000/ and a Shawl

Born on 14 December, 1924 in Peshwar, Ranbirraj Kapoor, popularly known as RAJ KAPOOR, started his career on the stage with his illustrious father Prithviraj Kapoor. Entering the film industry as a clapper-boy in the Bombay Talkies studio, he graduated to assisting director Kedar Sharma at Ranjit Studio in 1946 and then became a producer, director and actor for his first film AAG in 1948.

The success of his second film BARSAAT prompted the construction of the R.K. Studio, which commenced in 1950 at Chembur in Bombay. Simultaneously, Raj Kapoor made his third film AWAARA, which was released in 1951 and which went on to become a favourite not only in India, but in the USSR and the Middle East as well, establishing Raj Kapoor as one of the most internationally renowned figures in the Indian cinema.

Since then, there has been no looking back, with many of his films becoming trend-setters.

He has acted in over 50 films, while also appearing as producer, director and actor in AAG (1948), BARSAAT (1949), AWAARA (1951), SHREE 420 (1955), SANGAM (1964) and MERA NAAM JOKER (1970).

As producer and director, he has been responsible for BOBBY (1973), SATYAM SHIVAM SUNDARAM (1978), PREM ROG (1982) and RAM TERI GANGA MAILI (1985).

He has produced and acted in AAH (1953), JAAGTE RAHO (1956), EK DIN RATRE (Bengali version of JAAGTE RAHO — 1956), JIS DESH MEIN GANGA BEHTI HAI (1960), KAL AAJ AUR KAL (1971) and DHARAM KARAM (1976).

He has also produced BOOT POLISH (1954), AB DILLI DUR NAHIN (1957) and BIWI O BIWI (1981).

The Dadasaheb Phalke Award has earlier been conferred on his father, the late Shri Prithiviraj Kapoor as well, in 1972.

कथाचित्र निर्णायक मण्डल

jury for feature films

श्री श्याम बेनेगल (अध्यक्ष)
Shri Shyam Benegal (Chairman)

श्री अब्दुल मजीद
Shri Abdul Majid

श्रीमती अमिता मलिक
Smt. Amita Malik

श्रीमती सौकार जानकी
Smt. Sowcar Janaki

श्रीमती जया बच्चन
Smt. Jaya Bachchan

श्री नचीकेत पटवर्धन
Shri Nachiket Patwardhan

श्री बी.एस. नारायणा
Shri B.S. Narayana

डा. पवित्रन्
Dr. Pavithran

श्री साधु मेहर
Shri Sadhu Mehar

श्री सलिल चौधरी
Shri Salil Chaudhury

श्री शाजी
Shri Shaji

श्री यू.एस. वादीराज
Shri U.S Vadiraj

गैर कथाचित्र निर्णायक मण्डल

jury for non-feature films

श्री बुद्धदेब दासगुप्ता (अध्यक्ष)
Shri Buddadeb Dasgupta (Chairman)

श्री के.के. कपिल
Shri K.K. Kapil

श्री एन. लक्ष्मीनारायण
Shri N. Lakshminarayan

श्री के. विश्वनाथ
Shri K. Viswanath

श्री राम मोहन
Shri Ram Mohan

jury for writing on cinema

सिनेमा पर लेखन निर्णायक मण्डल

श्री सुनील गांगुली (अध्यक्ष)
Shri Sunil Ganguly (Chairman)

श्री मनरकाड मैथ्यू
Shri Manarcad Mathew

श्री के.एल. नन्दन
Shri K.L. Nandan

कथा चित्र पुरस्कार

AWARDS FOR FEATURE FILMS

सर्वोत्तम कथाचित्र पुरस्कार

हलोधिया चोराय बाओधान खाए (असमिया)

निर्माता **शैलधर बरुआ** और **जानू बरुआ** को स्वर्ण कमल तथा 50,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक **जानू बरुआ** को स्वर्ण कमल और 25,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम कथाचित्र का 1987 का पुरस्कार असमिया फिल्म **हलोधिया चोराय बाओधान खाए** को फिल्म शैली तथा फिल्म कौशल की पूर्ण सफलता के लिए दिया गया है। जिसमें भारतीय ग्रामीण समस्याओं का प्रामाणिक चित्रण है। तथा अत्यन्त कठिन सामाजिक परिस्थितियों में मानवीय गरिमा को प्रतिष्ठित करने का प्रयास किया गया है।

award for the best feature film

HALODHIA CHORAYE BAODHAN KHAI (Assamese)

Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 50,000/- to the producers SAILADHAR BARUA and JAHNU BARUA.

Swarna Kamal and a cash prize Rs. 25,000/- to the director JAHNU BARUA.

Citation :

"The Award for the Best Feature Film of 1987 is given to the Assamese film HALODHIA CHORAYE BAODHAN KHAI for its mastery of cinematic form and the totality of its film craft and for its authentic depiction of the Indian rural problem and for the life affirmating human dignity it portrays in the face of the most trying social circumstances."

शैलधर बरुआ गुवाहटी से है। ये व्यवसाय से व्यापारी हैं परन्तु, असम में कला, संस्कृति एवं खेलों को प्रोत्साहन देने वालों में इनका नाम प्रमुख है।

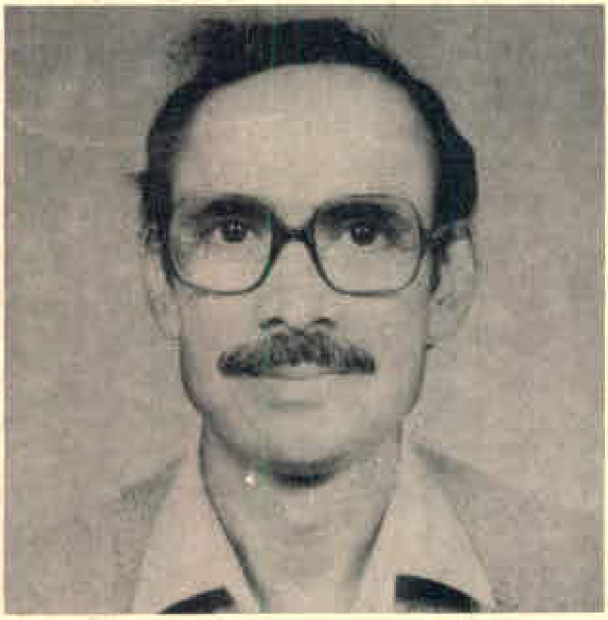

SAILADHAR BARUA hails from Guwahati. Though a businessman by profession, he is one of the main promoters in the fields of art, culture and sports in Assam.

जानू बरुआ गौहाटी विश्वविद्यालय से विज्ञान के स्नातक हैं। उन्होंने 1974 में भारतीय फिल्म एवम् टेलीविजन संस्थान से डिप्लोमा प्राप्त किया। उन्होंने उपग्रह शिक्षा टेलीविजन परीक्षण (साईट) कार्यक्रम के अन्तर्गत स्कूली बच्चों के लिये विज्ञान कार्यक्रम तैयार किये। जेवियर संचार संस्थान में सिनेमा विषय के प्राध्याक हैं। उनकी फिल्में हैं- **अपरुपा** (1982), और **पापोरी** (1986)। अपरुपा 1984 हिन्दी में **अपेक्षा** के नाम से दुबारा बनाई गई।

JAHNU BARUA is a Science graduate of Gauhati University and did his diploma course at the Film & Television Institute of India (FTII), Pune, in 1974. He produced science programmes for school children under the Satellite Instructional Television Experiment (SITE). He also teaches cinema at the Xaviers Institute of Communications. His films : APAROOPA (1982) remade in Hindi as APEKSHA (1984) and PAPORI (1986).

निर्देशक की सर्वोत्तम प्रथम फिल्म के लिए इंदिरा गांधी पुरस्कार

एकती जीबान (बंगला)

निर्माता मैसर्स **चलचित्र** को स्वर्ण कमल और 25,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक **राजामित्रा** को स्वर्ण कमल और 25,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

निर्देशक की सर्वोत्तम प्रथम फिल्म के लिए 1987 का इंदिरा गांधी पुरस्कार बंगला फिल्म **एकती जीबान** को ऐसे व्यक्ति के जीवन को साहस पूर्वक चित्रित करने का प्रथम प्रयास करने के लिए दिया गया है जो अपनी भाषा के सांस्कृतिक मूल्यों के लिए पूरी तरह प्रतिबद्ध है। इस फिल्म में आने वाली पीढ़ी के लिए इस समृद्ध मूल्य को सफलता पूर्वक प्रस्तुत किया गया है।

indira gandhi award for the best first film of a director

EKTI JIBAN (Bengali)

Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 25,000/- to the producer M/s CHALCHITRA.

Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 25,000/- to the director RAJA MITRA.

Citation:

"The Indira Gandhi Award for the Best First Film of a Director for 1987 is given to EKTI JIBAN for a very courageous first attempt of a director in tackling the subject of an individual unwavering in his conviction in the cultural value of his language, and single hand-edly making available its enriching value to the generation of his people who will come after him."

राजा मित्रा ने कलकत्ता विश्वविद्यालय से 1967 में स्नातक की उपाधि प्राप्त की। ये बहुत सी साहित्यिक एवं फिल्म पत्रिकाओं से सम्बद्ध रहे तथा इन्होंने वृत्तियों का निर्देशन भी किया। ये हैं **कोल फॉर दि मासेज**, (1978) **इकोनॉमी ऑफ एच.एस. आयल इन रेलवे** (1980) **कलकत्ता फुटपाथ ड्वेलर्स** (1981) **कलकत्ता पास्ट एंड प्रेजेन्ट** (1986) **ट्राइबल रिजिस्टेन्स** (1987) तथा **स्क्रोल पेन्टर्स ऑफ बंगाल** (1987)। वे फिल्म प्रभाग और पश्चिम बंगाल सरकार के लिए निर्देशकों की सूची में शामिल हैं।

एकती जीबान उनकी पहली फीचर फिल्म है। इस फिल्म के निर्देशन के साथ-साथ वे इसके संयुक्त निर्माता, पटकथा लेखक, गीतकार और संगीत निर्देशक भी हैं।

RAJA MITRA graduated from Calcutta University in 1967. He has been associated with several literary and film journals, and assisted filmmaker Gautam Ghose in the period 1978-80. He is on the panel of directors for Films Division and the Government of West Bengal and has directed several documentary films including COAL FOR THE MASSES (1978), ECONOMY OF H.S. OIL IN RAILWAYS (1980), CALCUTTA FOOTPATH DWELLER (1981), CALCUTTA, PAST AND PRESENT (1986), THE TRIBAL RESISTENCE (1987), SCROLL PAINTERS OF BENGAL (1987). Besides directing EKTI JIBAN, he is also its Joint Producer, Screenplay Writer, Lyricist and Music Director.

लोकप्रिय एवम स्वस्थ मनोरंजन प्रदान करने वाले सर्वोत्तम कथा चित्र का पुरस्कार

पुष्पक विमाना (कन्नड़)

निर्माता **श्रृंगार नागराज** तथा **सिंगीतम् श्रीनिवास राव** को स्वर्ण कमल और 40,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक **सिंगीतम् श्रीनिवास राव** को स्वर्ण कमल और 20,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

लोकप्रिय एवम मनोरंजन प्रदान करने वाली सर्वोत्तम फिल्म का 1987 का पुरस्कार **पुष्पक विमाना** को मनोरंजन के प्रति नई दृष्टि अपनाने के लिए दिया गया है।

award for the best film providing popular and wholesome entertainment

PUSHPAKA VIMANA (Kannada)

Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 40,000/- to the producers SRINGAR NAGARAJ and SINGEETAM SRINIVASA RAO.

Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 20,000/- to the director SINGEEITAM SRINIVASA RAO.

Citation :

"The Award for the Best Film providing Popular and Wholesome Entertainment for 1987 is given to the Kannada film PUSHPAKA VIMANA for its innovative approach to entertainment."

1939 में बंगलौर में जन्मे **श्रृंगार नागराज** अपने कालेज के दिनों में ही बंगलौर तथा उसके आसपास नाटक जगत में बहुत प्रसिद्ध हो गये थे। उन्होंने वाणिज्य और कानून विषयों में शिक्षा प्राप्त करने के साथ-साथ छायांकन भी सीखा। उन्होंने **केसारीना कमला** फिल्म में कल्पना के साथ नायक की भूमिका की। वे **बंगाराडा मनुष्य, रंगनायिकी, हालुजेनु, चालीसुवा मोगावालु** और **अनुराग अरालिथु** जैसी प्रसिद्ध फिल्मों से सम्बद्ध रहे हैं। उन्होंने कई वृत्तचित्रों का भी निर्देशन किया है।

SRINGAR NAGARAJ was born in 1939 in Bangalore and was widely known in theatre circle in and around Bangalore during his college days. He is a graduate in Commerce and Law and has also learnt Cinematography. He played the leading role in the film KESARINA KAMALA opposite Kalpana and has been actively associated with various acclaimed films like BANGARADA MANUSHYA, RANGANAYAKI, HAALU JENU, CHALISUVA MOGADALU and ANURAG ARALITHU. He has directed many documentaries and is widely travelled.

संगीतम श्रीनिवास राव ने मद्रास विश्वविद्यालय से भौतिकी में स्नातक डिग्री प्राप्त की। वे कन्नड़ फिल्म **संस्कार** के कार्यकारी निदेशक थे, जिसे 1987 में सर्वोत्तम फिल्म का राष्ट्रपति का स्वर्ण पदक प्राप्त हुआ। उन्होंने दक्षिण भारत की चारों भाषाओं में अनेक फिल्मों का निर्देशन किया है। इनमें प्रमुख हैं- **डिक्कतारा पार्वती** (तमिल), **पंतुलम्मा** (तेलुगु), **तारम मारिन्डी** (तेलुगु), **राजा पर्वई** (तमिल), **हाल्लुजेनु** (कन्नड़), **मयूरी** (तेलुगु), **भागयदा लक्ष्मी बारम्मा** (कन्नड़) और **आनन्द** (कन्नड़)

SINGEETAM SRINIVASA RAO is a Physics graduate of Madras University. He was executive director of the Kannada film SAMSKARA which won the President's Gold Medal for the Best Film of 1970. He has directed several films in all the four South Indian languages, significant among which are DIKKATRA PARVATHI (Tamil), PANTULAMMA (Telugu), TARAM MARINDI (Telugu), RAJA PARVAI (Tamil), HAALU JENU (Kannada), MAYURI (Telugu), BHAGYADA LAKSHMI BARAMMA (Kannada) and ANAND (Kannada).

राष्ट्रीय एकता पर सर्वोत्तम कथा चित्र का नर्गिस दत्त पुरस्कार

तमस (हिन्दी)

निर्माता **ब्लेज एन्टरटेनमेन्ट प्रा. लि.** को रजत कमल और 30,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक **गोविन्द निहलानी** को रजत कमल और 15,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

राष्ट्रीय एकता पर सर्वोत्तम कथाचित्र का 1987 का नर्गिस दत्त पुरस्कार हिन्दी फिल्म **तमस** को देश के विभाजन से पूर्व पंजाब के एक गांव में साम्प्रदायिक विनाश के लिए ज़िम्मेदार दुखद घटनाओं को सच्चाई के साथ साहस पूर्वक चित्रित करने के लिए दिया गया है।

nargis dutt award for the best feature film on national intergration

TAMAS (Hindi)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 30,000/- to the producer M/s BLAZE ENTERTAINMENT PVT. LTD.

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 15,000/- to the director GOVIND NIHALANI.

Citation :

"The Nargis Dutt Award for the Best Feature Film on National Integration for 1987 is given to the Hindi film TAMAS for recreating without compromise the tragic events leading to the communal holocaust at the eve of partition in a Punjab village."

गोविन्द निहलानी का जन्म 1940 के दशक के आरम्भिक वर्षों में हुआ। वे 1947 में कराची से शरणार्थी के रूप में उदयपुर में आये। 1962 में बंगलौर में इस.आई. पोलिटेक्निक से स्नातक की शिक्षा पूरी करने के बाद उन्होंने छायाकार के रूप में अपना फिल्मी जीवन शुरू किया। 10 वर्ष तक वे वी.के. मूर्ति के सहायक कैमरामैन रहे। इसके बाद वे निर्देशक प्रमोद चक्रवर्ती के सहायक कैमरामैन बने। फीचर फिल्मों में उन्होंने 1970 में प्रवेश किया, जब उन्होंने सत्यदेव दुबे की मराठी फिल्म **शान्तता' कोर्ट चालू आहे** में फोटोग्राफी की और उसके संयुक्त निर्माता बने। इसके बाद वे निर्देशक श्याम बेनेगल के साथ रहे और उनके कई वृत्त चित्रों तथा 10 फीचर फिल्मों के लिए फोटोग्राफी की। इनमें फीचर फिल्म की लम्बाई का वृत्तचित्र **सत्यजीत रे** भी शामिल है। फिल्म **जुनून** के लिए 1979 में निहलानी को सर्वोत्तम रंगीन छायांकन का राष्ट्रीय पुरस्कार मिला। उनके निर्देशन में बनी पहली फीचर फिल्म **आक्रोश** को 1981 में 8वें भारतीय अन्तर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह में स्वर्ण मयूर मिला। इस फिल्म की फोटोग्राफी भी उन्होंने स्वयं की थी। उसी वर्ष अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त निर्देशक रिचर्ड एटनबरो ने उन्हें अपनी फिल्म **गांधी** के लिए दूसरी यूनिट के निर्देशक तथा छायाकार के रूप में अपने साथ लिया। 1982 में उन्होंने वायुसेना की पृष्ठभूमि पर बनी फिल्म **विजेता** पूरी की। 1983 में उन्होंने **अर्धसत्य** का निर्देशन किया, जिसे उस वर्ष का सर्वोत्तम हिन्दी फिल्म का राष्ट्रीय पुरस्कार मिला। उनकी चौथी फिल्म **पार्टी** को 10वें भारतीय अन्तर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह में भारत की ओर से प्रतियोगिता वर्ग में शामिल किया गया और उनकी फिल्म **आघात** को 1986 में इंडियन पैनोरमा में शामिल किया गया।

GOVIND NIHALANI was born in the early forties and came to Udaipur as a refugee in 1947, from Karachi in Pakistan. He began his career as a cinematographer after graduating from the S.I. Polytechnic in Bangalore in 1962. For ten years he worked as an assistant cameraman for V.K. Murthy, the man behind some of Guru Dutt's best works. He then became assistant cameraman to director Promode Chakravarty. His entry into feature films came in 1970 when he photographed and coproduced Satyadev Dubey's Marathi film SHANTATA: COURT CHALU AHE. Then followed the highly rewarding association with director Shyam Benegal, for whom he photographed several documentaries (including a feature-length documentary on Satyajit Ray) and ten feature films including JUNOON, for which Nihalini received the National Award for Best Colour Cinematography in 1979. AAKROSH, the first feature film he directed and photographed, won him the Golden Peacock at the 8th International Film Festival of India, held in Delhi in 1981. The same year, director Richard Attenborough signed him on as the second unit director-cinematographer for GANDHI. VIJETA, set against the backdrop of the Indian Air Force, was completed in late 1982. ARDH SATYA followed in 1983 and won him the National Award for the Best Hindi Film of the year. PARTY, his fourth film, was the official Indian entry to the 10th International Film Festival of India and AGHAAT was included in the Indian Panorama, 1986.

सामाजिक विषयों पर सर्वोत्तम फिल्म पुरस्कार

ओरे ओरु ग्रामाथिले (तमिल)
वेदम् पुतितु (तमिल)

निर्माताओं **एस. रंगराजन** और **मैसर्स जनानी आर्ट क्रिएशन्स** को रजत कमल और 30,000/- का नकद पुरस्कार

निर्देशकों **के. ज्योतिपंदियन** और **पी. भारती राजा** को रजत कमल और 15,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सामाजिक विषयों पर सर्वोत्तम फिल्म का 1987 का पुरस्कार तमिल फिल्मों **ओरे ओरु ग्रामाथिले** और **वेदम पुतितु** को संयुक्त रूप से जातीय ऊंच-नीच और भेदभाव को अपने ढंग से विश्वसनीय शैली में प्रस्तुत करने, इस समस्या पर तीखी टिप्पणी करने तथा उसका समाधान सुझाने के लिए दिया गया है।

award for the best film on other social issues such as prohibition, women's welfare and child welfare, anti-dowry, drug abuse etc.

ORE ORU GRAMATHILEY (Tamil) AND VEDHAM PUTHITHU (Tamil)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 30,000/- to the producers S. RANGARAJAN and M/s JANANI ART CREATIONS.

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 15,000/- to the directors K. JOTHIPANDIAN and P. BHARATHIRAJAA.

Citation :

"The Award for the Best Film on Social Issues for 1987 is given to two Tamil films ORE ORU GRAMATHILEY and VEDHAM PUTHITHU jointly to each for tackling the problem of caste differences and discrimination from the opposite ends of the hierarchy in their own way in a convincing manner and for the rigorous statement they make and the solutions they offer."

एस. रंगाराजन का जन्म 1936 में हुआ। उनकी उच्च शिक्षा मद्रास के प्रेजीडेंसी कालेज में हुई। 1957 में वे समाचार पत्रों में काम करने लगे और इस समय वे **द हिन्दू** के मुद्रक और प्रकाशक हैं। वे लम्बे समय से फिल्मों से सम्बद्ध हैं तथा 10 से अधिक फिल्में बना चुके हैं

S. RANGARAJAN was born in 1936 and received his higher education at the Presidency College in Madras. He entered the Newspaper field in 1957 and is currently the printer and publisher of "The Hindu". He has been associated with films over an extended period and has produced more than 10 Tamil films since 1970.

के. ज्योतिपंदियन का जन्म 1953 में हुआ। बी.ए. के बाद फिल्म उद्योग से जुड़ गये। **ओरे ओरू ग्रामथिले** उनके निर्देशन में बनी दूसरी फिल्म है।

K. JOTHIPANDIAN was born in 1953 and has been associated with the film industry after completing his B.A. degree. ORE ORU GRAMATHILEY is his second directorial venture.

पी. भारती राजा का जन्म 1941 में तमिलनाडु में मदुरई जिले में एक ग्रामीण परिवार में हुआ।फिल्म रुचि उन्हें मद्रास ले आई। कई प्रसिद्ध निर्देशकों के साथ सहायक के रूप में काम करने के बाद 1976 में उन्होंने अपनी फिल्म **पधीनारू वयाथिनिले** का निर्देशन किया। इसके बाद लगातार 4 हिट फिल्मों का निर्देशन किया और इस तरह वे तमिल सिनेमा के अग्रणी निर्देशकों में गिने जाने लगे।

P. BHARATHIRAJAA was born in 1941 into a peasant family in Madurai district of Tamil Nadu. After working as an assistant to some well-known directors, he directed his first film PADHINARU VAYATHINILE in 1976. This was the first in an unbroken series of five hit films which firmly established him as one of the foremost directors of the Tamil cinema.

सर्वोत्तम बाल फिल्म पुरस्कार

स्वामी (हिन्दी)

निर्माता **टी.एस. नरसिम्हन** को स्वर्ण कमल और 30,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक **शंकर नाग** को स्वर्ण कमल और 15,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम बाल फिल्म का 1987 का पुरस्कार हिन्दी फिल्म **स्वामी** को स्वतंत्रता आन्दोलन के दौरान एक भारतीय गांव में बचपन और बच्चे के बड़े होने की प्रक्रिया को सुन्दरता के साथ प्रस्तुत करने के लिए दिया गया है।

award for the best children's film

SWAMY (Hindi)

Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 30,000/- to the producer T.S. NARASIMHAN.

Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 15,000/- to the director SHANKAR NAG.

Citation :

"The Award for the Best Children's Film of 1987 is given to the Hindi film SWAMY for the delightful recreation of childhood and growing up in an Indian village during the freedom movement."

टी.एस. नरसिम्हन का जन्म कलकत्ता में हुआ। कुछ समय तक सरकारी नौकरी करने और टैक्सटाइल इंजीनियरी के व्यापार में रहने के बाद 1972 में वे फिल्मों की ओर मुड़े। अब तक वे 5 फिल्मों का निर्माण कर चुके हैं। ये हैं **केसारीना, कमला, डोंगे येद्दा, मक्कालू बैंकर मरगय्या** और **स्वामी**। उन्होंने 10 वृत्तचित्र बनाये हैं जिनमें से 5 का निर्देशन उन्होंने स्वयं किया है। इनमें प्रमुख है: **द लैदर पपेटरी ऑफ कर्नाटक** और **सागा ऑफ इंडियन इमिग्रेंट्स टू मारीशस**। वे दूरदर्शन सीरियल **मालगुडी डेज़** के भी निर्माता हैं।

T.S. NARASIMHAN was born in Calcutta and turned towards films in 1972 after periods in Government service and in the textile/engineering business. He has so far produced five feature films, including KESARINA KAMALA, DANGE YEDDA MAKKALU, BANKER MARGAYYA and SWAMY. He has also produced 10 documentaries, of which 5 have been directed by himself, notably THE LEATHER PUPPETRY OF KARNATAKA and SAGA OF INDIAN IMMIGRANTS TO MAURITIUS. He is the producer of the television serial MALGUDI DAYS.

1954 में कर्नाटक में जन्में **शंकर नाग** ने बम्बई में सेन्ट सेवियर स्कूल में शिक्षा प्राप्त की। सई परांजपे के सह निर्देशक के रूप में काम करते हुए उन्हें गिरीश कर्नाड की कन्नड़ फिल्म **ओंडानोंड् कलाडल्ली** में अभिनय का मौका मिला। इस में पहले अभिनय में ही उन्हें 1979 में सातवें भारतीय अन्तर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह में सर्वोत्तम अभिनेता का पुरस्कार मिला। तब से वे 50 से अधिक फिल्मों में अभिनय कर चुके हैं। उन्होंने कई फिल्मों का निर्देशन भी किया है। इनमें **मिनचिना ओटा** और **एक्सीडेंट** शामिल हैं। उनका सबसे उल्लेखनीय प्रयास दूरदर्शन सीरियल **मालगुडी डेज** है। आर.के.नारायण की कहानियों पर आधारित ये कार्यक्रम हिन्दी और अंग्रेजी दोनों में बनाया गया है। वह अपनी पत्नी और बेटी के साथ बंगलौर में एक फार्म में रहते हैं।

SHANKAR NAG was born in Karnataka in 1954 and educated in St. Xavier's School, Bombay. His break came when, while working as an assistant director to Sai Paranjpye, he was cast to act in Girish Karnad's Kannada film ONDANONDU KALADALLI. This debut fetched him the Silver Peacock Best Actor Award in the Seventh International Film Festival of India, 1979. He has acted in over 50 films since then. He has also directed several acclaimed feature films, including MINCHINA OTA and ACCIDENT. His most ambitious venture is the television serial MALGUDI DAYS based on R.K. Narayan's short stories, which has been shot in both Hindi and English. He lives at a farm in Bangalore with his wife and daughter.

सर्वोत्तम निर्देशन पुरस्कार

अडूर गोपालकृष्णन्

निर्देशक **अडूर गोपालकृष्णन** को स्वर्ण कमल और 25,000/-रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम निर्देशन का 1987 का पुरस्कार **अडूर गोलालकृष्णन** को मलयालम फिल्म **अनन्तरम्** के लिए दिया गया है। उन्होंने सिनेमा के लिए एक असाधारण और बहुत जटिल विषय को चित्रित करने में फिल्म कौशल पर अद्वितीय अधिकार का परिचय दिया है।

award for the best direction

ADOOR GOPALAKRISHANAN

Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 25,000/- to the Director ADOOR GOPALAKRISHNAN

Citation :

"The Award for the Best Direction of 1987 is given to ADOOR GOPALAKRISHNAN for his work in the Malayalam film ANANTARAM for the exceptional mastery of the craft in dealing with a very complex and unusual subject for the cinema."

अडूर गोपालकृष्णन का जन्म 1941 में एक ऐसे परिवार में हुआ जहां कथकली नृत्य नाटक शैली का प्रचलन था। उन्होंने 1960 में स्नातक की डिग्री प्राप्त की। इससे पहले उन्होंने कई नाटक लिखे और 20 से अधिक नाटकों का मंचन किया। 1962 में सरकारी नौकरी छोड़कर वे फिल्म तथा टेलीविजन संस्थान पूणे में भरती हो गए। 1965 में प्रशिक्षण पूरा करके उसी साल उन्होंने त्रिवेन्द्रम में चित्रलेखा फिल्म सोसाइटी की स्थापना की। उसी वर्ष उन्होंने कला फिल्मों के निर्माण तथा वितरण के लिए भारत की पहली सहकारी संस्था का गठन किया। 1984 में उन्हें पदमश्री से सम्मानित किया गया। उनकी सभी फिल्मों को प्रमुख पुरस्कार मिले हैं। इनमें **स्वयंवरम** (1972), **कोडियेट्टम** (1977), **एल्लीपतयम** (1981), और **मुखामुखम** (1983) शामिल हैं।

ADOOR GOPALAKRISHNAN was born in 1941, in a family that patronised and practised the Kathakali dance-drama form. He wrote several and produced over 20 plays before graduation in 1960. He left a government job to join the Film & Television Institute of India (FTII), Pune in 1962. He graduated from there in 1965 and started the Chitralekha Film Society at Trivandrum the same year. He also founded India's first film cooperative for the making and distributing of art films in 1965. His published writings include two stage plays, two books on theatre and one on the cinema. He received the Padmashree in 1984. All his films have won major awards. These include : SWAYAMVARAM (1972), KODIYETTAM (1977), ELIPPATTHAYAM (1981), MUKHAMUKHAM (1983).

सर्वोत्तम अभिनेता पुरस्कार

कमल हासन

अभिनेता **कमल हासन** को रजत कमल और 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम अभिनेता का 1987 का पुरस्कार **कमल हासन** को तमिल फिल्म **नायकन** में अभिनय के लिए दिया गया है। उन्होंने एक ऐसा बहु आयामी व्यक्ति के चरित्र को असाधारण प्रतिभा और अभिनय पर पूर्ण नियंत्रण का परिचय देते हुए श्रेष्ठ और मार्मिक रूप से चित्रित किया है, जो सूक्ष्म नैतिक बंधनों में जकड़ा हुआ है।

award for the best actor

KAMAL HASAN

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the actor KAMAL HASAN.

Citation :

"The Award for the Best Actor of 1987 is given to KAMAL HASAN for his performance in the Tamil film NAYAKAN for his outstanding and moving portrayal of a multi-faceted character with subtle moral nuances played with total control and extraordinary histrionic skill."

कमल हासन 4 वर्ष की आयु से फिल्मों में काम कर रहे हैं। 8 से 16 वर्ष की आयु में बाल कलाकार के रूप में उनकी मांग घट गई तो उस दौरान उन्होंने नृत्य, सम्पादन, पटकथा लेखन आदि का प्रशिक्षण लेने के साथ-साथ कर्नाटक संगीत सीखा। समय आने पर वे तमिल फिल्मों के सुपर स्टार के रूप में उभर कर सामने आये। उन्होंने तमिल, कन्नड़, मलयालम, तेलगु और हिन्दी फिल्मों में हर तरह की भूमिकायें निभाई हैं। वे 150 से अधिक फिल्मों में अभिनय कर चुके हैं, जिनमें से 5 का निर्माण उन्होंने स्वयं किया है। वे कवितायें और कहानियां भी लिखते हैं तथा बहुत अच्छे वक्ता हैं। इससे पहले 1982 में तमिल फिल्म **मूंडरम पिराई** के लिये उन्हें सर्वोत्तम अभिनेता का पुरस्कार मिला। उनके बड़े भाई चारू हासन तथा उनकी भतीजी सुहासिनी को भी पिछले 2 वर्षों में सर्वोत्तम अभिनेता और अभिनेत्री का पुरस्कार मिला है।

KAMAL HASAN has been acting in films since the age of four. When his career as a child artiste declined from the ages of eight to sixteen, he utilised the period to train himself as a dancer, choreographer, editor, script writer and also learnt Carnatic music. It was not long thereafter that he emerged as a super star of the Tamil screen who also establishd his versatility by doing a wide range of roles in Tamil, Kannada, Malayalam, Telugu and Hindi films. He has acted in over 150 films and has himself produced five of them. He writes poems and stories and is a good orator. He has won the Best Actor Award once before, for the Tamil film MOONDRAM PIRAI for the year 1982. His elder brother Charu Hasan and his niece Suhasini have also won Best Acting Awards in the last two years.

सर्वोत्तम अभिनेत्री पुरस्कार

अर्चना

अभिनेत्री अर्चना को रजत कमल और 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम अभिनेत्री का 1987 का पुरस्कार **अर्चना** को तमिल फिल्म वीडू में मध्यमवर्ग की एक ऐसीकामकाजी महिला के चरित्र को पूर्णतया स्वभाविक ढंग से प्रस्तुत करने के लिए दिया गया है जो रोज़मर्रा की जिन्दगी के तनावों से जूझ रही है और शहरी जीवन की दिनो-दिन बढ़ रही समस्याओं से निपटने की चेष्टा करती है।

award for the best actress

ARCHANAA

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the actress ARCHANAA.

Citation:

"The Award for the Best Actress of 1987 is given to ARCHANAA for her performance in the Tamil film VEEDU for the totally naturalistic portrayal of a middle class working woman faced with everyday tensions of living and her attempts to overcome the ever-increasing problems of urban life."

अर्चना ने तमिलनाडु सरकार द्वारा चलाये जा रहे फिल्म टेक्नोलोजी संस्थान से अभिनय में डिप्लोमा प्राप्त किया। वह कुशल शास्त्रीय नर्तकी भी है और बारह वर्ष से अधिक समय तक उन्होंने कुचिपुड़ि और कथक में प्रशिक्षण प्राप्त किया है। उन्होंने बालु महेन्द्रा, पी.एन.मेनन और शंकर नाग जैसे निर्देशकों के निर्देशन में कई तमिल, मलयालम तेलुगु और कन्नड़ फिल्मों में काम किया है।

ARCHANAA is a twenty-year-old graduate in acting from the Institute of Film Technology run by the Tamil Nadu Government. She is also an accomplished classical dancer who has trained for more than 12 years in Kuchipudi and Kathak. She has acted in Tamil, Malayalam, Telugu and Kannada films under such directors as Balu Mahendra, P.N. Menon and Shankar Nag.

सर्वोत्तम सह अभिनेता पुरस्कार

तिलकन

सह अभिनेता **तिलकन** को रजत कमल और 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम सह अभिनेता का 1987 का पुरस्कार **तिलकन** को मलयालम फिल्म **ऋतुभेदम** में ऐसे व्यक्ति की अनैतिकता को गहराई और तीखे ढंग से प्रस्तुत करने के लिए दिया गया हे जो कमजोर और नीच है।

award for the best supporting actor

THILAKAN

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Supporting Actor THILAKAN

Citation :

"The Award for the Best Supporitng Actor of 1987 is given to THILAKAN for his sharp and incisive delineation of the immorality of a human being who is weak and mean in the Malayalam film HRITHUBHEDAM."

तिलकन थोड़े ही समय में मलयालम फिल्मों में प्रमुख अभिनेता के रूप में छा गये हैं। उनकी उल्लेखनीय फिल्में हैं, **कोलंगल, मेला, इरक्कल, ओरिडथ, ओरू युगसंध्या, नखक्षतंगल, पंचाग्नि,** और **ऋतुभेदम।**

THILAKAN has, within a short time, established himself as an eminent actor on the Malayalam film scene. His important films include KOLANGAL, MELA, IRAKKAL, ORIDATH, ORU YUGASANDHYA, NAKHAKSHATHANGAL, PANCHAGNI and HRITHUBHEDAM.

सर्वोत्तम सह अभिनेत्री पुरस्कार

सुरेखा सीकरी

सह अभिनेत्री **सुरेखा सीकरी** को रजत कमल और 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम सह अभिनेत्री का 1987 का पुरस्कार **सुरेखा सीकरी** को हिन्दी फिल्म **तमस** में एक ऐसी औरत के चरित्र का प्रभाव पूर्ण ढंग से अभिनय करने के लिए दिया गया जो गहरे संकट और विपरीत परिस्थितियों में भी अपने जन्मजात मानवीय सदगुणों को नहीं छोड़ती।

award for the best supporting actress

SUREKHA SIKRI

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Supporting Actress SUREKHA SIKRI.

Citation

"The Award for the Best Supporting Actress of 1987 is given to SUREKHA SIKRI for her compelling performance as a woman who has not lost her innate human goodness even under the most adverse and stressful conditions of the holocaust as portrayed in the Hindi film TAMAS."

सुरेखा सीकरी ने नई दिल्ली के राष्ट्रीय नाटक विद्यालय से अभिनय का डिप्लोमा प्राप्त किया है। उन्होंने कई वर्षों तक स्कूल की नाटक कम्पनी में काम किया और अपनी अभिनय क्षमता का सिक्का जमाया। हाल के वर्षों में उन्होंने कई फिल्मों में भी काम किया है। इनमें प्रकाश झा की हिन्दी फिल्म **परिणति** उल्लेखनीय है।

SUREKHA SIKRI is one of the most outstanding graduates of the National School of Drama, whose work over several years in the National School of Drama Repertory Company has won her high appreciation for her histrionic abilities. In recent years, she has also worked in a number of films, notably PARINATI (Hindi) by Prakash Jha.

सर्वोत्तम बाल कलाकार पुरस्कार

मंजुनाथ

बाल कलाकार **मंजुनाथ** को रजत कमल 5,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम बाल कलाकार का 1987 का पुरस्कार **मंजुनाथ** को हिन्दी फिल्म **स्वामी** में एक ऐसे ग्रामीण स्कूली बच्चे की मनमोहक और सुन्दर ढंग से भूमिका निभाने के लिए दिया गया है जो भोला-भाला भी है और शरारती भी। इसमें बच्चों की स्वाभाविक सहज बुद्धि का चित्रण है।

award for the best child artiste

MANJUNATH

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Child Artiste MANJUNATH

Citation :

"The Award for the Best Child Artiste of 1987 is given to MANJUNATH for his utterly charming and delightful portrayal of a young school-going village boy who is a combination of innocence and mischief, pointing to the inherent natural wisdom of the young in the Hindi film SWAMY."

बंगलौर में 1977 में जन्में **मंजुनाथ** ने फिल्मों में पहली बार अभिनय लगभग 3 साल की उम्र में किया। उसे 1984-85 में कन्नड़ फिल्म **परामेशी प्रेम प्रसंग** में स्वाभाविक अभिनय के लिए कर्नाटक राज्य का सर्वोत्तम बालकार का पुरस्कार मिला। गिरीश कर्नाड की हिन्दी फिल्म **उत्सव** में उसके अभिनय की बहुत सराहना की गई। हिन्दी फिल्म **स्वामी** में नवम्बर 1987 में भुवनेश्वर में हुये पांचवे अन्तर्राष्ट्रीय बाल फिल्म समारोह में सर्वोत्तम अभिनय के लिए रजत हाथी का पुरस्कार वह पहले ही प्राप्त कर चुके हैं। वे 35 से अधिक फिल्मों में काम कर चुके हैं। वे बंगलौर में छठी कक्षा में पढ़ रहे हैं।

MANJUNATH was born in Bangalore in 1977 and he acted in his first film when he was barely 3 years old. A natural performer, he won the Karnataka State Best Child Actor Award for his cameo in PARAMESHI PREMA PRASANGA (Kannada) in 1984-85. His role in Girish Karnad's UTSAV (Hindi) fetched him much critical acclaim, while his performance in SWAMY (Hindi) has already won him the Silver Elephant Award for the Best Performance at the Fifth International Children's Film Festival held at Bhubaneswar in November, 1987. He has acted in over 35 films and is studying in the 6th standard in Bangalore.

सर्वोत्तम पार्श्व गायक पुरस्कार

के.जे. यसुदास

पार्श्व गायक **के.जे. यसुदास** को रजत कमल और 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम पार्श्व गायक का 1987 का पुरस्कार **के.जे. यसुदास** को मलयालम फिल्म **उन्नीकले ओरु कथा प्रयाम** में फिल्म के सार गीत को ओजस्वी वाणी में मधुर शैली में प्रस्तुत करने तथा गीत को पूर्ण और सार्थक अभिव्यक्ति प्रदान करने के लिए दिया गया है।

award for the best male playback singer

K.J. YESUDASS

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Male Playback Singer K.J. YESUDASS

Citation:

"The Award for the Best Male Playback Singer of 1987 is given to K.J. YESUDASS for the vivacity and mellifluous rendering of the theme song, giving full and meaningful expression to the lyric in the Malayalam film UNNIKALE ORU KATHA PARAYAM."

के.जे. यसुदास इस समय देश के सर्वाधिक लोकप्रिय पार्श्व गायकों में से हैं। उन्होंने शास्त्रीय कर्नाटक में आर.एल.वी. संगीत एकादमी त्रिपूनीतुरा और स्वातितिरूनल संगीत महाविद्यालय त्रिवेन्द्रम में प्रशिक्षण लिया। उन्होंने सबसे पहले मलयालम फिल्म **कल्पदुकल** में गीत गाया। उसके बाद से वे विभिन्न भाषाओं की फिल्मों में लगातार पार्श्व गायन करते रहे हैं। इससे पहले उन्हें चार बार सर्वोत्तम पार्श्व गायक का राष्ट्रीय पुरस्कार मिल चुका है। ये पुरस्कार उन्हें 1973 **अचानुम बप्पायुम** (मलयालम), 1974 में **गायित्री** (मलयालम) 1977 में **चितचोर** (हिन्दी), और 1983 में **मेघसन्देशम** (तेलुगु) में मिला है।

K.J. YESUDASS, one of the most popular playback singers in the country today, received extensive training in classical Carnatic music at the R.L.V. Music Academy, Tripunithura, and the Swathithirunal College of Music, Trivandrum. He started his career in films with KALPADUKAL (Malayalam). Since then, he has been singing regularly in various languages. He has already won the National Award for the Best Male Playback Singer four times, for the films ACHANUM BAPPAYUM (Malayalam) in 1973, GAYATHRI (Malayalam) in 1974, CHIT CHOR (Hindi) in 1977 and MEGHASANDESAM (Telugu) in 1983.

सर्वोत्तम पार्श्व गायिका पुरस्कार

आशा भोंसले

पार्श्व गायिका **आशा भोंसले** को रजत कमल और 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम पार्श्व गायिका 1987 का पुरस्कार **आशा भोंसले** को हिन्दी फिल्म **इजाज़त** में एक उच्च काव्यात्मक गीत के सूक्ष्म भावों और अर्थों को कुशलता तथा अभिव्यक्ति के साथ प्रस्तुत करने के लिए दिया गया है।

award for the best female playback singer

ASHA BHONSLE

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Female Playback Singer ASHA BHONSLE.

Citation :

"The Award for the Best Female Playback Singer of 1987 is given to ASHA BHONSLE for her rendition with high professional skill and expression, of the many nuances of emotion and meaning of the highly poetic lyrics in the Hindi film IJAAZAT."

आशा भोंसले ने शास्त्रीय संगीत का प्रशिक्षण लिया है। उन्होंने 1947 में 14 वर्ष की आयु में फिल्मों मे गाना शुरू किया। तबसे उन्होंने कम से कम 15 भाषाओं में अनगिनत गीत गाये हैं। एक अनुमान के अनुसार उन्होंने 25 हजार से भी अधिक गाने रिकार्ड कराये हैं। चाहे भजन हो या गज़ल या फिर पश्चिमी धुनों पर आधारित गाने आशा भोंसले की आवाज़ पा कर ये सभी श्रोताओं का मन जीत लेते हैं। इससे पहले भी उन्हें एक बार राष्ट्रीय पुरस्कार मिल चुका है। यह पुरस्कार उन्हें 1982 में **उमराव जान** (हिन्दी) में गाने के लिए मिला।

ASHA BHONSLE was trained in classical music and started singing in films in 1947 at the age of 14. She has since rendered countless songs in at least 15 languages. It is said that the number of songs recorded by her far exceeds 25,000. A versatile artist, she is equally at ease with bhajans, ghazals and songs based on Western tunes. She has won the National Award once before, for her singing in UMRAO JAAN (Hindi) in 1982.

सर्वोत्तम छायांकन पुरस्कार

पी.सी. श्रीराम

छायाकार **पी.सी. श्रीराम** को रजत कमल और 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम छायांकन का 1987 का पुरस्कार **पी.सी.** श्रीराम को तमिल फिल्म **नायकन में प्रकाश व्यवस्था और कैमरा संचालन** की गहरी सूझ-बूझ का परिचय देने तथा इसके माध्यम से विषय को अत्यन्त महत्वपूर्ण आयाम प्रदान करने के लिए दिया गया है।

award for the best cinematography

P.C. SRIRAM

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Cameraman P.C. SRIRAM.

Citation :

"The Award for the Best Cinematography of 1987 is given to P.C. SRIRAM for the precise interpretation in lighting and camera operation adding a very vital dimension to the narrative in the Tamil film NAYAKAN."

पी.सी. श्रीराम का जन्म 1956 में हुआ। उन्होंने मद्रास में छायांकन में डिप्लोमा प्राप्त किया। उन्होंने कई प्रसिद्ध फिल्मों का छायांकन किया है। इनमें प्रताप पोथन की **मीडंम ओरू कथल कथई** और मणी रतनम की **मौन रागम्** (1986) शामिल हैं।

P.C. SRIRAM was born in 1956 and completed his Diploma course in Cinematography in Madras. He has been the cinematographer of several acclaimed films, including Prathap Pothan's MEENDUM ORU KATHAL KATHAI (1984) and Mani Rathnam's MOUNA RAGAM (1986).

सर्वोत्तम पटकथा पुरस्कार

अडूर गोपालकष्णन्

पटकथा लेखक **अडूर गोपालकष्णन्** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम पटकथा का 1987 का पुरस्कार **अडूर गोपालकष्णन्** को उनकी मलयालम फिल्म **अनन्तरम्** में एक ऐसी अत्यन्त जटिल कथा की रचना करने के लिए दिया गया है जिसमें उच्च कोटि की नाटकीय तथा साहित्यिक प्रतिभा की आवश्यकता है।

award for the best screeplay

ADOOR GOPALAKRISHNAN

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 10,000/- to Screenplay Writer ADOOR GOPALAKRISHNAN

Citation :

"The Award for the Best Screenplay of 1987 is given to ADOOR GOPALAKRISHNAN for the precision in structuring a very complex narrative content requiring both exceptional dramatic and literary skills in his Malayalam film ANANTARAM."

अडूर गोपालकृष्णन का जन्म 1941 में एक ऐसे परिवार में हुआ जहां कथकली नृत्य नाटक शैली का प्रचलन था। उन्होंने 1960 में स्नातक की डिग्री प्राप्त की। इससे पहले उन्होंने कई नाटक लिखे और 20 से अधिक नाटकों का मंचन किया। 1962 में सरकारी नौकरी छोड़कर वे फिल्म तथा टेलीविजन संस्थान पुणे में भरती हो गए। 1965 में प्रशिक्षण पूरा करके उसी साल उन्होंने त्रिवेन्द्रम में चित्रलेखा फिल्म सोसाइटी की स्थापना की। उसी वर्ष उन्होंने कला फिल्मों के निर्माण तथा वितरण के लिए भारत की पहली सहकारी संस्था का गठन किया। 1984 में उन्हें पदमश्री से सम्मानित किया गया। उनकी सभी फिल्मों को प्रमुख पुरस्कार मिले हैं। इनमें **स्वयंवरम** (1972), **कोडियेट्टम** (1977), **एल्लीपतयम** (1981), और **मुखामुखम** (1983) शामिल हैं।

ADOOR GOPALAKRISHNAN was born in 1941, in a family that patronised and practised the Kathakali dance-drama form. He wrote several and produced over 20 plays before graduation in 1960. He left a government job to join the Film & Television Institute of India (FTII), Pune in 1962. He graduated from there in 1965 and started the Chitralekha Film Society at Trivandrum the same year. He also founded India's first film cooperative for the making and distributing of art films in 1965. His published writings include two stage plays, two books on theatre and one on the cinema. He received the Padmashree in 1984. All his films have won major awards. These include : SWAYAMVARAM (1972), KODIYETTAM (1977), ELIPPATTHAYAM (1981), MUKHAMUKHAM (1983).

सर्वोत्तम ध्वनि आलेखन पुरस्कार

पी. देवदास, टी. कृष्णनउन्नी और एन. हरिकुमार

ध्वनि आलेखकों **पी. देवदास, टी. कृष्णनउन्नी** और **हरि कुमार** को रजत कमल और 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम ध्वनि आलेखन का 1987 का पुरस्कार **पी. देवदास, टी. कृष्णनउन्नी** और **एन. हरिकुमार** को मलयालम फिल्म **अनन्तरम्** में फिल्म के दृश्य विधान को पूरी तरह प्रभावकारी बनाने के उद्देश्य से ध्वनि, संगीत और मौन स्थिति के सभी तत्वों का कुशल उपयोग करने के लिए दिया गया है।

award for the best audiography

P. DEVADAS, T. KRISHNANUNNI and N. HARIKUMAR

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Audiographers P. DEVADAS, T. KRISHNANUNNI and N. HARIKUMAR.

Citation :

"The Award for the Best Audiography of 1987 is given to P. DEVADAS, T. KRISHNANUNNI and N. HARIKUMAR for their work in the Malayalam film ANANTARAM for harnessing all the elements of sounds, music and silence to create a perfect complement to the visual design of the film."

पी. देवदास का जन्म 1938 में हुआ। उन्होंने 1965 में भारतीय फिल्म तथा टेलीविजन संस्थान से साउंड इंजीनियरी का डिप्लोमा प्राप्त किया और थोड़े समय तक वहाँ अध्यापक के रूप में काम किया। वे अडूर गोपालकष्णन् की फिल्मों **ऐल्लिपतयम** (1981) तथा **मुखामुखम** (1983) में सर्वोत्तम ध्वनि आलेखन के लिए दो बार राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त कर चुके हैं। इस समय वे केरल राज्य फिल्म विकास निगम के चित्रांजलि फिल्म स्टूडियो के मुख्य ध्वनि आलेखक के रूप में काम कर रहे हैं।

P. DEVADAS was born in 1938. He graduated in Sound Engineering from the FTII, Pune in 1965 and taught there for a short period. He has twice won the National Award for Best Audiography, for Adoor Gopalakrishanan's earlier films ELIPPATHAYAM (1981) and MUKHAMUKHAM (1983). He has also won the Kerala State Award for Best Audiography several times. At present he is working as the Chief Sound Recordist of the Chitranjali Film Studio of the Kerala State Film Development Corporation.

टी. कृष्णनउन्नी का जन्म 1950 में हुआ। उन्होंने भारतीय फिल्म तथा टेलीविजन संस्थान से साउंड रिकार्डिंग तथा साउंड इंजीनियरी की डिग्री हासिल की। 1977 से 1980 तक उन्होंने अहमदाबाद में खेड़ा संचार परियोजना में रिकार्डिस्ट के रूप में काम किया। इस समय वे केरल राज्य फिल्म विकास निगम के चित्रांजलि फिल्म स्टूडियो में ध्वनि आलेखक है।

T. KRISHNANUNNI was born in 1950. He graduated in Sound Recording and Sound Engineering from the FTII, Pune and worked as a recordist for the Khedda Communications Project, Ahmedabad from 1977-80. Presently he is working as a Sound Recordist at the Chitranjali Film Studio of the Kerala State Film Development Corporation.

एन. हरीकुमार का जन्म 1955 में हुआ। मद्रास में तमिलनाडु फिल्म तथा टेलीविजन संस्थान से स्नातक की डिग्री प्राप्त करने के बाद उन्होंने दूरदर्शन केन्द्र नई दिल्ली में ध्वनि आलेखक के रूप में काम किया। 1979 में उनकी नियुक्ति त्रिवेन्द्रम में चित्रांजलि फिल्म स्टूडियो में हुई

N. HARIKUMAR was born in 1955. After graduating from the Film and Television Institute of Tamil Nadu, Madras, he worked as a Sound Recordist at the Doordarshan Kendra, New Delhi. In 1979, he joined the Chitranjali Film Studio of the KSFDC in Trivandrum as a Sound Recordist

सर्वोत्तम संपादन पुरस्कार

पी. मोहनराज

सम्पादक **पी. मोहनराज** को रजत कमल और 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम संपादन का 1987 का पुरस्कार **पी. मोहनराज** को तमिल फिल्म **वेदम् पुतित्** में विषय प्रस्तुति और प्रभावोत्पादक तत्वों में पूर्ण समन्वय लाने के उद्देश्य से कथा के अनुरूप मौलिक सम्पादक शैली अपनाने में सफलता प्राप्त करने के लिए दिया गया है।

award for the best editing

P.MOHANRAJ

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Editor P. MOHANRAJ

Citation :

"The Award for the Best Editing of 1987 is given to P. MOHANRAJ for being able to find an original editing vocabulary appropriate to the story in order to create a perfect blend of narrational and motivational elements in the Tamil film VEDHAM PUTHITHU."

पी. मोहन राज का जन्म 1956 में तमिलनाडु में सेलम ज़िले में हुआ। उनके पिता डाकिया थे और उन्होंने अपने बेटे को अच्छी शिक्षा दिलाने की पूरी कोशिश की। बी.एस.सी. करने के बाद मोहन राज निर्देशक सत्यम् के अधीन प्रशिक्षार्थी के रूप में 1981 में फिल्मों में आये। 1983 में उन्होंने वी. राजगोपाल के साथ सहायक के रूप में काम करना शुरू किया। **वेदम् पुतितु** सम्पादक के रूप में उनकी पहली फिल्म है।

P. MOHANRAJ was born in 1956 in Salem District of Tamil Nadu. His father was a postman, who ensured that his son had a good education. He completed his B.Sc. in Physics and then joined the film industry in 1981 as an apprentice to the editor Sathyam. In 1983, he worked under V. Rajagopal as his assistant and later as his associate. VEDHAM PUTHITHU is his first film as an independent editor.

सर्वोत्तम कला निर्देशन पुरस्कार

थोटा थरणी

कला निर्देशक **थोटा थरणी** को रजत कमल और 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम कला निर्देशन का 1987 का पुरस्कार **थोटा थरणी** को तमिल फिल्म **नायकन** में फिल्म के अनुरूप वातावरण और स्वरूप की रचना करने में सैटों के निर्माण तथा रंग योजना दोनों में यथा सम्भव प्रामाणिक रूप से फिल्म के दृश्य प्रभाव को सही अर्थ देने के लिए दिया गया है।

award for the best art direction

THOTTA THARINI

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Art Director THOTTA THARINI

Citation :

"The Award for the Best Art Direction of 1987 is given to THOTTA THARINI for his work in the Tamil film NAYAKAN for interpreting the visual content of the film as authentically as possible, both in the design and construction of the sets and the colour schemes, to create the appropriate atmosphere and character of the film."

थोटा थरणी का जन्म 1949 में मद्रास में हुआ। उन्होंने मद्रास के राजकीय कला और शिल्प महाविद्यालय में ललित कला तथा चित्रकला की शिक्षा प्राप्त की। इसके बाद उन्होंने चित्रकला, पोस्टर डिजाइन तथा ग्राफिक्स के बारे में कई गोष्ठियों और शिविरों में भाग लिया है। उन्हें चित्रकला और ग्राफिक्स के लिए फ्रांस सरकार की छात्रवृत्ति तथा कई राज्य पुरस्कार मिले हैं। वे **अमावस्या चन्द्रुद्** और **सागर संगमम** (दोनों तेलुगु) फिल्मों में कला निर्देशन के लिए भी पुरस्कृत हो चुके हैं। मद्रास, बंबई, कलकत्ता, बंगलौर, चंडीगढ़, हैदराबाद और एरनाकुलम में प्रमुख कला दीर्घाओं में उनकी एकल तथा सामूहिक चित्र कला प्रदर्शनियां हुई हैं। फ्रांस, स्पेन, आस्ट्रिया, जापान, मलयेशिया, युगोस्लाविया तथा पश्चिम जर्मनी में भी उनकी कलाकृतियां प्रदर्शित की गई हैं। भारत और बिदेश में कई कला-संग्रहालयों में उनकी रचनाएं शामिल हैं।

THOTTA THARINI was born in 1949 in Madras. He studied Fine Arts and Painting at the Government College of Arts and Crafts at Madras and thereafter attended several workshops and camps on graphics, painting and poster design. He has won a scholarship from the Government of France and has been given several state awards for his paintings, graphics and art direction for films such as AMAVASYA CHANDRUDU (Telugu) and SAGARA SANGAMAM (Telugu). He has held many one man and group exhibitions at leading art galleries in Madras, Bombay, Calcutta, Bangalore, Chandigarh, Hyderabad and Ernakulam. His work has also been seen in France, Spain, Austria, Japan, Malaysia, Yugoslavia and West Germany and he is represented in several notable collections, both in India and abroad.

सर्वोत्तम वेशभूषा पुरस्कार

रमीला पटेल और मणि रबादी

वेशभूषाकार **रमीला पटेल** और **मणि रबादी** को रजत कमल और 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम वेशभूषा का 1987 का पुरस्कार **रमीला पटेल** और **मणि रबादी** को हिन्दी फिल्म **पेस्टनजी** में पारसी समुदाय और एक विशेष काल की वेषभूषा को उसकी पूरी बारीकियों पर ध्यान देते हुए तैयार करने तथा इस तरह फिल्म के स्तर को बढ़ाने के लिए दिया गया है।

award for the best costume designing

RAMILLA PATEL and MANI RABADI

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Costume Designers RAMILLA PATEL and MANI RABADI.

Citation:

"The Award for the Best Costume Designing of 1987 is given to RAMILLA PATEL and MANI RABADI for recreating the costumes of the period and the Parsi community with meticulous attention to detail, enhancing the quality of the film in the Hindi film PESTONJEE."

मणी रबादी ने बम्बई विश्वविद्यालय से मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद नाटकों में काम करना शुरू किया। बाद में वे गुजराती फिल्मों में अभिनय करने लगीं। 1957 में वे महिलाओं की पहली हिन्दी पत्रिका 'गोरी' की सम्पादक बनीं। 1972 में उन्होंने हिन्दी फिल्मों के प्रमुख कलाकारों की वेशभूषा तैयार करने का काम शुरू कर दिया। वे हिन्दी फिल्मों की लगभग सभी नायिकाओं की वेशभूषा तैयार कर चुकी हैं और अब भी नई पीढ़ी की अभिनेत्रियों की वेशभूषा सजा रही हैं। वे दो विदेशी फिल्मों **विंग्स ऑफ फायर** और **ब्लड स्टोन ऑफ इंडिया** के लिये वेशभूषाकार के रूप में काम कर चुकी हैं। अब भी उनके पास कई फिल्मों की वेशभूषा तैयार करने का काम है।

MANI RABADI completed her matriculation from Bombay University and started working on stage and later as a heroine in Gujarati films. In 1957 she became editor of the first Hindi women's magazine called "Gori". She started working as a dress designer for top Hindi film stars in 1972. She has designed clothes for practically all the major Hindi film heriones and continues to do so for the younger generation of stars today. She has also designed the costumes for at least two foreign films, WINGS OF FIRE and BLOOD STONE OF INDIA. She is currently designing for several films which are on the floors.

सर्वोत्तम संगीत निर्देशन पुरस्कार

बनराज भाटिया

संगीत निर्देशक **बनराज भाटिया** को रजत कमल और 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम संगीत निर्देशन का 1987 का पुरस्कार **बनराज भाटिया** को हिन्दी फिल्म **तमस** में विभाजन से पूर्व साम्प्रदायिक विद्वेष के बीच मानवीय पीड़ा को संगीत के माध्यम से अभिव्यक्त करने के उद्देश्य से स्वर और लय का जटिल संयोजन करके घटनाओं के दुखद आयामों को व्यक्त करने में सहायता करने के लिए दिया गया है।

award for the best music direction

VANRAJ BHATIA

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Music Director VANRAJ BHATIA.

Citation :

"The Award for the Best Music Direction of 1987 is given to VANRAJ BHATIA for creating a thematic score on a heroic scale through melody and complex harmonic arrangements of a symphonic character to stress the human anguish during the holocaust that followed partition helping greatly in defining the tragic dimensions of the events in the Hindi Film TAMAS."

वनराज भाटिया का जन्म बंबई में 1927 में हुआ। उन्होंने 1949 में एलफेंस्टोन कालेज बंबई से अंग्रेजी में एम.ए. किया। इसके साथ-साथ वे डाक्टर मानिक भगत से संगीत भी सीखते रहे। 1950 से 1954 तक उन्होंने लंदन में रायल अकादमी आफ म्यूजिक में अध्ययन किया। वहां उन्हें स्वर्ण पदक मिला। इसके बाद 1954 से 1959 तक उन्होंने पेरिस में संगीत की शिक्षा प्राप्त की। 1960 से 1965 तक वे दिल्ली विश्वविद्यालय के संगीत संकाय में पश्चिमी संगीत विभाग में रीडर रहे। 1965 के बाद से वे बंबई में रहकर स्वतंत्र संगीत निर्देशक के रूप में काम कर रहे हैं। उनकी संगीत रचनाओं में वायलिन सोनाटा (1956) ए वुडविंड क्विन्ट (1957) और ए पियानो कन्चेर्टो (1958) शामिल हैं। नोवैलो (लंदन) और आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय प्रेस, न्यूयार्क से उनकी कुछ रचना भी प्रकाशित हुई हैं। 1960 और 1970 के दशकों में नई दिल्ली के राष्ट्रीय नाटक विद्यालय द्वारा प्रस्तुत अनेक नाटकों में भी उन्होंने संगीत दिया। तीन मूर्ति भवन में जवाहरलाल नेहरू के बारे में प्रकाश और ध्वनि कार्यक्रम के लिए उन्होंने संगीत दिया। जापान में ओसाका में एक्सपो 70 प्रदर्शनी में भारतीय मण्डप के लिए संगीत रचना का काम भी उन्हें सौंपा गया। उन्होंने रेडियो, टेलीविजन तथा फिल्मों के लगभग 600 विज्ञापनों में भी संगीत दिया है।

वे श्याम बेनेगल, अपर्णा सेन, कुमार साहनी, गोविन्द निहलानी, सईद मिर्जा, कुन्दन शाह और प्रकाश झा जैसे निर्देशकों की लगभग 20 फीचर फिल्मों में संगीत दे चुके हैं।

VANRAJ BHATIA was born in Bombay in 1927. He completed his M.A. with English Honours from Elphinstone College, Bombay in 1949, while studying music locally with Dr. Manek Bhagat. Studies at the Royal Academy of Music, London from 1950-54 (where he received a Gold Medal) were followed by a period at the Paris Conservatoire under the legendary Nadia Boulanger from 1954-59. He was appointed Reader in Musicology in charge of the Western Music Department at the Faculty of Music, Delhi University from 1960-65. Since 1965 he has been working as a freelance composer based in Bombay. His compositions include a Violin Sonata (1956), a Woodwind Quintet (1957), a Piano Concerto (1958) and several other instrumental and choral works. His works are published by Novello (London) and the Oxford University Press (New York). He has composed incidental music for several plays produced by the National School of Drama in the sixties and seventies, as well as the music for the "Jawaharlal Nehru" *son et lumiere* show at Teen Murti House, New Delhi. He was also commissioned to write music for the Indian Pavilion at Expo 70 in Osaka and has been responsible for the music for about 600 advertisements on film, radio and television.

On film, his work includes the music for about 20 features directed by such notable filmmakers as Shyam Benegal, Aparna Sen, Kumar Shahani, Govind Nihalani, Saeed Mirza, Kundan Shah and Prakash Jha.

सर्वोत्तम गीत पुरस्कार

गुलज़ार

गीतकार **गुलज़ार** को रजत कमल और 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम गीत का 1987 का पुरस्कार **गुलज़ार** को हिन्दी फिल्म **इजाज़त** के अत्यन्त मधुर गीत के लिए दिया गया है जिसमें उन्होंने प्रेम और वियोग के भावों को व्यक्त करने के लिए सूक्ष्म उपमाओं तथा रूपकों का उपयोग किया है और फिल्म के सन्दर्भ में प्रेम की पूर्ण परिभाषा प्रस्तुत की है।

award for the best lyrics

GULZAR

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Lyricist GULZAR

Citation :

"The Award for the Best Lyrics of 1987 is given to the Lyricist GULZAR for an extremely elegant lyric using subtle similies and metaphors to express attachment, desire and parting and finally to serve as a definition to love within the context of the film in the Hindi film IJAAZAT."

गुलज़ार आधुनिक चेतना के कवि हैं। वे प्रगतिशील लेखक आन्दोलन से भी जुड़े रहे हैं। उन्हें सबसे पहले स्वर्गीय बिमल राय ने फिल्मों में गीत लिखने की प्रेरणा दी। बाद में उन्होंने गुलज़ार को सहायक निर्देशक, गीतकार और लेखक के रूप में अपने साथ रखा। बिमल राय के देहांत के बाद वे स्वतन्त्र रूप में गीतकार, पटकथा लेखक और निर्देशक के रूप में काम करने लगे। वे ऋषिकेश मुखर्जी, बासु भट्टाचार्य, बासु चटर्जी, के. बाल चन्दर, बालू महेन्द्रा, प्रकाश झा, जब्बार पटेल, रमेश सिप्पी, आदि निर्देशकों की **गुड्डी, आर्शीवाद, अनुभव, घरोंदा, मासूम, न्यू दिल्ली टाइम्स, अन्दाज, खामोशी** और **संघर्ष** जैसी फिल्मों से किसी न किसी रूप से जुड़े रहे हैं।

गुलज़ार के निर्देशन में बनी फिल्में हैं—**मेरे अपने, कोशिश, अचानक, परिचय, आन्धी, मौसम, मीरा, खुशबू, किनारा, किताब, नमकीन** और **अंगूर।** इनमें से **कोशिश** को 1973 में सर्वोत्तम पटकथा लेखक का और **मौसम** को 1976 में दूसरे सर्वोत्तम कथाचित्र का पुरस्कार मिला।

उन्होंने कविता कहानी और बच्चों के लिए कई पुस्तकें भी लिखी हैं।

GULZAR is a poet of modern sensibilities who has been closely associated with the progressive writers' movement. He was commissioned by the late Bimal Roy to write lyrics and then taken on as assistant director, lyricist and writer. After Bimal Roy's untimely demise, he freelanced as a lyricist, script writer and film director. He has been associated in one capacity or another with directors like Hrishikesh Mukherjee, Basu Bhattacharya, Basu Chaterjee, K. Balachander, Balu Mahendra, Prakash Jha, Jabbar Patel, Ramesh Sippy, etc. in such films as GUDDI, ASHIRWAD, ANUBHAV, GHARAONDA, MASOOM, NEW DELHI TIMES, ANDAZ, KHAMOSHI and SANGHARSH.
Amongst the films he has directed are MERE APNE, KOSHISH (which got him a National Award for Best Screenplay in 1973), ACHANAK, PARICHAY, ANDHI, MAUSAM (which got him a National Award for Second Best Feature Film in 1976), MEERA, KHUSHBOO, KINARA, NAMKEEN and ANGOOR.
He has published some books of poems and stories and several books for children.

निर्णायक मण्डल विशेष पुरस्कार

एम.बी. श्रीनिवासन

स्वर्गीय **एम.बी. श्रीनिवासन** को रजत कमल और 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

1987 का विशेष निर्णायक मण्डल परस्कार संगीत निर्देशक स्वर्गीय **एम.बी. श्रीनिवासन** को फिल्म संगीत में उनके योगदान, फिल्म उद्योग में सभी वर्गों के तकनीशियनों की भलाई के लिए किये गये काम, उच्च स्तर के समूह संगीत तथा राष्ट्रीय स्तर पर समूह गान को बढ़ावा देने के लिए दिया गया है।

special jury award

M.B. SRINIVASAN

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the late M.B. SRINIVASAN.

Citation :

"The Special Jury Award for 1987 is given to the Music Director the late M.B. SRINIVASAN for his contribution to a whole genre of film music, for promoting the welfare of technicians of all disciplines in the film industry and for pioneering choral music of a very high order and community singing on a national scale."

एम. बी. श्रीनिवासन का जन्म 1925 में हुआ। अपने बाल्यकाल में उन्होंने छात्र आन्दोलन तथा आजादी की लड़ाई में हिस्सा लिया। वे महाकवि सुब्रह्मण्य भारती के देश भक्ति पूर्ण गीत गाया करते थे। मद्रास विश्वविद्यालय से भू विज्ञान में स्नातक की डिग्री प्राप्त करने के बाद उन्हाने इप्टा आन्दोलन में काम किया और कर्नाटक, हिन्दुस्तानी तथा पश्चिमी संगीत शैलियों में शिक्षा प्राप्त की। उन्होंने मलयालम, तेलुगू और तमिल की अनेक पुरस्कार प्राप्त करने वाली फिल्मों में संगीत दिया। वे मलयालम फिल्मों में नव सिनेमा आन्दोलन से भी जुड़े रहे। उन्होंने सबसे पहले तमिल फिल्म **पथाई तेरियुतु पार** का संगीत निर्देशन किया। उनका सबसे महत्त्वपूर्ण योगदान सामूहिक संगीत और समूहगान कार्यक्रमों में रहा है। 1972 में उन्होंने मद्रास यूथ कोयर नाम का युवा संगठन बनाया जिसने दक्षिण भारत में स्कूली बच्चों से ले कर विश्वविद्यालय के छात्रों में समूहगान को प्रोत्साहन दिया। उन्होंने सुब्रह्मण्य भारती के गीतों को संगीत बद्ध किया। उन्हें संगीत नाटक अकादमी का पुरस्कार मिला। उन्होंने जान अब्राह्म की फिल्म **अग्रहरतिल काझुतई** में नायक की भूमिका भी निभाई।

M.B. SRINIVASAN was born on 19th September, 1925. Even as a student he participated in the students' movement and freedom struggle and used to sing the patriotic songs of the great poet, Subramanya Bharathi. He took his degree in Geology from Madras University, worked with many units of the Indian Peoples' Theatre Movement and learnt Carnatic, Hindustani and Western systems of music, mainly by self-education. He scored music for many award-winning films in Malayalam, Telugu, and Tamil. He was closely associated with the New Cinema Movement in Malayalam films. PATHAI THERIYUTHU PAAR (Tamil) is the first film for which he scored the music. His most important contribution is the choral music and community singing programme. He set up his own youth choir called the Madras Youth Choir in 1972 and spearheaded the movement in the South for propagating choral group singing and community singing right from the primary school to the university level. He was a great admirer of the Tamil poet Subramanya Bharathi from his childhood and set his songs to music. He won the Sangeet Natak Akademi Award for his contribution to music. He also played the lead role in John Abraham's AGRAHARATHIL KAZHUTHAI.

सर्वोत्तम असमिया फिल्म पुरस्कार

प्रथम रागिनी

निर्माता **एस.एन. बोरा** को रजत कमल और 20,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक **धीरू भुयन** को रजत कमल और 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम असमिया कथा चित्र का 1987 का पुरस्कार **प्रथम रागिनी** को फिल्म निर्माण की दृष्टि से एक नये क्षेत्र में पहली फिल्म के रूप में महत्त्वपूर्ण उपलब्धि के लिये तथा एक ऐसी युवती के जीवन को चित्रित करने के लिए दिया गया है जो साहस और आशावाद के साथ विपरित परिस्थितियों और दुखों का सामना करती है।

award for the best feature film in assamese

PRATHAM RAGINI

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000/- to the producer S.N. BORA

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the director DHIRU BHUYAN.

Citation :

"The Award for the Best Feature Film in Assamese for 1987 is given to PRATHAM RAGINI for a significant achievement as a first film in a region still young in cinema and for the portrayal of a young girl's courage and optimism in the face of great adversity and personal tragedy."

एस.एन. बोरा का जन्म 1943 में हुआ। उन्होंने वाणिज्य में स्नातक की डिग्री प्राप्त की और 1968 से 1972 तक बिक्रीकर विभाग में काम किया। उनकी विविध विषयों में रुचि है। कई समाचार पत्रों और पत्रिकाओं में उनकी रचनाएं प्रकाशित हुई हैं। वे औद्योगिक मशीनों और कृषि उपकरणों का व्यापार भी करते हैं। वे सहकारिता आंदोलन से भी संबद्ध रहे हैं। तथा इस समय गौहाटी सहकारी नगर बैंक में निदेशक के पद पर काम कर रहे हैं।

S.N. BORA was born in 1943. He graduated in Commerce and worked in the Sales Tax Department from 1968-72. He has many interests, having written in and published different newspapers and magazines, and having dealt in industrial machinery trading and agricultural equipment manufacturing. He is also involved in the cooperative movement and is presently functioning as the Director (Operations) in the Gauhati Cooperative Town Bank.

धीरु भुयन का जन्म 1942 में गौहाटी में हुआ। उन्हें बचपन में ही फिल्मों में अभिनय करने का शौक पैदा हो गया। वे सफल बाल कलाकार रहे हैं और उन्होंने असमिया फिल्म उद्योग के प्रवीण फुकन, विष्णु प्रसाद रावा, सर्वेश्वर चक्रवर्ती, फणि शर्मा और लक्ष्याधार चौधरी जैसे दिग्गज फिल्मकारों के साथ काम किया। इस समय वे आकाशवाणी के गौहाटी केन्द्र में वरिष्ठ कार्यक्रम उद्घोषक के रूप में काम कर रहे हैं और कई लोकप्रिय रेडियो नाटक तैयार कर चुके हैं। उन्होंने अनेक नाटकों का निर्देशन करने के साथ साथ रेडियो तथा मंच नाटकों में अभिनय भी किया है। **प्रथम रागिनी** निर्देशक के रूप में उनकी पहली फिल्म है।

DHIRU BHUYAN was born in 1942 in Guwahati, Assam and developed a penchant for film acting from his childhood. He has been a successful child artiste and was associated with stalwarts of the Assamese film industry like Prabin Phukan, Bishnu Prasad Rava, Sarveswar Chakravarty, Phani Sarma and Lakshyadhar Choudhury. He is currently a Senior Programme Announcer at All India Radio, Guwahati and has produced a number of popular radio plays. He is also a successful stage director and a popular radio and stage actor. PRATHAM RAGINI is his first as director.

सर्वोत्तम बंगला फिल्म पुरस्कार

अन्तरयली यात्रा

निर्माता **राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम लि०** को रजत कमल तथा 20,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक **गौतम घोष** को रजत कमल और 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम बंगला फिल्म का 1987 का पुरस्कार **अन्तरयली यात्रा** को 19वीं शताब्दी के आरम्भिक वर्षों की एक घटना के माध्यम से शोषण, जीवन और मृत्यु के सर्वभौमिक सत्य को चित्रित करने और परिवर्तन की अनिवार्यता के प्रति विश्वास जागृत करने के लिए दिया गया है।

award for the best feature film in bengali

ANTARYALI YATRA

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000/- to the producer NATIONAL FILM DEVELOPMENT CORPORATION LTD

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the director GAUTAM GHOSE

Citation :

"The Award for the Best Feature Film in Bengali for 1987 is given to ANTARYALI YATRA for creating through an event of the early 19th century a universal parable of exploitation, life and death with an underlying faith in the inevitability of change."

गौतम घोष का जन्म 1950 में हुआ। कलकत्ता विश्वविद्यालय से स्नातक की डिग्री प्राप्त करने के बाद उन्होंने नाटकों और फोटो-पत्रकारिता के क्षेत्र में पदार्पण किया। 1972 में उन्होंने वृत्तचित्र तथा लघु विज्ञापन फिल्में बनाना शुरू किया। 1976 में उन्होंने **हंगरी आटम** वृत्त चित्र बनाया जिसकी बहुत सराहना हुई। **ओबरहसन** फिल्म समारोह में इस वृत्तचित्र को पुरस्कार मिला तथा लिपजिग में डिप्लोमा ऑफ मेरिट प्राप्त हुआ। 1980 में उन्होंने आंध्र प्रदेश में नक्सलवाद पर आधारित तेलुगू फिल्म **माँ भूमि** बनाई जिसे सर्वोत्तम क्षेत्रीय फिल्म का पुरस्कार मिला। 1981 में उनकी दूसरी फीचर फिल्म **दखल** बनी। यह बंगला फिल्म शोषणवादी व्यवस्था के खिलाफ जनजातीय लोगों के संघर्ष पर आधारित थी। इसे उस वर्ष का सर्वोत्तम कथा चित्र का राष्ट्रपति का पुरस्कार मिला। इसे फ्रांस में 11 वें अन्तर्राष्ट्रीय मानव अधिकार फिल्म समारोह में निर्णायक मण्डल का पुरस्कार प्राप्त हुआ। 1984 में बनी उनकी फिल्म **पार** के लिए अभिनेता नसीरुद्दीन शाह को वेनीस में 41 वें अन्तर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह में सर्वोत्तम अभिनेता का पुरस्कार मिला। इस फिल्म को 1984 का सर्वोत्तम हिन्दी फिल्म का राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार और उस वर्ष का यूनेस्को सोलिडैरिटी अवार्ड भी प्रदान किया गया।

GAUTAM GHOSE was born in 1950. He graduated from the University of Calcutta and took up theatre and photo-journalism. By 1972 he was making documentaries and short advertisement films, and HUNGRY AUTUMN, a documentary made in 1976, was acclaimed both by the critics and the serious film lovers, winning an award at Oberhausen and receiving a Diploma of Merit at Leipzig. His first feature film, MAA BHOOMI, based on the Naxalite movement in Andhra Pradesh, was made in Telugu in 1980 and was judged the best regional film. His second feature film, DAKHAL, made in Bengali in 1981, based on a tribal people's confrontation with an exploitative system, won the President's Award for the Best Feature Film of the year and the Grand Jury Prize in the XI International Human Rights Film Festival in France. PAAR (1984) won his actor, Naseeruddin Shah, the Best Actor's prize at the 41st International Film Festival in Venice. The film was also awarded the UNESCO Solidarity Award for the Year and the National Award for the Best Hindi Film of 1984.

सर्वोत्तम हिन्दी फिल्म पुरस्कार

पेस्टनजी

निर्माता **राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम लि०** को रजत कमल तथा 20,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक **विजया मेहता** को रजत कमल और10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम हिन्दी कथा चित्र का 1987 का पुरस्कार **पेस्टनजी** को विडम्बनाओं से भरी एक ऐसी सुन्दर और सरल कहानी के चित्रण के लिये दिया गया है जिसमें एक दूसरे के साथ की जरूरत तथा जीवन के प्रति निष्ठा और स्वीकृति पर बल दिया है।

award for the best feature film in hindi

PESTONJEE

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000/- to the producer NATIONAL FILM DEVELOPMENT CORPORATION LTD.

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Director VIJAYA MEHTA

Citation :

"The Award for the Best Feature Film in Hindi for 1987 is given to PESTONJEE for creating an exquisite and gentle tale full of irony, stressing the universal need for human companionship, loyalty and acceptance of life."

विजया मेहता ने बंबई विश्वविद्यालय से एम.ए. किया। वे लंबे समय तक नाटकों से संबद्ध रहीं और कुछ वर्ष पहले ही उन्होंने फिल्मों में प्रवेश किया। उन्होंने इंग्लैंड में नाटक प्रशिक्षण की विधियों का अध्ययन किया और उनके नाटक जर्मनी में भी खेले गए। सबसे पहले श्याम बेनेगल ने अपनी हिंदी फिल्म **कलयुग** (1981) में उन्हें अभिनय का अवसर दिया। इसके बाद 1984 में उन्होंने गोविन्द निहलानी की हिंदी फिल्म **पार्टी** में काम किया। इसके लिए उन्हें 1985 के टोकियो अन्तर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह में सर्वोत्तम अभिनेत्री का पुरस्कार मिला। इस बीच उन्होंने अपनी फिल्मों का निर्देशन और उसमें अभिनय करना शुरू कर दिया। उन्होंने पहली फिल्म **स्मृति चित्रें** दूरदर्शन के लिए बनाई, जिसे 1983 की सर्वोत्तम मराठी फिल्म का राष्ट्रीय पुरस्कार प्रदान किया गया। हिंदी फिल्म **राव साहेब** में उन्हें 1985 का सर्वोत्तम सह अभिनेत्री पुरस्कार मिला। इसी फिल्म को कला निर्देशन का पुरस्कार भी प्राप्त हुआ। **पेस्टनजी** उनकी तीसरी फीचर फिल्म है। उन्होंने अपने नाटकों **शाकुन्तलम** तथा **वाडा चीरेबंदी** की टेलीफिल्में भी तैयार की हैं।

VIJAYA MEHTA took a post graduate degree from Bombay University. She is a stalwart of the stage whose association with films has been comparatively recent, but very fruitful. She has studied theatre training methods in the UK and some of her productions for the stage have been seen in Germany. She was first induced to act in films by Shyam Benegal in his Hindi film KALYUG (1981)..This was followed by a role in Govind Nihalani's Hindi film PARTY (1984) which won her the Best Actress Award at the 1985 Tokyo International Film Festival. In the meantime she started directing and acting in her own films. The first, SMRITI CHITRE, made for Doordarshan, won the National Award for the Best Marathi Film of 1983. RAO SAHEB, made in Hindi, won her the Best Supporting Actress Award for 1985 for her role as 'Mawsi' and another for Art Direction. PESTONJEE is her third feature film. She has also produced telefilms of her own stage productions of SHAKUNTALAM and WADA CHIREBANDI.

सर्वोत्तम कन्नड़ फिल्म पुरस्कार

कादिना बेनकी

निर्माता **मैसर्स मनसा आर्ट** को रजत कमल और 20,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक **सुरेश हबलीकर** को रजत कमल और 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम कन्नड़ कथाचित्र का 1987 का पुरस्कार **कादिना बेनकी** को मनोविज्ञानिक असंतुलन के कारण वैवाहिक झगड़ों की समस्याओं को कलात्मक ढंग से चित्रित करने के प्रयास में ईमानदारी बरतने के लिए दिया गया है।

award for the best feature film in kannada

KAADINA BENKI

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000/- to the producer M/s MANASA ARTS

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the director SURESH HEBLIKAR

Citation :

"The Award for the Best Feature Film in Kannada for 1987 is given to KAADINA BENKI for its sincerity in its attempt to delve into the problem of marital discords due to psychological imbalance in an artistic manner."

सुरेश हबलीकर का जन्म 1945 में कर्नाटक में धारवाड़ में हुआ। उन्होंने कर्नाटक विश्वविद्यालय से अर्थशास्त्र में एम.ए. किया। उन्होंने भारतीय विद्या भवन बंबई से विपणन और विज्ञापन में डिप्लोमा भी प्राप्त किया। उन्होंने राज्य भूमि विकास बैंक में नौकरी की और साथ साथ नाटकों में काम भी करते रहे। उन्होंने **कंकन** और **रिष्य श्रृंग** सहित अनेक कन्नड़ फिल्मों में अभिनय किया। पर्यावरण के प्रति मोह होने के कारण उन्होंने कई वृत्तचित्र बनाए। उनके निर्देशन में बनी पहली फिल्म **अन्तराल** थी। इसके बाद उन्होंने **आगन्तुक** का निर्देशन किया। **कादिना बेनकी** उनकी तीसरी फिल्म है।

SURESH HEBLIKAR was born in 1945 in Dharwar, Karnataka. After school and college, he obtained a post-graduate degree in Economics from Karnataka University. He has also obtained a diploma in Marketing and Advertising from Bharatiya Vidya Bhavan, Bombay. He became active on the stage while working in the State Land Development Bank. He has acted in several Kannada films, among them KANKANA and RISHYA SHRUNGA. His interest in the environment and ecology has prompted him to make some documentary films. His first feature film as director was ANTARALA, which was followed by AAGANTUKA. KAADINA BENKI is his third feature film.

सर्वोत्तम मलयालम फिल्म पुरस्कार

पुरुषार्थम्

निर्माता **पी.टी.के. मोहम्मद** को रजत कमल और 20,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक **के.आर. मोहनन** को रजत कमल और 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम मलयालम कथाचित्र का 1987 का पुरस्कार **पुरुषार्थम्** को एक उच्च स्तर की रचना प्रस्तुत करने के लिए दिया गया है। जिसमें एक छोटा सा लड़का अपने स्वर्गीय पिता के पुराने वातावरण की खोज निकालता है, जिसके फलस्वरूप वह अपनी माँ से दूर चला जाता है।

award for the best feature film in malayalam

PURUSHARTHAM

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000/- to the producer P.T.K. MOHAMMAD

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the director K.R. MOHANAN

Citation:

"The Award for the Best Feature Film in Malayalam for 1987 is given to PURUSHARTHAM for creating a highly disciplined work of great formal quality of a little boy's discovery of his dead father's environment and his eventual alienation from his mother."

पी.टी.के. मोहम्मद का जन्म 1949में हुआ। गणित में डिग्री प्राप्त करने के बाद उन्होंने बारह वर्ष तक आबूधाबी में एक फ्रांसीसी कंपनी में काम किया। इस समय वे फिल्म क्षेत्र में सक्रिय हैं। उन्होंने **अश्वत्थामा** फिल्म का निर्माण किया है और **उप्पू** फिल्म में नायक की भूमिका निभाई जिसे 1986 का सर्वोत्तम मलयालम कथाचित्र का राष्ट्रीय पुरस्कार मिला। **पुरुषार्थम** उनकी दूसरी फिल्म है।

P.T.K. MOHAMMAD was born in 1949. He graduated in Mathematics and worked in a French company in Abu Dhabi for 12 years. He is now actively associated with cinema, having produced ASHWATHAMA and having acted the main role in UPPU, which won the National Award for the Best Feature Film of 1986 in Malayalam. PURUSHARTHAM is his second feature film as producer.

के.आर. मोहनन का जन्म 1948 में हुआ। वनस्पति शास्त्र में डिग्री प्राप्त करने के बाद उन्होंने भारतीय फिल्म तथा टेलीविजन संस्थान पुणे से डिप्लोमा प्राप्त किया। निर्देशक के रूप में उनकी पहली फिल्म **अश्वत्थामा** की बहुत सराहना हुई और कई फिल्म समारोहों में उसे दिखाया गया। उन्होंने केरल सरकार के विभिन्न विभागों के लिए लगभग बीस वृत्तचित्रों की पटकथा लिखी है और निर्देशन किया है। इसमें **द रेसिंग स्नेक्स** और **द हाउस आफ गाड** विशेष उल्लेखनीय हैं। इन दिनों वे केरल राज्य फिल्म विकास निगम में फिल्म अधिकारी के रूप में काम कर रहे हैं।

K.R. MOHANAN was born in 1948. After his graduation in Zoology, he obtained a diploma in Film Direction from the FTII, Pune. His first film as director ASHWATHAMA was highly acclaimed and was seen in various film festivals. He has scripted and directed about 20 documentary films for various departments of the Government of Kerala, including, notably, THE RACING SNAKES and THE HOUSE OF GOD. He is currently working as Film Officer, Kerala State Film Development Corporation.

सर्वोत्तम मराठी फिल्म पुरस्कार

सर्ज़ा

निर्माता **सीमा देव** को रजत कमल और 20,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक **राज दत्त** को रजत कमल और 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम मराठी कथाचित्र का 1987 का पुरस्कार **सर्ज़ा** को शिवाजी के काल के संघर्ष पूर्ण दिनों की कहानी को देशभक्ति के रंग में प्रस्तुत करने के लिए दिया गया है।

award for the best feature film in marathi

SARJA

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000/- to the producer SEEMA DEO

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the director RAJDUTT

Citation:

"The Award for the Best Feature Film in Marathi for the year 1987 is given to SARJA for its patriotic vigour in the retelling of a story set during the turbulent times of Shivaji."

सीमा देव का जन्म 1940 में बम्बई में हुआ। उन्होंने सबसे पहले 1957 में मराठी फिल्म **अल्लिया भोंगसी** में अभिनय किया। इससे अगले साल मराठी फिल्म **ज्ञानबा तुकाराम** में उन्होंने नायिका की भूमिका की। उसके बाद से वे 100 से अधिक मराठी और हिन्दी फिल्मों में अभिनय कर चुकी है। पिछले 25 वर्ष से वे मराठी नाटकों में भी अभिनय कर रही हैं। निर्माता के रूप में उनकी पहली फिल्म 1976 में **या सुखारानों या** (मराठी) बनी। निर्माता के रूप में **सर्जा** उनकी दूसरी फिल्म है।

SEEMA DEO was born in Bombay in 1940 and has been acting in films since 1957, when she appeared in the Marathi film AALIYA BHOGASI. Her first film as heroine, GYANBA TUKARAM (Marathi) came the next year. Since then, she has acted in more than a hundred Marathi and Hindi films. She has also been acting on the Marathi stage for the last 25 years. Her first film as producer was YA SUKHAANO YA (Marathi) in 1976. SARJA is the second film she has produced.

राज दत्त का जन्म 1932 में हुआ। वे वाणिज्य स्नातक हैं। उन्होंने मराठी में 25 कथाचित्रों का निर्देशन किया है। इसमें **अपराध, शापित, मुंबइचा फौजदार, पुढ़चे पाऊल, रघु मैना** और **हेच मजा माहेर** फिल्में शामिल हैं।

RAJDUTT was born at Dhamangaon in 1932. He is a Commerce graduate who has directed 25 Marathi feature films. These include APRADH, SHAPIT, MUMBAICHA FAUJDAR, PUDHACHA PAOOL, RAGHU MAINA and HECH MAZA MAHER.

सर्वोत्तम उड़िया फिल्म पुरस्कार

निषिद्ध स्वप्न

निर्माता **मनमोहन महापात्र** को रजत कमल और 20,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक **मनमोहन महापात्र** को रजत कमल और 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम उड़िया कथाचित्र का 1987 का पुरस्कार **निषिद्ध स्वप्न** को उड़ीसा के एक गांव में एक परिवार के जीवन का निष्पक्ष अवलोकन करने की तकनीक के लिए दिया गया है जिसमें सामाजिक परिवर्तन के संदर्भ में सभी के दृष्टिकोणों, प्रेरणाओं, आशाओं तथा निराशाओं को परिभाषित किया गया है।

award for the best feature film in oriya

NISIDHHA SWAPNA

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000/- to the producer MANMOHAN MAHAPATRA

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the director MANMOHAN MAHAPATRA

Citation:

"The Award for the Best Feature Film on Oriya for 1987 is given to NISIDHHA SWAPNA for its uncompromising technique in objectively observing the life of a family in an Oriya village defining the attitudes, motivations, hopes and disillusionment of each one in the context of social change of which they are all a part."

मनमोहन महापात्र का जन्म 1951 में हुआ। उन्होंने भारतीय फिल्म तथा टेलीविजन संस्थान में डिप्लोमा किया। उनकी उड़िया फीचर फिल्मों **सीता राति, नीरबा झाड़ा, क्लान्त अपरान्ह** और **माझी पाहचा** को सर्वोत्तम क्षेत्रीय फिल्म के राष्ट्रीय पुरस्कार मिले हैं। इन फिल्मों को फिल्म समारोहों के दौरान इंडियन पैनोरमा में भी शामिल किया गया। इस समय वे राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम की सहायता से बन रही फिल्म **अन्ध दिगन्त** का निर्देशन कर रहे हैं। उन्होंने **वायसिस आफ सायलेंस** और **कोणार्क द सन टेंपल** नाम के वृत्तचित्र भी बनाए हैं।

MANMOHAN MAHAPATRA was born in 1951. He studied film direction at the FTII, Pune. His feature films, SEETA RAATI, NEERABA JHADA, KLANTA APARANHA, MAJHI PAHACHA, all in Oriya, have won National Awards as the best regional films in their respective years. These films have also been included in various Indian Panorama sections. He is currently working on an NFDC-financed film, ANDHA DIGANTA. He has also made two documentaries, namely, VOICES OF SILENCE and KONARK - THE SUN TEMPLE.

सर्वोत्तम तमिल फिल्म पुरस्कार

वीडु

निर्माता **कला दास** को रजत कमल और 20,000/- रुपये का नकद पुरस्कार
निर्देशक **बालू महेन्द्रा** को रजत कमल और 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम तमिल कथा चित्र का 1987 का पुरस्कार **वीडु** को मध्य वर्ग की एक ऐसी कामकाजी महिला का गहराई के साथ संवेदन पूर्ण चित्रण करने के लिए दिया गया है जो आज के शहरी जीवन में अपने बूढ़े दादा तथा एक बहन का भरण-पोषण करती हुई अपने परिवार की प्रतिष्ठा को बनाये रखने की कोशिश कर रही है।

award for the best feature film in tamil

VEEDU

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000/- to the producer KALA DAS

Rajat Kamal and cash prize of Rs. 10,000/- to the director BALU MAHENDRA

Citation:

"The Award for the Best Feature Film in Tamil for 1987 is given to VEEDU for a deeply compassionate portrayal of a middle class working woman with an old grandfather and sister as her dependents, attempting to retain the integrity of her family in the present day urban milieu"

कला दास एक गृहणी हैं। निर्माता के रूप में **वीडु** उनकी पहली फिल्म है।

KALA DAS is a housewife. For her, VEEDU is a first venture as producer.

42 वर्षीय **बालू महेन्द्रा** ने 1969 में भारतीय फिल्म तथा टेलीविजन संस्थान से छायाकन में स्नातक की डिग्री प्राप्त की। उन्हें उसमें स्वर्ण पदक मिला। 1975 में उन्होंने छायाकार के रूप में काम शुरू किया और स्वर्गीय रामु करियत, पी.एन. मेनन, बापू तथा के. विश्वनाथ जैसे निर्देशकों की छत्रछाया में काम करने का अवसर मिला। उन्होंने निर्देशन के क्षेत्र में 1976 में कदम रखा। वह अपनी फिल्मों में निर्देशन के साथ-साथ लेखक, संपादक और छायाकार भी स्वयं होते हैं। छायाकार के रूप में उनकी प्रमुख फिल्में हैं: **नीलू शंकरभरणम** और **मुल्लुम मलारूम**। लेखक, संपादक, छायाकार और निर्देशक के रूप में उनकी फिल्मों में **कोकिला** (कन्नड़), **अशियाथा कोलंगल** (तमिल) **मूण्डरम पिरई** (तमिल), **सदमा** (हिन्दी), **ओलंगल** (मलयालम) और **निरीक्षण** (तेलुगु) शामिल हैं। छायांकन और निर्देशन के लिए उन्हें कई राज्य पुरस्कार मिल चुके हैं। उन्हें 1977 में सादी और 1982 में रंगीन के लिए सर्वोत्तम छायांकन का राष्ट्रीय पुरस्कार प्रदान किया गया।

BALU MAHENDRA is a 42-year-old cinematography graduate from the FTII, Pune. He passed out in 1969 with a First Class first and a Gold Medal. He started off as a cinematographer in 1975 and has worked with directors such as the late Ramu Kariat, P.N. Menon, Bapu and K. Vishwanath. He directed his first film in 1976. He writes, edits, photographs and directs his films. Some of his films as cinematographer are NELLU, SHANKARABHARANAM and MULLUM MALARUM. As writer, editor, cinematographer and director his films include KOKILA (Kannada) AZHIYATHA KOLANGAL (Tamil), MOONDRAM PIRAI (Tamil), SADMA (Hindi), OLANGAL (Malayalam) and NIREEKSHANA (Telugu). He has won several state awards for cinematography and direction and has won National Awards for Best Cinematography for the years 1977 (black & white) and 1982 (colour).

गैर-कथाचित्र पुरस्कार

AWARDS FOR NON-FEATURE FILMS

सर्वोत्तम गैर कथाचित्र पुरस्कार

भोपाल : बियोंड जेनोसाइड

निर्माता **मैसर्स सिनेमार्ट फाउंडेशन** को स्वर्ण कमल और 15,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशकों **तपन के.बोस, सुहासिनी मुले** और **सलीम शेख** को स्वर्ण कमल तथा 15,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम गैर कथाचित्र का 1987 का पुरस्कार **भोपाल: बियोंड जेनोसाइड** को एक महत्त्वपूर्ण समसामयिक समस्या का प्रमाणिकता और सजगता के साथ अध्ययन करने के लिए दिया गया है जिसमें विषय वस्तु का मानवीय तथा बहु आयामी दृष्टि से विवेचन किया गया है।

award for the best non-feature film

BHOPAL: BEYOND GENOCIDE

Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 15,000/- to the producer CINEMART FOUNDATION.

Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 15,000/- to the Directors TAPAN K. BOSE, SUHASINI MULAY and SALIM SHAIKH.

Citation :

"The Award for the Best Non-Feature Film of 1987 is given to BHOPAL : BEYOND GENOCIDE for its sincere, conscientious study of a very important socio-technological issue of recent times, which explores its subject with a multi-faceted and humanistic approach."

तपन के. बोस स्वर्गीय एस. सुखदेव के साथ सहायक निर्देशक तथा पटकथा लेखक के रूप में काम कर चुके हैं। उन्होंने बीस से अधिक लघु फिल्मों का निर्देशन किया है। उनकी फिल्म **एन इंडियन स्टोरी** को 1982 की सर्वोत्तम सूचना फिल्म का राष्ट्रीय पुरस्कार मिला। उनकी फिल्में सिडनी, लंदन, ताइनेसाइड, लिपजिग, ओबरहासन, मैनहिम, उपसाला तथा अन्य अन्तर्राष्ट्रीय फिल्म समारोहों में दिखाई जा चुकी हैं।

TAPAN K. BOSE has worked as a script writer and assistant director with the late S. Sukhdev. He has directed over 20 films to date. His film AN INDIAN STORY won the National Award for the Best Information Film of the year 1982. His films have been shown at the Sydney, London, Tyneside, Leipzig, Oberhausen, Mannheim, Uppsala and other international film festivals.

सुहासिनी मुले पहले अभिनेत्री के रूप में और बाद में निर्देशक के रूप में फिल्म जगत में सक्रिय रही हैं। उन्होंने सत्यजीत रे और मृणाल सेन के साथ सह-निर्देशक के रूप में काम किया है। वे पांच वृत्तचित्रों का निर्देशन कर चुकी हैं।

SUHASINI MULAY has been associated as an actress and then as a director with the film industry. She has worked as an assistant director with Satyajit Ray and Mrinal Sen. She has directed 5 documentaries to date.

सलीम शेख ने वृत्तचित्र निर्माता स्वर्गीय एस. सुखदेव के साथ काम किया। वे चौदह वर्ष की उम्र से ही फिल्म उद्योग में सक्रिय हैं। उन्होंने **एन इंडियन स्टोरी** सहित पन्द्रह से अधिक वृत्तचित्रों में कैमरामैन के रूप में काम किया है। **भोपाल: बियांड जेनोसाइड** सह-निर्देशक के रूप में उनकी दूसरीफिल्म है।

SALIM SHAIKH worked with the late documentary film maker S. Sukhdev in various capacities from 1972-79. He has worked in the film industry since the age of fourteen. He has been the cameraman for over 15 documentaries including AN INDIAN STORY. BHOPAL: BEYOND GENOCIDE is his first film as co-director.

सर्वोत्तम मानवशास्त्रीय/मावजातीय फिल्म पुरस्कार

रास्ते बन्द हैं सब

निर्माता **मंजरी डिंगवाने**, रुरल लेबर सैल को रजत कमल और 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक **मंजीरा दत्ता** को रजत कमल और 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम मानवशास्त्रीय/मानवजातीय फिल्म का 1987 का पुरस्कार **रास्ते बन्द हैं सब** को जात-पांत जैसे पुरानी समस्या को उच्च कोटि की फिल्म शैली में प्रस्तुत करने के लिए दिया गया है, जिसमें मनुष्य द्वारा शोषण तथा वर्तमान समय के लिए उसके दुष्परिणामों को दिखाया गया है।

award for the best anthropological/ethnographic film

RAASTE BUND HAIN SUB

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Producer MANJARI DINGWANEY, RURAL LABOUR CELL.

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Director MANJIRA DUTTA.

Citation:

"TheAward for the Best Anthropological/Ethnographic film of 1987 is given to RAASTE BUND HAIN SUB for dealing with an old issue such as casteism in a profound cinematic style wherein the leitm otif of the exploitation of man by man and its consequences for the present are never lost track of."

मंजरी डिंगवाने ने 1976 में बंबई में टाटा सामाजिक विज्ञान संस्थान से सामाजिक कार्य में मास्टर डिग्री प्राप्त की। वे राजस्थान और मध्यप्रदेश में ग्रामीण शिक्षा तथा विकास की नई योजनाओं से संबद्ध रही हैं। इस समय वे हैदराबाद में गांधी अध्ययन अकादमी में ग्रामीण श्रम विभाग की समन्वयकर्ता के रूप में काम कर रही हैं।

MANJARI DINGWANEY obtained her Master's degree in Social Work from the Tata Institute of Social Science, Bombay in 1976. She has been involved in a number of projects on rural education and development in Rajasthan and Madhya Pradesh. At present, she is the Coordinator, Rural Labour Cell, Academy of Gandhian Studies, Hyderabad.

मंजीरा दत्ता ने कलकत्ता, एडिनबर्ग और लंदन में शिक्षा प्राप्त की। लंदन में उन्होंने इलिंग कालेज से प्राप्त फेलोशिप के अन्तर्गत दृश्य संचार पाठ्यक्रम के बारे में प्रशिक्षण लिया। उन्होंने बी.बी.सी. खुला विश्वविद्यालय में शिक्षाप्रद फिल्मों के निर्माता तथा दृश्य श्रव्य और टेलीविजन कार्यक्रमों की मीडिया इंचार्ज के रूप में काम किया। उन्होंने इलिंग में वृद्ध लोगों की दशा के बारे में एक फिल्म भी बनाई। 1980 में भारत लौटने के बाद से वे स्वतंत्र फोटोग्राफर के रूप में काम कर रही हैं। उन्होंने विभिन्न विषयों पर 12 वीडियो फिल्में तैयार की हैं। पिछले वर्ष उन्होंने नई दिल्ली में जामिया मिलिया जन संचार अध्ययन संस्थान में अतिथि प्राध्यापक के रूप में अध्यापन कार्य किया।

MANJIRA DATTA studied at Calcutta, Edinburgh and London, where she did a course in visual communications on a fellowship awarded by Ealing College, London, which is attached to the famous Ealing Studios. She worked as a producer of educational films in the BBC Open University and as a media-in-charge of audiovisual and TV programmes and also produced a film on the condition of old people in Ealing. Since her return to India in 1980, she has been freelancing as a photographer. She has made 12 video films on a variety of subjects.

सर्वोत्तम जीवनी संबंधी फिल्म पुरस्कार

बशीर-द मैन

निर्माता **कन्नमकुलम अब्दुल्ला** को रजत कमल और 10,000/-रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक **एम.ए. रहमान** को रजत कमल और 10,000/-रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम जीवनी संबंधी फिल्म का 1987 का पुरस्कार **बशीर-द मैन** को एक अपेक्षाकृत अज्ञात साहित्यिक विभूति का नये और खुले ढंग से इस तरह का चित्रण करने के लिए दिया गया है, जिसमें सांसारिक बुद्धि और विवेक से सम्पन्न इस व्यक्ति के जीवन की जटिलतायें हमारे सामने प्रकट होती है।

award for the best biographical film

BASHEER — THE MAN

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Producer KANNAMKULAM ABDULLA.

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Director M.R. RAHMAN.

Citation :

"The Award for the Best Biographical Film of 1987 is given to BASHEER-THE MAN for its presentation of a relatively unknown literary personality through a fresh, spontaneous, uninhibited portrayal that brings out the complexity of an unconventional individual, rich in wit and worldly wisdom.

कन्नमकुलम अब्दुल्ला का जन्म केरल में कन्नमकुलम में 1959 में हुआ। फिल्म निर्माता के रूप में **बशीर द मैन** उनकी पहली फिल्म है।

KANNAMKULAM ABDULLA was born at Kannamkulam at Bekal in Kerala in the year 1959. BASHEER -THE MAN is his first venture in filmmaking.

एम.ए. रहमान का जन्म केरल में उदना गांव में 1954 में हुआ। अंग्रेजी साहित्य में स्नातक की डिग्री प्राप्त करने के बाद उन्होंने मलयालम में एम.ए. और एम.फिल किया। वे लेखक, फोटोग्राफर तथा कलाकार हैं। उनकी कई कहानियां और उपन्यास प्रकाशित हुए हैं। इस समय वे तेल्लीचेरि में एक कालेज में लेक्चरर हैं। **बशीर द मैन** उनके निर्देशन में बनी पहली फिल्म है।

M.A. RAHMAN was born in 1954 in Udna village in Kerala. He graduated in English Literature and has done his M.A. and M. Phil. in Malayalam. He is a writer, photographer and artist who has published short stories and novels. He is currently working as a lecturer in a college in Tellicherry. BASHEER - THE MAN is also a first venture for him.

सर्वोत्तम कला/सांस्कृतिक फिल्म पुरस्कार

द किंगडम ऑफ गॉड

निर्माता : **शिल्प भारती पब्लिसिटी (फिल्म प्रभाग के लिए)** को रजत कमल और 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक **रनबीर रे** को रजत कमल और 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम कला/सांस्कृतिक फिल्म का 1987 का पुरस्कार **द किंगडम ऑफ गॉड** को ग्रामीण भारत की समृद्ध लोकचित्र कला को फिल्म शैली का कुशलता पूर्वक उपयोग करते हुए गहरी निष्ठा के साथ चित्रित करने के लिए दिया गया है।

award for the best arts/cultural film

THE KINGDOM OF GOD

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Producer: SILPABHARATI PUBLICITY (for FILMS DIVISION)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Director RANABIR RAY.

Citation

"The Award for the Best Arts/Cultural Film of 1987 is given to THE KINGDOM OF GOD for treating its subject with careful cinematic detail and with a deep sincerity towards the very rich folk painting scene in rural India."

रनबीर रे ने अपना फिल्मी जीवन स्वर्गीय निर्देशक नरेश मित्रा के सहायक के रूप में शुरू किया। वे कला और संस्कृति के बारे में फिल्में बनाने के विशेषज्ञ हैं। उनके द्वारा निर्देशित प्रमुख वृत्त चित्र हैं : **पेंटर्स विद सिंपल हार्ट्स, नन्दलाल बोस, द वायसिस आफ साइलेंस, टैगोर पेंटिंग्स**। उनकी पुरस्कार प्राप्त करने वाली हाल की कुछ फिल्में हैं – **पोएम्ज इन पैटर्न, फायर गेम्स और वूवन ड्रीम्स**।

RANABIR RAY started his career in films as an assistant to the late director Naresh Mitra. He has specialised in films on art and culture. Among the notable documentaries made by him are PAINTERS WITH SIMPLE HEARTS, NANDLAL BOSE, THE VOICES OF SILENCE and TAGORE PAINTINGS. Some of his more recent award-winning films are POEMS IN PATTERN, FIRE GAMES and WOVEN DREAMS.

सर्वोत्तम वैज्ञानिक (पर्यावरण तथा परिस्थिति विज्ञान सहित) फिल्म पुरस्कार

ए को-ऑपरेटिव फॉर स्नेक कैचर्स

निर्माता **मैसर्स इको मीडिया प्रा. लि.** को रजत कमल और 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशकों **रोमुलुस व्हिटकर** और **शेखर दत्तात्री** को रजत कमल और 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम वैज्ञानिक (पर्यावरण तथा परिस्थिति विज्ञान सहित) फिल्म का 1987 का पुरस्कार **ए को-ऑपरेटिव फॉर स्नेक कैचर्स** को ऐसी धारणाओं का सूचनात्मक शैली में प्रस्तुतीकरण करने के लिए दिया गया है कि परंपरागत विधियों और जनजातियों में इस समय मौजूद ज्ञान का उपयोग जनसाधारण की भलाई के लिए किया जा सकता है और परोक्ष रूप से वैज्ञानिक दृष्टि का प्रसार किया जा सकता है।

award for the best scientific film (including environment and ecology)

A COOPERATIVE FOR SNAKE CATCHERS

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the producer ECO MEDIA PVT. LTD.

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Directors: ROMULUS WHITAKER and SHEKAR DATTATRI

Citation :

"The Award for the Best Scientific (including Environment and Ecology) Film of 1987 is given to A COOPERATIVE FOR SNAKE CATCHERS for the informative portrayal of concepts such as the use of traditional skills and knowledge existing in a tribal society for the common good, indirectly spreading a scientific temper all around."

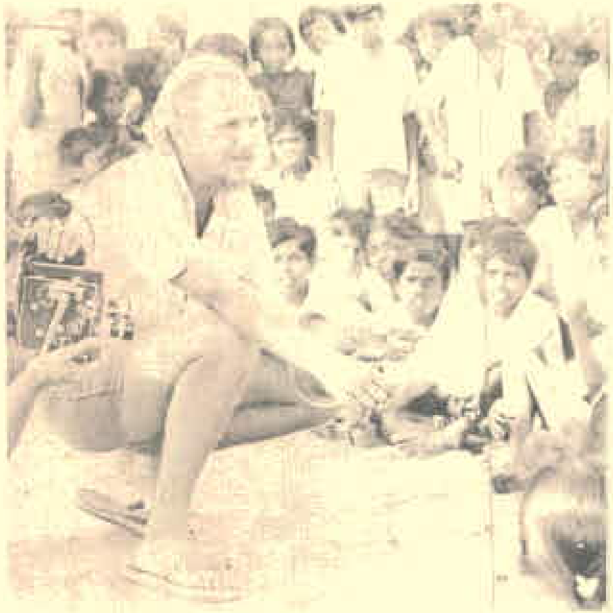

रोमुलुस विटकर का जन्म 1943 में न्यूयार्क में हुआ। वे भारत में विवाह करने के बाद यहीं बस गए और भारतीय नागरिक बन गए। उन्होंने सांपों और मगरमच्छों के बारे में गहरा अध्ययन किया है और इस क्षेत्र में अन्तरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त की है। उन्होंने तमिलनाडु में सांप पकड़ने वाली इरूला जनजाति के बीच में भी काम किया। उन्होंने प्राकृतिक इतिहास के बारे में फिल्मों के क्षेत्र में अनेक भारतीय तथा विदेशी फिल्मकारों के साथ सहयोग किया है। इन दिनों वे भारतीय बाल फिल्म समिति द्वारा बनाई जा रही एक तमिल फीचर फिल्म का निर्देशन कर रहे हैं।

ROMULUS WHITAKER was born in New York in 1943. He married and settled in India and became a naturalised Indian citizen. He is a leading, internationally acclaimed herpetologist, noted for his pioneering work among snakes and crocodiles and the snake-catching Irula tribe in Tamil Nadu. He has collaborated with many well-known filmmakers in India and from abroad on films on natural history. At present he is directing a Tamil feature film sponsored by the Children's Film Society of India entitled THE BOY AND THE CROCODILE.

शेखर दत्तात्री का जन्म 1963 में हुआ। उन्होंने वन्य जीवन फोटोग्राफ, फोटो पत्रकारिता व छायांकन में विशेषज्ञता प्राप्त की है। उन्होंने बारह वर्ष तक रोमुलुस विटकर और तमिलनाडु की सांप पकड़ने वाली इरूला जनजाति के लोगों के साथ काम किया है। **ए को-ऑपरेटिव फॉर स्नैक कैचर्स** सह निर्देशक, कैमरामैन और सम्पादक के रूप में उनकी पहली फिल्म है।

SHEKAR DATTATRI was born in 1963. His areas of specialisation are wildlife photography, photojournalism and cinematography. He is also a herpetologist with 12 years of experience who has worked closely with Romulus Whitaker and the Irula snake-catchers of Tamil Nadu. A COOPERATIVE FOR SNAKE CATCHERS is his first film as co-director, cameraman and editor.

सर्वोत्तम औद्योगिक फिल्म

(i) गोल्डन मुगा सिल्क-द कल्चरल हेरीटेज ऑफ असम और
(ii) लुकिंग बैक

निर्माता **निदेशक, केन्द्रीय रेशम बोर्ड, असम** तथा **मैसर्स दृष्टिकोण प्रोडक्शनुस** (फिल्म प्रभाग के लिए) को रजत कमल और 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक **शिव प्रसाद ठाकुर** और **प्रकाश झा** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम औद्योगिक फिल्म का 1987 का पुरस्कार **गोल्डन मुगा सिल्क-द कल्चरल हेरीटेज ऑफ असम** को असम के परम्परागत रेशम उद्योग का शोध परक विश्लेषण करने तथा उन पहलुओं को चित्रित करने के लिए दिया गया है जिनके कारण यह उद्योग आज भी जीवित है और फल-फूल रहा है।

सर्वोत्तम औद्योगिक फिल्म का 1987 का पुरस्कार **लुकिंग बैक** को भी दिया गया है जिसमें समकालीन औद्योगिक वातावरण जैसे उच्च तकनीकी विषय का अत्यन्त कुशल और सुन्दर चित्रण किया गया है।

award for the best industrial film

(i) GOLDEN MUGA SILK - THE CULTURAL HERITAGE OF ASSAM and
(ii) LOOKING BACK

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Producers DIRECTOR (NE), CENTRAL SILK BOARD, ASSAM (Golden Muga Silk - The Cultural Heritage of Assam) and DRISHTIKON PRODUCTIONS (for FILMS DIVISION) (Looking Back).

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Directors SIBA PRASAD THAKUR (Golden Muga Silk - The Cultural Heritage of Assam) and PRAKASH JHA (Looking Back).

Citation:

"The Award for the Best Industrial Film of 1987 is given to GOLDEN MUGA SILK - THE CULTURAL HERITAGE OF ASSAM for its exhaustive and well-researched analysis of Assam's traditional sericulture industry and the factors that have contributed to its survival and growth."

"The Award for the Best Industrial Film of 1987 is also given to LOOKING BACK for depicting a highly technical area of the contemporary industrial scene with sophistication and style."

48 वर्षीय **सिबा प्रसाद ठाकुर** ने गौहाटी विश्वविद्यालय से एम.एस.सी. की डिग्री प्राप्त की। वे पिछले तेईस वर्षों से असम में गोलाघाट के डिग्री कालेज में प्राध्यापक हैं। अपने कालेज के दिनों में उन्होंने दिल्ली, इलाहाबाद, खड़गपुर आदि कई स्थानों पर अपने राज्य की ओर से नाटक प्रतियोगिताओं तथा समारोहों में भाग लिया। 1972 से वे फिल्म क्षेत्र से जुड़े हुए हैं। उन्होंने कथाचित्रों और गैर कथाचित्रों दोनों का निर्माण एवं निर्देशन किया है। कुछ फिल्मों में अभिनय भी किया है। उनकी प्रमुख फिल्में हैं **ममता, सोनमैना, मयूरी, मन मंदिर** और **घर संसार** (सभी असमिया)।

SIBA PRASAD THAKUR is 48 years old and has been a professor in the degree college of Golaghat, Assam for about 23 years, after completing his M.Sc. from Gauhati University. During his college days, he successfully represented Assam in various drama festivals and competitions in Delhi, Allahabad, Kharagpur, etc. Since the year 1972 he has been involved in the film industry, producing and directing both feature and non-feature films, besides acting in some of them. Among his films are MOMOTA, SON MOINA, MAYURI, MON MANDIR and GHAR SANSAR (all in Assemese).

प्रकाश झा ने 1976 में भारतीय फिल्म तथा टेलीविजन संस्थान में फिल्म संपादन का प्रशिक्षण पूरा किया। उन्होंने कई महत्वपूर्ण वृत्त चित्र बनाये हैं। **फेसिस आफ्टर द स्टार्म** को सर्वोत्तम सूचना फिल्म का 1981 का राष्ट्रीय पुरस्कार मिला। उनके वृत्त चित्र **क्लासिकल डॉस फार्मस ऑफ इंडिया कोडिअट्टम** को **1986** का सर्वोत्तम कला/सांस्कृतिक फिल्म का पुरस्कार संयुक्त रूप से मिला। उन्होंने तीन फीचर फिल्में- **हिप-हिप हुर्रे** (1984) **दामुल** (1984) और **परिणति** (1986) बनाई हैं। **दामुल** को 1984 का सर्वोत्तम कथाचित्र का और **परिणति** को सर्वोत्तम वेशभूषा का राष्ट्रीय पुरस्कार मिला।

PRAKASH JHA completed his course in film editing at the FTII, Pune in 1976. He has made notable documentaries like FACES AFTER THE STORM (1982) which won the National Award for the Best Information Film of 1981 and CLASSICAL DANCE FORMS OF INDIA - KOODIATTAM, which shared the Award for the Best Arts/Cultural Film of 1986. His three feature films are HIP HIP HURRY (1984), DAMUL (1984), which won the National Award for the Best Feature Film of 1984 and PARINATI (1986) which won the Best Costume Designing Award for that year.

सर्वोत्तम कृषि फिल्म

अंगोरा फॉर वूल

निर्माता **डी. गौतमन, फिल्म प्रभाग** को रजत कमल और 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक **के. जगजीवन राम** को रजत कमल और 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम कृषि (पशुपालन डेरी आदि सहित) फिल्म का 1987 का पुरस्कार **अंगोरा फॉर वूल** को दिया गया है, जिसमें पहाड़ों के लोगों को सीधे-साधे ढंग से यह समझाया गया है कि वे उन के लिए अंगोरा खरगोशों को पालने का धंधा अपनाये जो अपेक्षाकृत नया तथा अधिक आमदनी देने वाला है।

award for the best agricultural film (to include subjects related to and allied to agriculture like animal husbandry, dairying, etc.

ANGORA FOR WOOL

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the producer D. GAUTAMAN, FILMS DIVISION

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Director K. JAGAJIVAN RAM.

Citation:

"The Award for the Best Agricultural Film including Animal Husbandry/Dairying etc. of 1987 is given to ANGORA FOR WOOL for its simplicity and straightforwardness in advising the people of hilly regions to adopt the comparatively new and remunerative occupation of rearing angora rabbits for their wool."

डी. गौतमन ने भारतीय फिल्म तथा टेलीविज़न संस्थान पुणे से प्रथम श्रेणी में डिप्लोमा प्राप्त किया। उन्होंने अपना फिल्मी जीवन मलयालम फिल्म निर्देशक रामू करियत के मुख्य सहायक के रूप में आरंभ किया। उन्होंने फिल्म प्रभाग के लिए 60 से भी अधिक वृत्तचित्रों का निर्माण और निर्देशन किया है तथा अनेक राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त किए हैं।

D. GAUTAMAN is a First Class first diploma holder from the FTII, Pune. He started his career as Chief Assistant to the Malayalam film director Ramu Kariat. As producer and director, he has made more than 60 documentaries for Films Division and has won several National Awards over the years.

के. जगजीवन राम ने बंगलौर के एस.जे. पोलीटेक्निक से छायांकन में डिप्लोमा प्राप्त किया है। इस समय वे फिल्म प्रभाग के दिल्ली कार्यालय में उपनिदेशक के रूप में कार्य कर रहे हैं। उनकी फिल्म **अंगोरा फार वूल** को इससे पहले चेकोस्लोवाकिया में नीत्रा कृषि फिल्म समारोह में भी पुरस्कार मिल चुका है।

K. JAGAJIVAN RAM is a diploma holder in Cinematography from the S.J. Polytechnic, Bangalore. At present he is working as a Deputy Director with the Delhi unit of Films Division. His film ANGORA FOR WOOL has earlier been awarded in the Nitra Agro Film Festival in Czechoslovakia.

सर्वोत्तम ऐतिहासिक पुनर्निर्माण/संकलन फिल्म

द स्टोरी ऑफ देहली

निर्माता **मैसर्स सरबजीत इन्टरनेशनल (फिल्म प्रभाग** के लिए) को रजत कमल और 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक **सरबजीत सिंह** को रजत कमल और 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम ऐतिहासिक पुनर्निर्माण/संकलन फिल्म का 1987 का पुरस्कार **द स्टोरी ऑफ देहली** को भारत की महान राजधानी के वास्तुशिल्प संबंधी इतिहास को नये ढंग से कलात्मक शैली में प्रस्तुत करने के लिए दिया गया है। जिसमें देखने वालों को महसूस होता है कि वे भी इस नगर के विकास के साक्षी और हिस्सेदार हैं और साथ ही इस महान नगर का वासी होने पर उन्हें गर्व अनुभव होता है।

award for the best historical reconstruction/compilation film

THE STORY OF DELHI

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Producer SERBJEET INTERNATIONAL (For FILMS DIVISION)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Director SERBJEET SINGH

Citation :

"The Award for the Best Historical Reconstruction/Compilation Film of 1987 is given to THE STORY OF DELHI for its aesthetic and innovative presentation of the architectural history of a great capital city, giving the viewer the sense of being a paritcipant-observer in its evolution and thus a sense of pride in belonging to such a city."

सरबजीत सिंह ने पिछले चालीस वर्षों में 175 से अधिक लघु फिल्मों और लंबे वृत्तचित्रों का निर्देशन किया है। उनकी पहली फिल्म **आपरेशन हिमालय** 1948 में कश्मीर और लद्दाख में हुए युद्ध के बारे में थी। इसके बाद उन्होंने हिमालय पर और फिल्में बनाईं। लद्दाख पर तीस मिनिट की फिल्म **लैस्ट आई फोरगेट दी** को 1951 में पांचवें एडिनबर्ग के अन्तरराष्ट्रीय फिल्म समारोह में योग्यता प्रमाण पत्र मिला। उनकी पहली फीचर फिल्म **दि एवलांच** (अंग्रेजी) को 1964 की अंग्रेजी की सर्वोत्तम क्षेत्रीय फिल्म के लिए राष्ट्रपति का रजत पदक प्राप्त हुआ। इस फिल्म का संगीत रवि शंकर ने दिया था। हाल के वर्षों में उन्होंने अनेक फिल्में बनाई हैं, जिनमें उल्लेखनीय हैं – **गॉडमेन ऑफ गंगा** (1976), जिसमें बीटल जार्ज हैरिसन और जान लेनन ने भाग लिया, **एनकाऊंटर विद द गाड्स** (1986) और **डेस्टिनेशन निर्वाण**। इस समय वे एक दूरदर्शन सीरियल बना रहे हैं। इसमें हिमालय की संस्कृति और जनजीवन का चित्रण किया जाएगा।

SERBJEET SINGH has produced and directed over 175 short films and longer documentaries in the past 40 years. His first film of the actual battle operations in Kashmir and Ladakh in 1948, OPERATION HIMALAYA, was followed by many other films on the Himalayas. LEST I FORGET THEE a 30 minute film on Ladakh won a certificate of merit at the Fifth Edinburgh International Film Festival in 1951. His first feature film, THE AVALANCHE (English), with music by Ravi Shankar, won the President's Silver Medal for the Best Regional Film in Englishof the year 1964 Out of the many films made by him in recent years, the more notable are GODMEN OF GANGA (1976) with Beatles George Harrison and John Lennon, ENCOUNTERS WITH THE GODS (1986) and DESTINATION NIRVANA. He is presently working on a television serial which seeks to depict the legend, folklore, art and culture of the Himalayas.

सामाजिक विषयों पर सर्वोत्तम फिल्म

संकल्प

निर्माता **मध्य प्रदेश फिल्म विकास निगम लि०** को रजत कमल और 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक **राजेन्द्र जांगले** को रजत कमल और 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सामाजिक विषयों पर सर्वोत्तम फिल्म का 1987 का पुरस्कार **संकल्प** को बांध के निर्माण तथा उसके फायदों और प्रगति में उसके योगदान जैसे सामान्य विषय को काव्यात्मक तथा समाज शास्त्रीय ढंग से प्रस्तुत करने के लिए दिया गया है।

award for the best film on social issues

SANKALP

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Producer MADHYA PRADESH FILM DEVELOPMENT CORPORATION LTD.

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Director RAJENDRA JANGLAY

"The Award for the Best Film on Social Issues of 1987 is given to SANKALP for rendering in a poetic and, at the same time, sociological manner, the ordinary theme of the construction of a dam, its allied good and its consequences that would be the harbinger of progress."

राजेन्द्र जांगले ने बंबई के जे. जे. इंस्टीच्यूट ऑफ एप्लाइड आर्टस में फोटोग्राफी में प्रशिक्षण लिया। 1985 में उन्होंने भारतीय फिल्म तथा टेलीविजन संस्थान से डिप्लोमा और फिल्म निर्देशन में स्नातकोत्तर डिप्लोमा प्राप्त किया। उन्होंने अनेक लघु कल्पित फिल्में तथा वृत्तचित्र बनाए हैं। इनमें से **बुद्धिजीवी** और **मांडू – द साइटेडल ऑफ जाय** कई राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय फिल्म समारोहों में दिखाए जा चुके हैं। इस समय वे भोपाल में मध्यप्रदेश माध्यम में सह-निदेशक (फिल्म्ज) के रूप में काम कर रहे हैं।

RAJENDRA JANGLAY took an apprentice training course in photography at the J.J. Institute of Applied Arts, Bombay. He received his diploma in Cinema with specialization on Motion Picture Photography and post diploma in Film Direction in 1985 from the FTII, Pune. He has made several short fiction and documentary films, of which BUDDHIJIVI and MANDU — THE CITADEL OF JOY were shown in several national and international film festivals. Presently he is working as an Associate Director (Films), in Madhya Pradesh Madhyam, Bhopal.

सर्वोत्तम शैक्षणिक/अभिप्रेरक फिल्म पुरस्कार

पानी

निर्माता **सुमित्रा भावे** को रजत कमल और 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार
निर्देशक **सुमित्रा भावे** को रजत कमल और 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम शैक्षणिक/अभिप्रेरक फिल्म का 1987 का पुरस्कार **पानी** को यह दर्शाने के लिये दिया गया है कि अपना हाथ जगन्नाथ है और विकास प्रक्रिया में ही व्यक्तिगत तथा सामाजिक समस्याओं के समाधान की दिशा में पहल की जा सकती है और समस्यायें हल हो सकती हैं।

award for the best educational/motivational film

PANI

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the producer SUMITRA BHAVE

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Director SUMITRA BHAVE

Citation :

The Award for the Best Educational/Motivational Film of 1987 is given to PANI for expounding that self-help is the best help and that solutions to individual problems or those of a society can be initiated and completed successfully even within the development process.'

सुमित्रा भावे का जन्म 1943 में हुआ। उन्होंने राजनीति शास्त्र और समाज शास्त्र में एम.ए. किया तथा टाटा सामाजिक विज्ञान संस्थान से ग्रामीण कल्याण में डिप्लोमा प्राप्त किया। वे पर्यावरण और सामाजिक कार्यों के क्षेत्र में अनुसंधान, अध्यापन तथा समन्वय से सक्रिय रूप से संबद्ध रही है तथा इन क्षेत्रों में स्वयं-सेवी संस्थाओं द्वारा किए जा रहे काम में रूचि लेती रही हैं। इस विषय पर उन्होंने मराठी पत्र पत्रिकाओं में कई लेख भी लिखे हैं। मराठी में उनकी दो पुस्तकें भी छपी हैं। इस समय वे महिलाओं की गतिविधियों तथा महिलाओं से संबंधित प्रचलित धारणाओं के बारे में अध्ययन कर रही है। वे आकाशवाणी दिल्ली में मराठी समाचार वाचिका भी रही हैं। उन्होंने कई दृश्य-श्रव्य कार्यक्रमों के लिए भी काम किया है। उनकी फिल्म **बाई** को गैर कथाचित्र वर्ग में सर्वोत्तम समाज कल्याण/परिवार कल्याण फिल्म का 1985 का राष्ट्रीय पुरस्कार मिला। **पानी** उनके द्वारा निर्मित, लिखित और निर्देशित दूसरा वृत्तचित्र है।

SUMITRA BHAVE was born in 1943. She has done her M.A. in Political Science and Sociology and a Diploma in Rural Welfare from the Tata Institute of Social Science. She has been very actively involved in research, teaching and coordination in the areas of sociology and social work and has been associated deeply with voluntary work in these fields as well. In connection with this work, she has also published several articles in Marathi periodicals as well as two books in Marathi. She is currently engaged in research on women activists and a study of myths of women. She has been a Marathi Newsreader with All India Radio, New Delhi and has produced, scripted and photographed a number of audiovisual shows. Her film BAI won the National Award for the Best Social Welfare/Family Welfare non-feature film of 1985. PANI is the second documentary film written, produced and directed by her.

सर्वोत्तम खोजी/साहसिक (खेल सहित) फिल्म

अंटार्कटिका–ए कन्टीन्युइंग मिस्ट्री (समाचार चित्र संख्या 101)

निर्माता **विजय बी. चन्द्रा, फिल्म प्रभाग** को रजत कमल और 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक **महेश काम्बले** को रजत कमल और 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम खोजी/साहसिक (खेल सहित) फिल्म का 1987 का पुरस्कार **आंटार्कटिका–ए कन्टीन्युइंग मिस्ट्री (समाचार चित्र संख्या 101)** को अंटार्कटिका में किये गये वैज्ञानिक परीक्षणों को साहसपूर्ण तथा काव्यात्मक ढंग से चित्रित करने के लिए दिया गया है।

award for the best exploration/ adventure film (to inculde sports)

ANTARCTICA — A CONTINUING MYSTERY (NEWS MAGAZINE NO. 101)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Producer VIJAY B. CHANDRA, FILMS DIVISION

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Director MAHESH KAMBLE

Citation :

"The Award for the Best Exploration/Adventure Film (including Sports) of 1987 is given to ANTARCTICA — A CONTINUING MYSTERY (NEWS MAGAZINE NO. 101) for its daring and poetic coverage of scientific experiments carried out in Antarctica.

विजय बी. चन्द्रा फिल्म प्रभाग में मुख्य निर्माता के पद पर हैं। वे अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त निर्माता एवम सर्वोत्तम टेलीविजन फिल्म निर्माण संगठनों के साथ कार्य करते हुए जन संचार में विशिष्ठता प्राप्त कर चुके हैं। 30 वर्षों के फिल्म निर्माण अनुभव में उन्होंने फिल्म निर्माण की सभी तकनीकी कुशलतायें प्राप्त कर ली हैं और अब तक निर्देशक, पटकथा लेखक, छायाकार, एवं निर्माता के रूप में लगभग 400 लघु फिल्मों में कार्य कर चुके हैं। उन्होंने अब तक 20 अन्तर्राष्ट्रीय और 10 राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त किये हैं। 5486 मीटर की ऊँचाई पर हिमालय अभियान से सम्बन्धित फिल्म के ये प्रथम भारतीय छायाकार हैं जिन्होंने इस कार्य को बड़ी निपुणता के साथ किया है। समाचार चित्र (1957) के छायांकन कार्य को विशेष रूप से सराहा गया है। **द ब्रोकन वास** (1962) में पटकथा लेखक, निर्देशक और छायाकार के रूप में इनके कार्य को मैरी सीटन ने एक विशेष प्रयोगात्मक फिल्म निर्माता का कौशल बताया है। ये सूचना एवम प्रसारण मंत्रालय तथा फिल्म प्रभाग के जनसंचार सुविज्ञ के रूप में प्रतिनिधित्व कर चुके हैं।

उनको डा. जॉन ग्रीयरसन के साथ राष्ट्रीय महत्ता रखने वाले कार्यक्रमों को बनाने के लिए प्रभावशाली योजना तैयार करने का सौभाग्य भी प्राप्त हुआ।

VIJAY B. CHANDRA is currently Chief Producer, Films Division. He has specialised in mass communication, working with the best TV and film-producing organisations and eminent film-makers of international renown. With over three decades of experience, he has acquired the skills of all aspects of film-making and has a distinguished list of 400 short films of a varied nature to his credit — as director, script-writer, cinematographer and creative producer. Winner of over 20 international and 10 national awards, he has been accorded special recognition as the first Indian cameraman to cover an expedition in the Himalayas at a height of 5,486 metres (Rupkund); a prestige cameraman for newsreel photography (1957), and as a significant experimental film-maker by Marie Seaton for his efforts as a script-writer, director and cameraman of THE BROKEN VASE (1962). He has represented the Ministry of Information and Broadcasting as also the Film Division as a mass-communication expert and has had the privilege of working closely with Dr. John Grierson in formulating an effective strategy for programmes of national importance for India.

महेश काम्बले सर जे.जे. इंस्टीच्यूट ऑफ अप्लाइड आर्ट, बम्बई के छात्र हैं तथा फिल्म प्रभाग में छायाकार के पद पर कार्य कर रहे

हैं। ये लघु फिल्मों के लिए अनेक राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त कर चुके हैं। इनकी लघु फिल्म **हाई एडवेंचर आन व्हाईट वाटर्स** को प्रथम भारतीय लघु फिल्म निर्माता संघ बम्बई द्वारा आयोजित पुरस्कारों के निर्णायक मण्डल ने विशेष सराहना प्रमाण पत्र भी प्रदान किया है।

MAHESH KAMBLE, Cameraman, Films Division, is a student of the Sir J.J. Institute of Applied Art, Bombay. He has won national and international awards for his camera work in several documentaries, including HIGH ADVENTURE ON WHITE WATERS, produced by Films Division in 1986, which recently claimed the Jury's Special Certificate in the Ist Indian Documentary Producers Association's Excellence Awards, held in Bombay.

सर्वोत्तम समाचार चित्र पुरस्कार

कलर्स ऑफ लाइफ (समाचार चित्र संख्या 100)

निर्माता **प्रीतम एस. अर्शी, फिल्म प्रभाग** को रजत कमल और 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

छायाकार **महेश पी. सिन्हा** और **सन्तलाल प्रसाद** को रजत कमल और 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम समाचार चित्र का 1987 का पुरस्कार **कलर्स ऑफ लाइफ (समाचार चित्र संख्या 100)** को मुंह में ब्रश पकड़कर चित्र बनाने वाले एक विकलांग कलाकार जयन्तीलाल शैहोरा की जीवन के माध्यम से यह सन्देश देने के लिए दिया गया है कि विकलांग भी दूसरे लोगों की तरह जिन्दगी बिता सकते हैं।

award for the best news film

COLOURS OF LIFE (NEWS MAGAZINE NO. 100)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Producer PRITAM S. ARSHI, FILMS DIVISION

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Cameramen MAHESH P. SINHA, SANT LAL PRASAD

Citation :

"The Award of the Best News Film of 1987 is given to COLOURS OF LIFE (NEWS MAGAZINE NO. 100) for bringing out the message that the disabled can also live and work like others through the narration of the successful human story of a handicapped artist Jayantilal Shihora, who paints holding the brush in his mouth."

प्रीतम एस.अर्सी, ने 1960 में कमेन्ट्री लेखक के रूप में फिल्म प्रभाग में कार्यभार सम्भाला। आजकल वे वरिष्ठ कमेन्ट्री लेखक के पद पर कार्य कर रहे हैं। इसके अतिरिक्त वे फिल्म प्रभाग में न्यूज रील निर्माता के रूप में भी कार्य कर रहे हैं। वे 400 से अधिक समाचार चित्र एवम् 100 के लगभग न्यूज मैगजीन का निर्माण कर चुके हैं। 1986-87 में भी वे राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त कर चुके हैं। पंजाबी पत्रिकाओं में भी वे लगभग 100 से अधिक लघु कहानियां लिख चुके हैं।

PRITAM S. ARSHI joined Films Division in 1960 as a Commentary Writer. Now working as a Senior Comentary Writer. Mr. Arshi has held other posts such as Producer (Newsreel). He has produced more than 400 Newsreels and over 100 News Magazines. Earlier, he won National Awards in 1986 and 1987. He has also written more than one hundred short stories for Punjabi Magazines.

महेश पी. सिन्हा फिल्म प्रभाग बम्बई में न्यूज रील अधिकारी हैं। वे 1977 एवं 1981 में सर्वोत्तम न्यूज रील पुरस्कार प्राप्त कर चुके हैं। 1984 में जर्मनी में आयोजित 13 वें अन्तर्राष्ट्रीय कृषि फिल्म समारोह में सिल्वर इयर पुरस्कार से उन्हें सम्मानित किया गया।

MAHESH P. SINHA is a Newsreel Officer in Films Division, Bombay. He has won many National and International awards, including the Best Newsreel Awards in 1977 and in 1981, and a Silver Ear Award in 13th International Agricultural Film Festival, held in West Berlin, Germany, in 1984.

सन्तलाल प्रसाद फिल्म प्रभाग बंगलौर में सहायक न्यूज रील अधिकारी हैं। वे फिल्म प्रभाग के अनेक न्यूज रील एवम ब्रत्तचित्रों का छायांकन कर चुके हैं। छायाकार के रूप में ये उनका दूसरा राष्ट्रीय पुरस्कार है।

SANTLAL PRASAD is an Assistant Newsreel Officer with Films Division, Bangalore and has worked as a Cameraman for many Films Division newsreels and documentaries. This is his 2nd National Award as Cameraman.

सर्वोत्तम कार्टून फिल्म पुरस्कार

एंडगेम

निर्माता **बी.आर. शेंडगे, फिल्म प्रभाग** को रजत कमल और 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक **अरूण गोंगड़े** को रजत कमल और 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

कार्टूनकार **अरूण गोंगड़े** को रजत कमल और 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम कार्टून-फिल्म का 1987 का पुरस्कार **एंडगेम** को दृश्य रूपक को साकार रूप में प्रस्तुत करने में कार्टून कला का प्रभावशाली ढंग से इस्तेमाल करने के लिए दिया गया है। इस फिल्म में यह दर्शाया गया है कि परमाणु विनाश संसार के सिर पर मंडरा रहा है जबकि बड़ी ताकतें एक ऐसा घातक खेल खेल रही हैं जिसमें जीत किसी की भी नहीं होगी।

award for the best animation film

ENDGAME

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Producer B.R. SHENDGE, FILMS DIVISION

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Director ARUN GONGADE

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Animator ARUN GONGADE

Citation :

'The Award for the Best Animation Film of 1987 is given to ENDGAME for effectively using the medium of animation to make a visual metaphor come alive; the shadow of nuclear annihilation looms over the world, as superpowers play a deadly game which has no winners.'

बी.आर. शेंडगे ने ड्राईंग और चित्रकला में डिप्लोमा प्राप्त किया है और वे एक सिद्धहस्त कलाकार हैं। वे 1961 से फिल्म प्रभाग की कार्टून फिल्म इकाई में काम कर रहे हैं। उन्हें अनेक कार्टून फिल्मों के लिए राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कार मिले हैं। इनमें उल्लेखनीय हैं – **अम्ब्रेला, सिन्थेसिस, ला आफ नेचर**, एवम् **प्रेशस वाटर**। उनकी फिल्म **वार्ली पेंटिंग** को सर्वोत्तम कला/सांस्कृतिक फिल्म का 1985 का राष्ट्रीय पुरस्कार मिला।

B.R. SHENDGE is a diploma holder in drawing and painting and a qualified Art Master. He joined the Cartoon Film Unit of Films Division in 1961. He has won National and international awards for many of his animated and cartoon films such as UMBRELLA, SYNTHESIS, LAW OF NATURE and PRECIOUS WATER. He has also won a National Award as producer of WARLI PAINTING, the Best Arts/Cultural Film of 1985.

अरूण गोंगड़े भी फिल्म प्रभाग में काम करते हैं। उन्होंने कमर्शियल आर्ट में डिप्लोमा प्राप्त किया है। उन्हें पोस्टरों के लिए कई पदक मिले हैं। दहेज के बारे में उनके वृत्तचित्र **विदाई** का 1984 में राष्ट्रीय पुरस्कार निर्णायक मंडल ने विशेष उल्लेख किया। उन्हें 1986 के **सर्वोत्तम कार्टून फिल्म ए.बी.सी.** के निर्देशक तथा कार्टूनकार का राष्ट्रीय पुरस्कार भी दिया गया।

ARUN GONGADE is a diploma holder in commercial art and works for Films Division. He has won medals for posters and his documentary BIDAAI, on dowry, received a Special Mention from the National Awards Jury in 1984. He has also won the National Award as director and animator of the Best Animation Film of 1986, A B SEE.

निर्णायक मण्डल विशेष पुरस्कार

राजीव मेहरोत्रा

निर्देशक **राजीव मेहरोत्रा** को रजत कमल और 8,000 - रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

निर्णायक मण्डल का 1987 का विशेष पुरस्कार **राजीव मेहरोत्रा** को उनकी फिल्म **बैरन हारवेस्ट** में पूर्वी उत्तर प्रदेश के सूखाग्रस्त इलाकों में आयोडीन की कमी की समस्या को सृजनात्मक तथा संवेदनशील ढंग से चित्रित करने के लिए दिया गया है।

special jury award

RAJIV MEHROTRA

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 8,000/- to the Director RAJIV MEHROTRA.

Citation :

The Special Jury Award of 1987 is given to RAJIV MEHROTRA for his sensitive and creative handling of the serious iodine deficiency in flood-prone areas of Eastern U.P. in the film BARREN HARVEST.

राजीव मेहरोत्रा ने सेंट स्टीफन कालेज दिल्ली से अंग्रेजी साहित्य में और आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय से राजनीति शास्त्र तथा अर्थशास्त्र में शिक्षा प्राप्त करने के बाद न्यूयार्क में कोलम्बिया विश्वविद्यालय से फिल्मों में स्नातकोत्तर डिग्री प्राप्त की। उन्होंने निर्देशक, छायाकार, संपादक, लेखक और उद्घोषक के रूप में पचास से अधिक लघु फिल्मों में काम किया है। इनमें प्रमुख फिल्में हैं : **एस्केप टू नोवेयर, अमरनाथ सहगल – ए पोर्ट्रेट, आशियन आफ विस्डम, द स्टील दी स्क्राउज, रूट्स एंड विंग्स** तथा **द ड्राप दैट मैक्स द ओशियन**। उन्हें इनलेक्स फाऊंडेशन से फैलोशिप तथा ब्रिटिश कौंसिल, यूनेस्को और वारनर ब्रदर्स, होलीवुड से अनुदान मिला है। उन्होंने कोलम्बिया में रहते हुए मिलोस फोरमेन और राबर्ट यंग जैसे सुप्रसिद्ध फिल्म निर्माताओं के साथ काम किया। वे नई दिल्ली के जामिया मिलिया जन संचार अनुसंधान केन्द्र में अतिथि प्राध्यापक के रूप में काम कर चुके हैं। वे राष्ट्रीय जन सेवा संचार परिषद के सदस्य और भारतीय वृत्तचित्र निर्माता संघ के क्षेत्रीय समन्वयकर्ता हैं। वे राष्ट्रीय एकता के कार्यक्रमों के लिए दूरदर्शन समिति के सदस्य भी हैं। वे नाटकों में भी भाग लेते थे तथा दूरदर्शन पर संवाददाता, उद्घोषक और कार्यक्रम संचालक के रूप में प्रायः दिखाई देते हैं।

RAJIV MEHROTRA obtained a post graduate degree in film from Columbia University in New York after undergraduate work in Politics and Economics at Oxford University and English Literature at St. Stephen's College, Delhi. He has worked on over 50 short films as director, cinematographer, editor, writer and narrator including ESCAPE TO NOWHERE, AMAR NATH SEHGAL — A PORTRAIT, OCEAN OF WISDOM, THE STEALTHY SCOURGE, ROOTS AND WINGS and THE DROP THAT MAKES THE OCEAN. He has won a fellowship from the INLAKS Foundation and grants form the British Council, UNESCO and Warner Brothers in Hollywood. He has worked under well-known filmmakers like Milos Forman and Robert Young while at Columbia. He has worked as a visiting professor at the Jamia Milia Mass Communications Research Centre, New Delhi, a member of the National Council for Public Service Communications, a regional Coordinator for the Indian Documentary Producers' Association and a member of the Doordarshan Committee for programming for national integration. He has also been involved in amateur dramatics and is a familiar face on television as a correspondent, commentator and programme anchor.

सर्वोत्तम लघु कल्पित फिल्म

(70 मिनट तक की अवधि की फिल्में)

द एट कालम अफेयर

निर्माता **भारतीय फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान, पुणे के निर्देशक** को रजत कमल और 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक **श्रीराम राघवन** को रजत कमल और 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम लघु कल्पित फिल्म का 1987 का पुरस्कार **द एट कालम अफेयर** को दृश्य बिम्बों के यथार्थहीन समुच्चय को एक साथ प्रस्तुत करने में फिल्म तकनीक का कल्पनापूर्ण ढंग से उपयोग करने के लिए दिया गया है जिससे कथा और उभर कर सामने आती है तथा उसमें हास्य व्यंग का पुट भी रहता है।

short fiction film (films not exceeding 70 minutes duration)

THE EIGHT COLUMN AFFAIR

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Producer THE DIRECTOR, FILM AND TELEVISION INSTITUTE OF INDIA, PUNE.

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Director SHRIRAM RAGHAVAN.

Citation :

"The Award for the Best Short Fiction Film of 1987 is given to THE EIGHT COLUMN AFFAIR for its innovative use of cinematic techniques to put together a surrealistic collage of visual that add up to a delightfully brisk narrative, full of whimsical homour."

श्रीराम राघवन का जन्म 1960 में हुआ। उन्होंने पुणे के फर्गुसन कालेज से बी.ए. किया और 1987 में भारतीय फिल्म तथा टेलीविजन संस्थान से निर्देशन में डिप्लोमा प्राप्त किया। **द एट कालम अफेयर** उनकी डिप्लोमा फिल्म है।

SHRIRAM RAGHAVAN was born in 1960. He did his Arts from Ferguson College, Pune and has completed his Diploma course in Direction at the FTII, Pune in 1987. THE EIGHT COLUMN AFFAIR is his Diploma film.

सिनेमा लेखन पुरस्कार

AWARDS FOR WRITING ON CINEMA

सर्वोत्तम सिनेमा पुस्तक पुरस्कार

काझायुदे अशांति (मलयालम)

लेखक **बी. राजकृष्णन** को रजत कमल और 10,000/-रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम सिनेमा पुस्तक का 1987 का पुरस्कार **बी. राजकृष्णन** को उनकी पुस्तक **काझायुदे अशांति (देखने का दुख)** के लिए दिया गया है। जिसमें उन्होंने राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय सिनेमा के प्रमुख पहलुओं का उल्लेख किया है और फिल्म समीक्षा को गम्भीर कला शैली के रूप में विकसित किया है। पुस्तक में आधुनिक समाज की बुनियादी समस्याओं को चित्रित करने में फिल्मों की सार्थकता पर बल दिया गया है।

award for the best book on cinema

KAZHCHAYUDE ASANTHI (TORMENTS OF SEEING) in Malayalam

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the author V. RAJAKRISHNAN

Citation:

"The Award for the Best Book on Cinema for the year 1987 is given to V. RAJAKRISHNAN for his book KAZHCHAYUDE ASANTHI (TORMENTS OF SEEING) for focussing on the major trends and impulses in National and International cinema, for promoting the appreciation of cinema as a serious art form, for underlining the relevance of cinema in the depiction of the basic concerns of present day society."

वी. राजकृष्णन का जन्म 1949 में हुआ। वे इस समय केरल विश्वविद्यालय में अंग्रेजी विभाग में रीडर हैं। उनकी कुछ शिक्षा विदेशों में हुई। वे मलयालम साहित्य में युवा पीढ़ी के आधुनिकतावादी समीक्षक माने जाते हैं। उन्होंने अब तक दो मुख्य समीक्षा पुस्तकें और लगभग चार दर्जन लेख लिखे हैं। हाल के वर्षों में उन्होंने फिल्मों के बारे में काफी लिखा है। **काझायुदे अशांति** मलयालम में उनकी पहली फिल्म पुस्तक है।

नाटकों में भी उनकी काफी रुचि रही है। अमरीका में रुटगर्स विश्वविद्यालय में आधुनिक अमरीकी नाटक विषय पर उन्होंने शोध किया और डाक्टर की डिग्री प्राप्त की। उनका शोध प्रबन्ध हाल ही में पुस्तक के रूप में प्रकाशित हुआ है, जिसे भारत में अमरीकी सूचना सेवा की ओर से पुरस्कार मिला।

उन्होंने भारतीय सिनेमा की प्लेटीनम जयन्ती के सिलसिले में प्रकाशित होने वाली पुस्तक में संकलन के लिए मलयालम सिनेमा पर एक लेख दिया है। वे त्रिवेन्द्रम के क्षेत्रीय फिल्म प्रमाणन बोर्ड के सदस्य भी हैं।

V. RAJAKRISHNAN was born in 1949 and is at present working as a Reader in the English Department of Kerala University in Trivandrum. Born in Kerala and partly educated abroad, he has made his mark on the Malayalam literary scene as a modernist critic of the younger generation. He has to his credit two major critical studies and some four dozen articles which have appeared in various journals. In recent years, he has written extensively on film aesthetics, and TORMENTS OF SEEING is his first book on cinema in Malayalam.

His interest in films is an extension of his keen association with the theatre. A doctorate holder in modern American drama, who had researched at the Rutgers University in the U.S.A. on a Fulbright Fellowship, he has recently published a recast version of his doctoral dissertation (which won him an award from the USIS in 1984) under the title, THE CRUCIBLE AND THE MISTY TOWER. He has contributed an article on Malayalam Cinema to a book which is being published by the Film Federation of India in connection with the Platimum Jubilee of the Indian Cinema. He is a member of the Regional Board of Film Certification at Trivandrum.

सर्वोत्तम फिल्म पत्रकार पुरस्कार

ब्रजेश्वर मदान

फिल्म पत्रकार **ब्रजेश्वर मदान** को रजत कमल और 5,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम फिल्म पत्रकार का 1987 का पुरस्कार **ब्रजेश्वर मदान** को फिल्म समीक्षा के प्रति उनकी गहन दृष्टि और फिल्म समीक्षा तक सीमित न रह कर फिल्म निर्माण के व्यापक पहलुओं का विवेचन करने तथा फिल्मों के सामाजिक संदर्भ में उनके विषय और प्रस्तुतीकरण का विश्लेषण करने के लिए दिया गया है।

award for the best film journalist

BRAJESHWAR MADAN

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 5,000/- to the Film Journalist BRAJESHWAR MADAN.

Citation :

"The Award for the Best Film Journalist of 1987 is given to BRAJESHWAR MADAN for his indepth approach to film appreciation, not limited solely to film reviewing, but extending to the wider aspects of film making, and analysing the theme and treatment of the films for their social relevance."

ब्रजेश्वर मदान का जन्म 20 अगस्त 1944 को हुआ। वे पिछले 25 वर्षों से राष्ट्रीय पत्र-पत्रिकाओं में गम्भीर लेखन कार्य एवम समीक्षात्मक लेख लिख रहे हैं। वे एक सुप्रसिद्ध कहानिकार भी हैं। 1985-86 के लिए इनका कहानी संग्रह **लैटर बक्स** हिन्दी अकादमी दिल्ली द्वारा पुरस्कृत किया जा चुका है।

BRAJESHWAR MADAN was born in 1944 and has been writing seriously on films in national newspapers and journals for the last 25 years. He is also a well-known writer of stories. His collection of stories, LETTER BOX, was awarded by the Hindi Academy, Delhi for the year 1985-86.

विशेष उल्लेख

गैर कथाचित्र निर्णायक मण्डल ने **अशोक गुंजाल** को उनके गैर कथाचित्र **द किंगडम ऑफ गॉड** में सौन्दर्यात्मक तथा तकनिकी निपुणता से परिपूर्ण छायांकन कार्य के लिए विशेष उल्लेख किया है।

पुरस्कार जो नहीं दिए गए

कथाचित्र निर्णायक मण्डल ने निम्नलिखित पुरस्कार नहीं दिए:

1. परिवार कल्याण सम्बन्धी सर्वोत्तम फिल्म
2. सर्वोत्तम गुजराती फिल्म
3. सर्वोत्तम तेलगू फिल्म
4. संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल भाषाओं से भिन्न उस भाषा के सर्वोत्तम कथाचित्र के लिए जिसमें प्रविष्टियों 5 फिल्मों से कम हों।

निम्नलिखित भाषाओं में प्रविष्टियां प्राप्त नहीं हुई:

1. कश्मीरी
2. पंजाबी
3. संस्कृत
4. सिन्धी
5. उर्दू
6. संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल भाषाओं से भिन्न उस भाषा के सर्वोत्तम कथाचित्र के लिए जिसमें कम से कम 5 फिल्में प्रविष्ट की गई हैं।

SPECIAL MENTION

The Non-Feature Film Jury makes a Special Mention of ASHOK GUNJAL for his aesthetically pleasing and technically proficient camerawork in the film THE KINGDOM OF GOD.

AWARDS NOT GIVEN

The Feature Film Jury did not give the following awards:

1. Best Film on Family Welfare
2. Best Feature Film in Gujarati
3. Best Feature Film in Telugu
4. Best Feature Film in a language other than those specified in Schedule VIII of the Constitution and in which the entries are less than five.

There were no entries in the following languages:

1. Kashmiri
2. Punjabi
3. Sanskrit
4. Sindhi
5. Urdu
6. A language other than those specified in Schedule VIII of the Constitution and in which a minimum of five films were entered.

कथासार : कथा चित्र

SYNOPSES: FEATURE FILMS

अनन्तरम्

मलयालम/रंगीन/35 एम.एम./125 मिनट

निर्माण : के. रवीन्द्रनाथन नायर **निर्देशन और पटकथा** : अडूर गोपालकृष्णन **अभिनय** : अशोकन, शोभना, मम्मूटी, मास्टर वी. सुधीश, मास्टर सूरज, बी.के. नायर, बहादुर, वेंपायम, कवियूर पुनम्मा, अडूर पंकजम, चन्द्रन नायर **छाया** : रवि वर्मा राजा **ध्वनि आलेखन** : पी. देवदास, टी. कृष्णनुउन्नी, एन. हरि कुमार **सम्पादन** : एम. मनी **कला निर्देशन और वेशभूषा** : एन. शिवन **संगीत निर्देशन** : एम.बी. श्रीनिवासन

यह फिल्म अजयन की कहानी-या यौं कहिए कहानियां है। अजयन एक सुशील और भावुक नवयुवक है। प्रत्येक कहानी प्रथम पुरूष शैली में है जो एक-एक करके नई घटनाओं और संबंधों को उजागर करती जाती है।

अजयन अवाछनीय बच्चा था, जिसे उसके जन्म के पश्चात उसकी मां अस्पताल में छोड़कर चली गई थी।

अस्पताल का डॉक्टर उसकी जीवन रक्षा करता है। रिटायर होने के बाद वह अपने पुत्र की तरह उसका पालन पोषण करता है और उससे बेहद प्रेम करता है। अजयन में विलक्षण, सूझबूझ एवं बुद्धि है लेकिन वह स्कूल में पढ़ाई में जम नहीं पाता। उसे महसूस होता है कि समाज की कार्य शैली असाधारण बातों को पसंद ही नहीं करती और केवल सामान्य बातों को ही सहजता से स्वीकार करती है। समाज की जीवन शैली यह चाहती है कि चुपचाप इसका अनुसरण किया जाये। समाज अथवा परिवार, किसी से भी न जुड़ पाने के कारण उसके अंदर विषाद उत्पन्न हो जाता है।

पहली कहानी की समाप्ति तक अजयन अपने भाई की नवविवाहिता पत्नी के प्रति अपनी कुंठित भावनाओं के कारण ग्लानि और अपराध बोध से ग्रस्त हो जाता है।

अजयन का दिमाग स्मृतियों और कल्पनाओं के बीच घूमता रहता है। एक असम्भव संबंध को न्यायसंगत ठहराने के लिए घटनाएं एवं प्रभाव बदलते रहते हैं।

ANANTARAM

Malayalam/Colour/35mm/125 mins.

Production: K. Ravindranathan Nair **Direction and Screenplay:** Adoor Gopalakrishnan **Cast:** Ashokan, Shobana, Mammootty, Master V. Sudeesh, Master Sooraj, B.K. Nair, Bahadur, Vempayan, Kaviyoor Poonamma, Adoor Pankajam, Chandran Nair **Camera:** Ravi Varma Raja **Audiography:** P. Devadas, T. Krishnanunni, N. Harikumar **Editing:** M. Mani **Art Direction and Costume Design:** N. Sivan **Music Direction:** M.B. Srinivasan

The film is the story — or rather stories — of Ajayan, a gentle and sensitive young man. Each story, told in the first person narrative, brings forth new events and relationships into focus as it unfolds.

We learn of Ajayan's birth; an unwanted child, he is abandoned by his mother in the labour room of a hospital.

The doctor of the hospital rescues him and when he retires, brings Ajayan up like his own son, lavishing affection upon him.

As a schoolboy, Ajayan is a misfit. His sharp wit and exceptional brilliance prove his undoing. Society, he discovers, is essentially averse to anything out of the ordinary; it is more at home with the average. The very essentials of daily living depend on conformity and on compliance.

The impossibility of a fulfilling relationship with anyone, whether a family or within the society he finds himself in, the absence of a feeling of belonging, drives Ajayan to despondency.

As the first story drives to a close, Ajayan is riddled with guilt and remorse about his forbidden feelings for his foster-brother's young bride.

Ajayan's mind wanders between memory and imagination. Events and impressions are reconstructed to justify an impossible relationship. The real grows into the fantastic.

अन्तरयली यात्रा

बंगला/रंगीन/35 एम.एम./120 मिनट

निर्माण : राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम लि. **निर्देशन एवं पटकथा** : गौतम घोष **अभिनय** : शत्रुघन सिन्हा शम्पा घोष , प्रमोद गांगुली, बसन्त चौधरी, रबी घोष, सजल राय चौधरी, मोहन आगाशे **छायांकन** : गौतम घोष **ध्वनि आलेखन** : ज्योति चटर्जी, अनुप मुखर्जी **सम्पादन** : मोलोय बनर्जी **कला निर्देशन** : अशोक बोस **वेश भूषा** : नीलंजना घोष **संगीत निर्देशन** : गौतम घोष

अन्तरयली यात्रा महान सामाजिक परिवर्तन एवम् पुनर्जागरण के काल से सम्बान्धित है। 19 वीं शताब्दी में बंगाल में हिन्दु समाज के कई प्राचीन रीति-रिवाजों की सार्थकता पर संदेह प्रकट किया जा रहा था। ब्राह्मणों के प्राचीन शास्त्रों पर एकाधिकार को हिन्दु समाज के पश्चिमी समाज विशेषज्ञों ने खत्म किया और हिन्दू धर्म विधानों के अनुचित अर्थ, जो कि सदियों से विद्यमान थे, उनके विरूद्ध आवाज उठाई। इन रिवाजों में मूलत: विधवाओं के सती होने की प्रथा-सतीदाह थी।

इस फिल्म की पृष्ठभूमि से सम्बन्धित घटनायें 1829 के बाद की हैं और इस कहानी को उन महत्वपूर्ण सामाजिक घटनाओं के संदर्भ में देखना चाहिए, चाहे वे सती-प्रथा से सम्बन्धित भी न हों। यह वह समय था जबकि अन्य सामाजिक सुधार आन्दोलन जैसे हिन्दू विधवा पुनर्विवाह पूरे प्रवाह में थे। ये सब इस फिल्म को समझने में महत्वपूर्ण हैं। यह भारतीय इतिहास के उस काल को दर्शाती है जब एक आधुनिक राष्ट्र का निर्माण हो रहा था और एक ऐसा आन्दोलन जो कि आज भी जारी है।

ANTARYALI YATRA

Bengali/Colour/35 mm/120 mins.

Production: National Film Development Corporation **Direction and Screenplay:** Gautam Ghose **Cast:** Shatrughan Sinha, Shampa Ghose, Pramod Ganguli, Basant Chaudhury, Robi Ghosh, Sajal Roy Chaudhury, Mohan Agashe **Camera:** Gautam Ghose **Audiography:** Jyoti Chatterji, Anup Mukherji **Editing:** Moloy Banerji **Art Direction:** Ashok Bose **Costume Design:** Neelanjana Ghosh **Music Direction:** Gautam Ghose

The times in which Antaryali Yatra is set were times of great societal change and re-awakening. The Bengal Renaissance of the 19th century challenged many customs and practices that had established themselves in Hindu Society through antiquity. The Brahminical monopoly on the reading of ancient texts being broken, mainly by Western Indologists, several distorted interpretations of Hindu laws came to be challenged and, specially, the perverse rituals that these had perpetrated through the ages. Primary among them was Satidaha - the practice of burning widows on the funeral pyres of their husbands - or Suttee, as it came to be known to the western world.

This film takes places after 1829, and the story must be seen in the light of important social events, some of them not even directly related to the practice of Suttee itself. It belongs to a time when other reform movements, like the remarriage of Hindu widows, were in full force. All this is of consequence in the understanding of the film. It refers to a phase in Indian history from which a modern nation started to emerge, a movement that continues even today.

एकती जीबान

बंगला/रंगीन/35 एम.एम./135 मिनट

निर्माण : मैसर्स चलचित्र, **निर्देशन और पटकथा** : राजा मित्रा **अभिनय** : सौमित्र चटर्जी, माधवी चक्रवर्ती, ज्ञानेश मुखर्जी, मुन्ना चक्रवर्ती, अवेरी दत्त, **छाया** : कमल नायक, **ध्वनि आलेखन** : अनूप मुखर्जी, ज्योति चटर्जी, **सम्पादन** : बुलू घोष **कला निर्देशन** : शतदल मित्रा **वेषभूषा** : सुमिता मित्रा, **गीत** : रजनीकान्त, श्रीधर, राजा मित्रा, **पार्श्व गायक** : चण्डी दास मल **पार्श्व गायिका** : रूमा गुहा, प्रतिमा

गुरूदास भट्टाचार्य बंगाल के एक गांव में संस्कृत का अध्यापक है। पढ़ाते-पढ़ाते उसे ज्ञात होता है कि जो बंगला भाषा इस समय बोली जा रही, वह अपने मूल रूप से काफी अलग हो गई है और उसे नया महत्व मिल गया है। यह बात 1930 की है जब देश का विभाजन नहीं हुआ था।

गुरू दास बंगला भाषा का शब्दकोष तैयार करने का निश्चय करता है। यह बहुत बड़ा काम है और इस पर खर्च उठाना उसके परिवार के बस का नहीं है। हालाकि उसकी लड़की उसकी सहायता करती है लेकिन कलकत्ता के विद्वान उसे कोई सहयोग नहीं देते। किताबों की एक दुकान पर गुरूदास की मुलाकात एक नये लेखक से होती है जो भाषा शास्त्र के बारे में अपनी सारी पुस्तकें उसे दान करने को तैयार हो जाता है।

उसकी लड़की शिवानी की शादी तय हो चुकी है, लेकिन उसकी टाईफाईड से मृत्यु हो जाती है। उसका लड़का नवेन्द अपनी पढ़ाई आगे जारी नहीं रख पाता और रेलवे में नौकरी करने लगता है।

अन्त में गुरूदास को कलकत्ता का एक प्रकाशक मिल जाता है। इतने बड़े ग्रन्थ का लेखक होने के नाते उसे बहुत सम्मान मिलता है। उसका बेटा नवेन्दु अपने पिता को आधुनिक ज्ञान के तीर्थस्थल शांति निकेतन भेजने की व्यवस्था करता है। सम्मानित होने के बाद गुरूदास जब घर लौटता है तो उसे पता चलता है कि उसका बेटा दुर्घटना में मारा गया है।

EKTI JIBAN

Bengali/Colour/35 mm/135 mins.

Production : Chalchitra **Direction and Screenplay :** Raja Mitra **Cast :** Soumitra Chatterjee, Madhabi Chakravarti, Gyanesh Mukherjee, Munna Chakravarti, Avery Dutta **Camera :** Kamal Nayak **Audiography :** Anup Mukherjee, Jyoti Chatterji **Editing :** Bulu Ghosh **Art Direction :** Satadal Mitra **Costume Design :** Sumita Mitra **Lyrics :** Rajani Kanta, Sridhar, Raja Mitra **Male Playback Singer :** Chandi Das Mal **Femal Playblack Singer :** Ruma Guha, Protima

Gurudas Bhattacharya teaches Sanskrit in a Bengali village. He grows to discover, in his teachings, how spoken Bengali has evolved beyond its classical moorings to take on newer kinds of significances. The time is still the relatively peaceful 1930s, the village not yet the victim of Partition.

Gurudas decides to compile a dictionary of the language of Bengali. It is a mammoth task, beyond the meagre resources of his family. Although his daughter helps, the scholars in the big city of Calcutta are not cooperative. A young writer he meets in a bookshop is, however, enthusiastic enough to donate his entire collection of books on linguistics and philology to Gurudas.

His daughter Shibani, whose marriage has been arranged, dies of typhoid. His son Nabendu cannot continue his studies and takes a job in the railways. Finally, Gurudas finds a publisher in Calcutta. Immortality for the author of so definitive a compilation appears to be at hand. Nabendu arranges a visit for his father to Shantiniketan, that shrine of modern Bengali learing. When Gurudas returns from there he discovers that his son has been killed in an accident.

हलोधिया चोराय बाओधान खाए

असमिया/रंगीन/35 एम.एम./120 मिनट

निर्माण : शैलधर बरूआ, जानू बरूआ **निर्देशन और पटकथा** : जानू बरूआ **अभिनय** : इंदरा बनिया, पूर्णिमा पाठक सैकिया, हेमेन चौधरी, गौरव बनिया **छाया** : अनूप जोतवानी **ध्वनि आलेखन** : जतीन शर्मा **सम्पादन** : हेऊएन बरूआ **कला निर्देशन** : फटिक बरूआ **संगीत निर्देशन** : सत्य बरूआ **पार्श्व गायक** : सत्य बरूआ **पार्श्व गायिका** : रीता बरूआ।

राखेश्वर एक किसान है जो अपनी पत्नी तारू और पुत्र मोहन के साथ अपने छोटे से खेत में धान की खेती करके अपना गुजारा चलाता है। वर्षा देर से आती है लेकिन राखेश्वर सोचता है कि अब उसकी चिन्तायें दूर हो जायेंगी।

धनी जमींदार सनातन शर्मा राखेश्वर की जमीन पर अपना दावा करता है और कहता है कि उसके बाप ने यह जमीन गिरवी रखी थी। उसके पास अपने दावे को साबित करने के लिए कागज़ात हैं।

मुकदमे पर बहुत पैसा खर्च होता है। उसे क्लर्कों दलालों और कलेक्टर को रिश्वत भी देनी पड़ती है।

इस बीच सनातन विधानसभा के चुनाव के लिए खड़ा होता है। विपक्षी उम्मीदवार राखेश्वर के मामले को उछाल कर सनातन को बदनाम करते हैं।

कलेक्टर के दफतर में भी उसकी दलील पर सहानुभूति पूर्वक सुनवाई होती है। कलेक्टर महसूस करता है कि रखेश्वर के पास अपना दावा सिद्ध करने के लिए कोई कानूनी सबूत नहीं हैं, लेकिन वह उसे आश्वासन देता है कि उसके लिए वह कुछ करेगा। कलेक्टर सनातन से अनुरोध करता है कि वह जमीन पर अपना दावा छोड़ दे, क्योंकि विपक्ष के लोग इस मामले को उछालकर उसे राजनीति हानि पहुँचा रहे हैं।

सनातन को अपनी जमीन के कागज़ात वापस मिल जाते हैं। लेकिन जब वह चारों ओर लगे पोस्टरों में सनातन के हंसते हुए चेहरे को देखता है तो उसकी खुशी काफूर हो जाती है।

HALODHIA CHORAYE BAODHAN KHAI

Assamese/Colour/35 mm/120 mins.

Production : Sailadhar Barua, Jahnu Barua **Direction and Screenplay :** Jahnu Barua **Cast :** Indra Bania, Purnima Pathak Saikia, Hemen Choudhury, Gaurav Bania **Camera :** Anoop Jotwani **Audiography :** Jatin Sharma **Editing :** Heu-en Barua **Art Direction :** Phatik Barua **Music Direction :** Satya Baruah **Male Playback Singer :** Satya Baruah **Female Playback Singer :** Reeta Baruah

Rakheshwar is a farmer who survives with his wife Taru and son Mohen on the produce of his small paddy field. When the delayed monsoon arrives, he feels his worries for the year are over.

But the rich Sonathan Sharma claims the land was mortgaged to him by Rakheshwar's father and never redeemed. He has the papers to prove it.

Expenses are massive, in particular the various bribes that have to be paid to the clerks, the touts, the Collector himself.

Meanwhile, Sonathan is contesting the state Legislative elections. Theseare being bitterly fought and the opposition is attempting to make use of the Rakheshwar case to malign Sonathan.

An altercation in the Collector's office also brings a sympathetic audience from the Collector. The Collector realises that Rakheshwar has no legal evidence to back his claim, but promises do something about it. He persuades Sonathan to relinquish his claim over the land since the opposition has widely publicised the case and the political losses Sonathan might have to bear would be far greater.

Rakheshwar gets his papers back, but his joy is forestalled by the election posters of a laughing Sonathan surrounding him everywhere.

ऋतुभेदम

मलयालम/रंगीन/35 एम.एम./130 मिनट

निर्माण : थाम्सन फिल्म्स (प्रा.) लिमिटेड **निर्देशन** : प्रताप पोथन **पटकथा** : एम.टी. वासुदेवन नायर **अभिनय** : विनीत, गीता, बालाचन्द्र मेनन, मोनीषा **छाया** : अशोक कुमार **संपादन** : बी. लेनिन **कला निर्देशन** : एस. कोन्नानट **वेशभूषा** : एम.एम. कुमार **संगीत निर्देशन** : श्याम **गीत** : शंकरानारायणन **पार्श्व गायक** : के.जे. यसुदास.

केशु गांव में एकदम अकेला रहता है। उसके मां बाप की बचपन में ही मृत्यु हो जाती है। वह गांव के मुखिया नादुवन चेरि मुप्पिल नायर के छोट-छोटे काम करके गुजारा चलाता है और भविष्य के सपनों में खोया रहता है।

स्कूल में फेल हो जाने के बाद वह अपने सपने पूरे करने के लिए बड़े शहर मद्रास में जाने की सोचता है। लेकिन शहर में होटल में बैरे का काम करते हुए उसे गांव की याद सताने लगती है और वह नौकरी छोड़कर गांव लौट जाता है। लेकिन तब तक वहां भी हालात बदल चुके होते हैं। पारिवारिक सम्पत्ति को लेकर नायर परिवार में मुकदमेंबाजी चल रही है। उनकी शान शौकत सब समाप्त हो चुकी है। मुखिया नायर की बहन तथा उनका परिवार पास के ही एक घर में रहते हैं। नायर का जीजा मुकदमों की देख-रेख कर रहा है। नायर की बेटी देवू बहुत दुखी है क्योंकि उसका पति शराबी है और फिजूलखर्ची करता है। बचपन में देवू की केशु से दोस्ती थी। सरकार नायर परिवार की वन भूमि पर किए अपने कब्जे के लिए मुआवजे की घोषणा करती है। जब घर के लोगों को पता लगता है कि पागल और अब तक उपेक्षित युवक अप्पू को भी मुआवजा मिलेगा तो वे उसके हिस्से को भी हड़पने की कोशिश करते हैं। मुप्पिल नायर अप्पू के साथ अपनी बेटी तंकामणि की शादी तय कर देता है।

शादी का दिन नजदीक आ रहा है लेकिन मुप्पिल नायर के फैसले को कोई नहीं बदल सकता। केशु के सपनों की दुनिया उजड़ जाती है।

HRITHUBHEDAM

Malayalam/Colour/35 mm/130 mins.

Production : Thomsun Films (P) Ltd. **Direction :** Prathap Pothan **Screenplay :** M.T. Vasudevan Nair **Cast :** Vineeth, Geetha, Balachandra Menon, Monisha **Camera :** Ashok Kumar **Editing :** B. Lenin **Art Direction :** S. Konnanat **Costume Design :** M.M. Kumar **Music Direction :** Shyam **Lyrics :** Thakazhi Sankaranarayanan **Male Playback Singer :** K.J. Yesudass

Keshu dreams about the future, the life that all nature around him promises. Having lost his parents early, he lives alone in the village and does odd jobs in the manor of the chief, Naduvancherry Mooppil Nair. When he fails in school, he decides to go to the big city of Madras, where his dream future beckons. Waiting at tables there, he is overcome with nostalgia for his village. And so he leaves his job and returns. Things have changed, however. The Nair household is involved in expensive litigation for the family estate. Their feudal splendour gone, they have broken up —Mooppil Nair's sister and family live in an adjacent building. His brother-in-law is looking after the litigation. Devu, Nair's daughter, who had earlier befriended Keshu, faces a difficult life with an alcoholic and spendthrift husband.

The Government announces compensation to the family for the forest lands they have taken over from the Nair estate. As the family discovers that among those who would benefit is the crazy Appu, a young man ignored by them, they seek to appropriate his share too. Mooppil Nair arranges a fraudulent wedding between Appu and his daughter Thankamani. The day of the marriage comes and no one can change Mooppil Nair's mind about it. Keshu's dreams come crashing down.

इजाज़त

हिन्दी /रंगीन/35 एम.एम./140 मिनट

निर्माण : आर.के. गुप्ता **निर्देशन और पटकथा** : गुलज़ार **अभिनय** : नसीरूददीन शाह, रेखा, अनुराधा पटेल **छाया** : अशोक मेहता **ध्वनि आलेखन** : नरेन्द्र सिंह **सम्पादन** : सुभाष सहगल **कला निर्देशन** : आर.के. हांडा **वेशभूषा** : नरेश बाग **संगीत निर्देशन** : आर.डी. बर्मन **गीत** : गुलज़ार **पार्श्व गायिका** : आशा भोंसले

पहाड़ी इलाके में एक दूर दराज के रेलवे स्टेशन पर सुधा प्रथम श्रेणी के प्रतीक्षालय में बैठी है। बाहर मूसलाधार वर्षा हो रही है। वह आगे की रेलगाड़ी पकड़ने के लिए यहाँ पहुँची है। लेकिन बाढ़ आने के कारण रेलगाड़ी रद्द कर दी गई है। वह सवेरे जाने वाली दूसरी गाड़ी का इन्तजार कर रही है।
तभी एक और गाड़ी वहाँ पहुँचती है। एक यात्री प्रतीक्षालय में आता है। उसे भी सवेरे की गाड़ी पकड़नी है।
सुधा और महेन्द्र दोनों एकसाथ इंतजार करते हुए रात बिताने को मजबूर हैं। अचानक वे एक दूसरे को पहचानते हैं तो हैरान रह जाते हैं। विवाह सम्बन्ध टूट जाने के बाद वे 6 वर्षों के पश्चात पहली बार एक दूसरे से मिले हैं।
एक दूसरे को अच्छी तरह जानते हुए भी इस समय वे अजनबी हैं। वे अतीत की यादों में लौटते हैं। पिछली स्मृतियों की खुशबू लौटती है और एक दूसरे की गलतियों की चर्चा होती है। वे पूरी रात पुरानी गलतफहमियों और शंकाओं को दूर करने में बिता देते हैं।

IJAAZAT

Hindi/Colour/35 mm/140 mins.

Production : R.K. Gupta **Direction and Screenplay:** Gulzar **Cast :** Naseeruddin Shah, Rekha, Anuradha Patel **Camera :** Ashok Mehta **Audiography :** Narendra Singh **Editing :** Subhash Sehgal **Art Direction :** R.K. Handa **Costume Design :** Naresh Bagu **Music Direction :** R.D. Burman **Lyrics :** Gulzar **Female Playback Singer :** Asha Bhonsle

At a wayside station in the verdant hills, with the rain lashing furiously outside, Sudha is cooped up inside the First Class waiting room. She had arrived there to get a connecting train, but it is cancelled due to flash floods. She now waits for the next train, in the morning.
Another train arrives. A lone passenger enters the waiting room!He, too, is boarding the morning train. Forced to spend the night in each other's company, Sudha and Mahendra recognise each other with a sense of shock. It is their first meeting after six years since their marriage broke up
Strangers now to one another and yet not strangers, they go back to the past. Fragments of memories are recalled, old bitternesses discussed. They spend the night in clearing away old misunderstandings and doubts.

कादिना बेनकी

कन्नड़/रंगीन/35 एम.एम./ 140 मिनट

निर्माण: मनसा आर्ट **निर्देशन**: सुरेश हबलीकर **पटकथा**: नगातिहल्ली चन्द्रशेखर **अभिनय**: सुरेश हबलीकर, ममता राव, एल.एन. सुधीन्द्र,विजय काशी, वनीता वासु **छाया**: पी राजन **सम्पादन**: ऐ. सुब्रह्मणयम **संगीत निर्देशन**: विजय भास्कर **गीत**: एम.एन. व्यास राव, नगातिहल्ली चन्द्रशेखर **पार्श्व गायन**: बी.आर. छाया

रघुराम वन अधिकारी है जो प्राकृतिक वातावरण में एक शानदार बंगले में रहता है। अचानक उसका अपने रसोईये की सुन्दर पत्नी मनोहरी से लगाव हो जाता है। हालांकि मनोहरी को इस नये रिश्ते से खुशी होती है लेकिन रघुराम अपराध बोध अनुभव करता है।

रघुराम अपनी माँ के कहने पर यशोधा से विवाह कर लेता है और उसे अपने साथ ले जाता है। यद्यपि रघुराम अपनी पत्नी को पूरा वैवाहिक सुख नही दे पाता लेकिन तब भी वह खुश रहती है। तभी उसे अपने पति के मनोहरी के सथ सम्बन्धों का पता चलता है। वह अपने माँ बाप के पास लौट जाती है और मनोचिकित्सक से इलाज कराती है।

इस बीच मनोहरी और उसका बूढ़ा पति कहीं और चले जाते हैं और यशोधा अपने पति के पास जा कर रहने लगती है। लेकिन अब रघुराम कई तरह की मानसिक और योन सम्बन्धी समस्याओं से घिर जाता है।यशोधा को उसका पता चलता है तो वह बहुत दुखी होती है। वह आत्महत्या की कोशिश भी करती है। अन्त में पति-पत्नी दोनों का मनोवैज्ञानिक इलाज किया जाता है और रघुराम तथा यशोधा दोनों ठीक हो जाते हैं।

KAADINA BENKI

Kannada/Colour/35mm/140 mins.

Production: Manasa Arts **Direction:** Suresh Heblikar **Screenplay:** Nagathilli Chanderashekar **Cast:** Suresh Heblikar, Mamata Rao, L.N. Sudhindra, Vijaykashi, Vanita Vasu **Camera:** P. Rajan **Editing:** A Subramanyam **Music Direction:** Vijay Bhaskar **Lyrics:** M.N. Vyas Rao, Nagatihalli Chandrashekhar **Female Playback Singer:** B.R. Chhaya.

Raghuram, a Range Forest Officer, lives in a lovely lodge in picturesque surroundings. Human contact is rare and he almost inadvertantly develops a relationship with Manohari, the pretty, young wife of an old cook. Although for Manohari this relationship is fulfilling, Raghuram suffers from pangs of guilt.

On the insistence of his mother, Raghuram marries Yeshoda and takes her to Kanamaradi. Yeshoda is happy despite the fact that Raghuram cannot give her conjugal bliss, until she discovers his intimate relationship Manohari. She returns to her parents and retreats into a state of psychiatric shock.

In the meantime, Manohari and her old husband leave Kanamaradi and Yeshoda then agrees to go back there to live with her husband. But now Raghuram is suffering from a host of psycho-sexual problems. When these are revealed, Yeshoda is profoundly shocked. A bizarre series of events leads her to attempt suicide. Eventually, it is only after joint treatment at a psychiatric clinic that both Raghuram and Yeshoda are cured.

नायकन

तमिल/रंगीन/35 एम.एम./165 मिनट

निर्माण: सुजाता फिल्म लि. **निर्देशन और पटकथा**: मणी रतनम् **अभिनय**: कमल हासन, शराण्यां, जनक राज, कार्तिका, मास्टर सेल्वा कुमार, **छाया**: पी. श्री. राम **ध्वनि आलेखन**: एस.पी. रामनाथन, पाण्डुरंगन **संपादन**: लेनिन विजयन **कला निर्देशन**: थोटा थरणी **वेशभूषा**: रवि, **संगीत निर्देशन**: इलया राजा **गीत**: पुलमणी पीठन **पार्श्व गायन**: इलया राजा, कमल हासन, मनो, टी.एल. महाराजन, पी. सुशीला

शक्ति वेलू नायकन एक मजदूर नेता का बेटा है, जो अपने शहर से भाग कर बम्बई में धरावी स्लम में रहने लगता है। उसे लोग प्यार से वेलू कहते हैं। हुसैन भाई नाम का एक व्यक्ति उसका पालन पोषण करता है। हुसैन भाई का मानना है कि अगर कुछ लोगों को इन्सान के नाते रहने में मदद देने के लिए कोई उल्टा सीधा काम किया जाता है तो उसमें कोई बुराई नहीं है।

बड़ा होकर वेलू अपराधी बन जाता है लेकिन वह गरीबों की मदद करता है। वह बदमाश पन्डी दुराई उसके साथी भ्रष्ट पुलिस मैन केलकर और सेठ जगन लाल को ठिकाने लगाता है, जिन्होंने स्थानीय मन्दिर की जमीन हड़प ली थी और हजारों स्लम वासियों को बे-घर कर दिया था। इन सब कामों को देखकर वह लोगों की नजर में नायक या हीरो बन जाता है।

NAYAKAN

Tamil/Colour/35 mm/165 mins.

Production: Sujatha Film Ltd. **Direction and Screenplay:** Mani Rathnam **Cast:** Kamal Hasan, Sharanya, Janakaraj, Karthika, Master Selva Kumar **Camera:** P. C. Sriram, **Audiography:** S.P. Ramanathan, Pandurangan **Editing:** Lenin-Vijayan **Art Direction:** Thotta Tharini **Costume Design:** Ravi **Music Direction:** Ilayaraja **Lyrics:** Pulamani Pithan **Male Playback Singers:** Ilayaraja, Kamal Hasan, Mano T.L. Maharajan, **Female Playback Singer:** P. Susheela.

Shakthivelu Nayakan, the son of a trade union leader, runs away from his hometown Thuthukudi (Tuticorin) after a traumatic childhood experience and grows up in the slums of Dharavi in Bombay. Velu, as he is called, is brought up by Hussain Bhai, a good samaritan, whose philosophy of life is strongly imbibed by him-that there is nothing wrong in those acts of life which ultimately help a few people to survive as human beings.

As he grows into a young man, Velu takes to a life of crime, but shows his own sense of social justice. He deals effectively with Pandi Durai, a local hooligan and his ally, a corrupt policeman, Kelkar and Seth Jaganlal who almost succeeds in usurping the land and temple belonging to the slum dwellers and uprooting thousands from their homes. All these deeds raise him to the pedestal of a 'Nayakan' or hero.

निषिद्ध स्वप्न

उड़िया/रंगीन/35 एम.एम./75 मिनट

निर्माण, निर्देशन और पटकथा : मनमोहन महापात्र, **अभिनय :** मनमोहन राय, जया स्वामी, अरुन नन्दा, पुष्पा पन्डा, **छाया:** दीलीप राय **ध्वनि आलेखन :** संजय पाठक, एस.पी. रामनाथन **संपादन :** गदाधर पुटी **संगीत निर्देशन :** अजय घोष

सोची बाबू 60 वर्ष की उम्र को पार कर चुके हैं। और एक गांव में अपनी पत्नी, दो बेटों, दो बेटियों और बेटे की पत्नी के साथ रहते हैं। वे अपना समय ताश खेल कर और दोस्तों में गप्प बाजी करते हुए मौज मस्ती से बिता रहे हैं। बड़ा बेटा, अरविन्द भुवनेश्वर में नौकरी करता है और उसकी पत्नी सोमा गांव में रह कर खुश नहीं है लेकिन उसमें इतनी हिम्मत नहीं है कि परिवार से अलग होकर शहर में अपना घर बसा सके।

छोटा बेटा अरुप नाटकों का शौकीन है और घर के मामलों में उसकी कोई रुचि नहीं है। सोची और अरविन्द अपनी बेटी राधा के लिए वर की तलाश में हैं। तभी उनके हाथ एक पत्र लगता है जिससे पता चलता है कि राधा का दूसरी जाति के एक लड़के बिमल से प्यार चल रहा है। इससे सारे परिवार में खलबली मच जाती है।

राधा को समझाया जाता है कि वह प्रेम सम्बन्ध तोड़ दे। इस बीच एक ज्योतिषी सोची को बताता है कि उसकी बेटी राधा पर संकट आने वाला है। संकट के दूर करने के लिए धार्मिक पूजा-पाठ किया जाता है। लेकिन इसी दौरान मालूम होता है कि राधा परिवार के झूठे सामाजिक नियमों को तोड़कर बिमल के साथ भाग गई है।

NISIDHHA SWAPNA

Oriya/Colour/35 mm/75 mins.

Production, Direction and Screenplay: Manmohan Mahapatra **Cast:** Manmohan Ray, Jayaswami, Arun Nanda, Puspa Panda **Camera:** Dilip Ray **Audiography:** Sanjay Pathak, S.P. Ramanathan**Editing:** Gadadhar Puty **Music Direction:** Ajoy Ghosh

Sochi Babu, in his sixties, lives in a village with his wife; two sons, Aurobindo and Arup; two daughters, Radha and Neeta, and a daughter-in-law, Soma, the wife of Aurobindo. He leads a retired life, whiling away his time playing cards and amongst friends. Aurobindo works in Bhubaneswar and his wife Soma resents having to stay back in the village, but he doesn't have the courage to break away from the family and set up his own house in the city.

Arup is engrossed in amateur dramatics and pays little attention to household affairs. Sochi and Aurobindo are on the lookout for a groom for Radha and all seems to be going well, until a love letter is discovered, from which it emerges that Radha is having an affair with a man called Bimal, whose caste is unsuitable. This revelation triggers off a series of varied reactions among the family members.

Radha is told to end the affair. In the meantime, an astrologer tells Sochi that a mishap is about to befall Radha. Religious rites are performed to ward off the evil, but during the ceremonies, it is dramatically discovered that Radha, after contemplating suicide, has eloped with Bimal to defy the false social values of her family.

ओरे ओरू ग्रामाथिले

तमिल/रंगीन/35 एम.एम./130 मिनट

निर्माण : एस. रंगराजन **निर्देशन :** के ज्योतिपंदियन **पटकथा :** कविग्नार वाली **अभिनय :** लक्ष्मी, पूरम विश्वनाथन, वीनू चक्रवर्ती, मनोरमा, अरुंधती, बेबी लक्ष्मी, **छाया :** रंगा **ध्वनि आलेखन :** एस.पी. रामनाथन **वेशभूषा :** नरसिम्हा राव **सम्पादन :** टी. के राजन **कला निर्देशन :** राम कुमार **संगीत निर्देशन :** इलया राजा **गीत :** कविग्नार वाली **पार्श्व गायन :** के.जे. यसुदास, एस.पी. बालासुब्रह्मणयम, इलया राजा, मलेसीया वासुदेवन, चित्रा, एस. जानकी.

अन्नावलयल गांव में बाढ़ आ जाती है और करुपई नाम की हरिजन महिला आई.ए.एस. अधिकारी को राहत कार्यों की देख रेख का कार्य सौंपा जाता है।वह बहुत अच्छा काम करती है और गांव के लोग एक तरह से उसकी पूजा करने लगते हैं।

इस बीच एक शराबी व्यक्ति एंथनी उसके कार्यालय में आता है और धमकी देता है कि वह उसके अतीत का पर्दाफाश कर देगा। वह जब भी आ कर धन मांगता है वह चुप चाप दे देती है।

लेकिन एक बार वह एक ठेका अपने मित्र को देने की मांग करता है। जिससे करुपई इंकार कर देती है। इस पर एंथनी उसके भेद खोल देता है। वह असल में उच्च जाति की है और उसने लाभ उठाने के लिए एक तहसीलदार से हरिजन होने का झूठा प्रमाणपत्र बनवाया था।

उसे नौकरी से मुअत्तिल कर दिया जाता है और जांच के आदेश दिये जाते हैं,लेकिन सारा गांव विद्रोह कर देता है और सरकार से उसके खिलाफ मामला वापस लेने का अनुरोध करता है। अन्त में लोगों की मांग ओर गांव के उत्थान के लिए किए उसके काम को देखते हुए सरकार उसके खिलाफ मुकदमा रद्द कर देती है और उसे नौकरी पर बहाल कर देती है।

ORE ORU GRAMATHILEY

Tamil/Colour/35 mm/130 mins.

Production: S. Rangarajan **Direction:** K. Jothipandian **Screenplay:** Kavignar Vaalee **Cast:** Lakshmi, Pooram Viswanathan, Vinu Chakravarthi, Manorama, Arunthadi, Baby Lakshmi **Camera:** Ranga **Audiography:** S.P. Ramanathan, **Costume design:** Narashimha Rao **Editing:** T. K. Rajan **Art Direction:** Ramkumar **Music Direction:** Ilayaraja **Lyrics:** Kavignar Vaalee **Male Playback Singers:** K.J. Yesudass, S. P. Balasubramaniam, Ilayaraja, Malaysia Vasudevan **Female Playback Singers:** Chitra, S. Janaki

Village Annavayal is affected by floods and a Harijan lady I.A.S. Officer named Karuppayee is appointed to look after the relief work. She works wonders for the village and the people start virtually worshipping her. In the meantime, an alcoholic named Anthony comes to her office and blackmails her, threatening to expose her past. She quietly pays him whenever he demands money.

However, matters come to a head when he demands that a government contract be awarded to his friend who is not worthy of it. Karuppayee refuses and Anthony ultimately reveals her secret: that in fact she belongs to a 'forward' community and that she had obtained a false certificate from a Tehsildar stating that she belonged to a backward community when she was young, so that she could take advantage of the concessions that are granted to backward communities.

She is suspended and a court of enquiry is instituted. However, the entire village revolts and requests the Government to withdraw the case against her. Eventually, at the people's request and considering her valuable contribution towards the upliftment of the village, the Government withdraws the case against her and she is reinstated.

पेस्टनजी

हिन्दी/रंगीन/35 एम.एम./114 मिनट

निर्माण: राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम लि. **निर्देशन**: विजया मेहता **पटकथा**: बी.के. करंजीया, विजया मेहता **अभिनय**: नसीरुद्दीन शाह, शबाना आजमी, अनुपम खेर, किरण ठाकुर सिंह, वीरा सोहरावजी **छाया**: राजन कोठारी **ध्वनि आलेखन**: रवीन्द्र साठे, हितेन्द्र घोष **सम्पादन**: रेणु सलूजा **कला निर्देशन**: रवीन्द्र कलपेसी **वेशभूषा**: रमीला पटेल, मणी रबादी **संगीत निर्देशन**: वनराज भाटिया

पिरोज और पेसी को जेरू से शादी करने को कहा जाता है लेकिन पिरोज फैसला नहीं कर पाता और पेसी विवाह कर लेता है। शुरू से ही ऐसा लगता है कि पति पत्नी में अनबन है ओर पिरोज का बम्बई से बाहर तबादला हो जाता है। पेसी की मुलाकात सूना नाम की विधवा से होती है जो वकील है ओर पेसी को अपने भाई के खिलाफ मुकदमा लड़ने में मदद करने को राजी हो जाती है।

5 वर्ष बाद पिरोज को पता चलता है कि पेसी और जेरू का बच्चा होने वाला है।वह उन्हें मिलने जाता है। उसे पता चलता है कि जेरू का गर्भपात हो गया है। और पेसी का सूना के साथ प्रेम चल रहा है। ये हालात देख कर पिरोज पेसी से झगड़ा करता है और दोनों दोस्त एक दूसरे से अलग हो जाते हैं।

3 साल बाद पिरोज को पेसी से नये वर्ष का बधाई कार्ड मिलता है। पिरोज का तबादला फिर बम्बई हो जाता है ओर पेसी से मिलने जाता है लेकिन फिर से दोस्त बनने की उनकी कोशिश कामयाब नहीं होती।

अगले दिन अचानक दिल का दौरा पड़ने से मृत्यु हो जाती है। जेरू को दौरे पड़ते हैं और अपनी मुसीबत के लिए सारी दुनिया को दोषी बताती है। सूना का पेसी से एक लड़का है जिसका नाम पिरोज रखा जाता है। पेसी ने अपनी मृत्यु से पिरोज को ये सिखाया कि जिन्दगी जीने के लिए है शिकायत करते रहने के लिए नही।

PESTONJEE

Hindi/Colour/35 mm/114 mins.

Production: National Film Development Corporation Ltd. **Direction:** Vijaya Mehta **Screenplay:** B.K. Karanjia, Vijaya Mehta **Cast:** Naseeruddin Shah, Shabana Azmi, Anupam Kher, Kiran Thakursingh, Veera Sorabji **Camera:** Rajan Kothari **Audiography:** Ravindra Sathe, Hitendra Ghosh **Editing:** Renu Saluja **Art Direction:** Roshan Kalapesi **Costume Design:** Ramilla Patel, Mani Rabadi **Music Direction:** Vanraj Bhatia

Jeroo is offered in marriage to both the bachelors Piroj and Pesi, but while Piroj takes time in making up his mind, Pesi agrees and the wedding takes place. From the beginning, husband and wife show signs of incompatability. Piroj is transferred out of Bombay. Pesi meets Soona, a merry widow. She is a lawyer and agrees to help Pesi out in fighting a case against his brother.

Five years later, on learning that Pesi and Jeroo are expecting a child, Piroj visits them to see the baby. He finds that there has been a miscarriage, that Jeroo has become a shrew and that Pesi is having an affair with Soona. Piroj quarrels with Pesi over this situation and the two friends part.

Three years later, Piroj receives a new year's card from Pesi and he is transferred back to Bombay. He meets Pesi briefly and the friends try unsuccessfully to recapture their lost bond.

The next morning Pesi dies suddenly of a heart attack. Jeroo now comes across as a hypochondriac, constantly blaming the whole world for her misery. Soona has a son by Pesi and he is named Piroj. Pesi, in his death, has taught Piroj that life is for the living and not for complaining.

प्रथम रागिनी

असमिया/रंगीन/35 एम.एम./95 मिनट

निर्माण: एस.एन. बोरा **निर्देशन**: धीरू भुयन **पटकथा**: मोहम्मद सदुल्ला, गौतम बोरा **अभिनय**: प्रतीम गोस्वामी, पूर्वी शर्मा, धीरू भुयन, आगा अहमद, अरूप बिश्वास, बन्दाना शर्मा, जीमनी चौधरी **छाया**: विजय आनन्द चवरवाल **ध्वनि आलेखन**: अरूप मुखोपाध्याय **सम्पादन**: सत्यन कुमार **वेशभूषा**: जुन पेरियट, मन्जुला बरूआ, **संगीत निर्देशन**: शेर चौधरी **गीत**: कीर्ति कमल भुयन, गिल्बर्ट शेम्हा **पार्श्व गायन**: मालविका बोरा

मृदु पवन बरूआ इंजीनियर है। जो अपनी नवविवाहिता पत्नी लतिका को अपर असम में अपने घर छोड़कर शिलांग चला जाता है जहां वह एक प्राईवेट कम्पनी में नौकरी करता है। वह अपनी पत्नी से वादा करके जाता है कि शिलांग में मकान का प्रबन्ध होते ही वह उसे ले जायेगा।

वहां उसकी जान पहचान एक सुन्दर लड़की मुन्नी से होती है जो कालेज पढ़ती है और अपनी बड़ी बहन रूथ के साथ रह रही है। थोड़े समय में ही मृदु और मुन्नी में गहरा प्रेम हो जाता है जबकि मुन्नी को यह पता नहीं है कि मृदु विवाहित है।

एक दिन मृदु को लतीका का एक पत्र मिलता है जिसमें वह उसे उसके वादे की याद दिलाती है। एक बार लतीका और मुन्नी की मुलाकात हो जाती है जिसमें सारा राज खुल जाता है। मुन्नी की सारी आशाओं पर पानी फिर जाता है और वह बहुत दुखी होती है। वह नर्स बनने का फैसला करती है ताकि वह अपनी तरह जीवन में दुखी लोगों की मदद कर सके।

PRATHAM RAGINI

Assamese/Colour/35 mm/95 mins

Production: S.N. Bora **Direction:** Dhiru Bhuyan **Screenplay:** Mohammad Sadulla, Gautam Bora **Cast:** Pratim Goswami, Purobi Sarma, Dhiru Bhuyan, Agha Ahmed, Arup Biswas, Bandana Sarma, Jeemoni Choudhury **Camera:** Vijay Anand Chavarwal **Audiography:** Arup Mukhopadhyay **Editing:** Satyan Kumar **Costume Design:** Jun Periat, Manjula Barua **Music Direction:** Sher Choudhury **Lyrics:** Kirti Kamal Bhuyan, Gilbert Shemha **Female Playback Singer:** Malabika Bora

Mridu Pawan Baruah, an engineer, has to leave his newly-wed wife Latika in his home town in Upper Assam and go to Shillong, where he works in a private firm. He promises to come back to fetch his bride as soon as he is able to set up house in Shillong.

There he makes the acquaintance of the pretty college girl Minnie Andrews Borbora, who lives with her elder sister Ruth, a school mistress. Within a short period, an intimate relationship develops between Mridu and Minnie, who is unaware that he is married. One day, a letter from Latika reminds Mridu of his promise to his wife. In his absence, there is an encounter between Latika and Minnie, when all is revealed. Minnie's world comes crashing down around her and it is only the compassion and endearing persuasion of a close relative which helps her overcome her trauma. She decides to take up nursing as her mission, to take care of those who, like her, have suffered in life.

पुरुषार्थम

मलयालम/रंगीन/35 एम.एम./111 मिनट

निर्माण : पी.टी.के मोहम्मद **निर्देशन और पटकथा** : के.आर. मोहनन **अभिनय** : सुजाता मेहता, मदाम्बु कुंजुकुट्टन, राणा मुथलाली, भार्गवियम्मा, मास्टर जेबिन जार्ज, बेबी नंदिता **छाया** : मधु अम्बट **ध्वनि आलेखन** : टी. कृष्णनउन्नी **संपादन** : **वी. वेणुगोपाल, कला निर्देशन** : सी.एन. करुणाकरन **संगीत निर्देशन** : एम.बी. श्रीनिवासन

एक शहरी युवती भद्रा वासुदेव अपने पति की यादों में खोई रहती है। वह अपने पुत्र विनीत के साथ अपने पति के पैतृक गांव जाती है। वहां हम देखते हैं कि वह ऐसे कर्मकांड करना चाहती है जिससे उसके पति का भूत उसके मन से निकल जाए।

कर्मकांड के दौरान ऐसा लगता है कि भद्रा असल में अपने पति की मृत्यु को याद करके परेशान है और हो सकता है कि वह उसके लिए जिम्मेदार भी हो, लेकिन बाद में यह बात गलत लगती है। रामेश्वरम के मंदिर में बलि देने का फैसला किया जाता है।

रास्ते में उनकी मुलाकात निनान से होती है। भद्रा उसके सामने स्वीकार करती है कि गांव में उसे बोरियत हो रही है। निनान जो कि हृष्ट पुस्ठ और खुश-मिजाज है, उसका दिल बहलाने की कोशिश करता है। जल्दी ही निनान भद्रा के साथ अपने इस संबंध का फायदा उठाकर मकान के लिए कर्जे का अपना मसला हल कर लेता है। लेकिन विनीत को इस रिश्ते से बहुत चिढ़ है। वह अपनी मां से छुपकर अनुष्ठान करने के लिए पवित्र जल में एक डुबकी लगाता है। जब बलि के लिए पूजा पाठ शुरू होती है तो विनीत को संताप होने लगता है। भद्रा उसे शान्त करने और निनान उसका ध्यान दूसरी तरफ ले जाने की कोशिश करता है। लेकिन विनीत गुस्से में आ कर पूजा पाठ के चावल निनान के मुंह पर दे मारता है।

उनके गांव वापस आने तक विनीत का अपनी मां से लगाव पूरी तरह समाप्त हो जाता है।

PURUSHARTHAM

Malayalam /Colour/35 mm/111 mins.

Production : P.T.K. Mohammed **Direction and Screenplay :** K.R. Mohanan **Cast :** Sujata Mehta, Madambu Kunjukuttan, Rana Muthalali, Bhargaviyamma, Master Jebin George, Baby Nandita **Camera :** Madhu Ambat **Audiography :** T. Krishnanunni **Editing :** V. Venugopal **Art Direction :** C.N. Karunakaran **Music Direction :** M.B. Sreenivasan

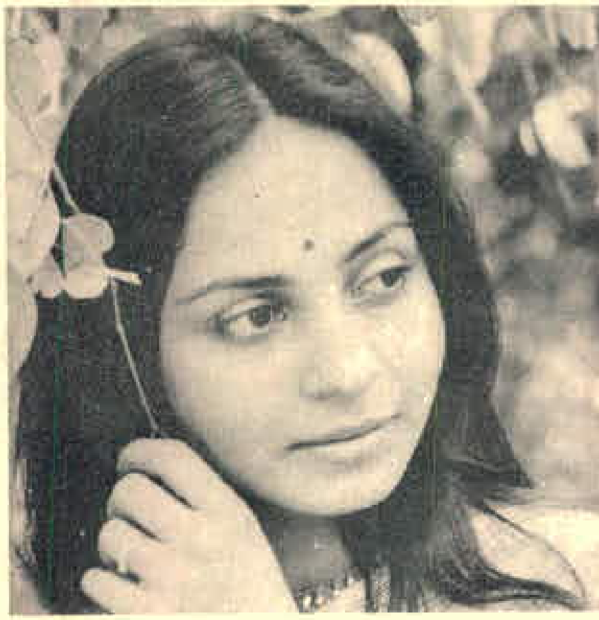

Bhadra Vasudev, a young and urbanised woman, is haunted by memories of her husband's death. She and her son Vineet are journeying to his native village. There, we discover, she wishes to perform the rituals that would free her from her husband's ghostly visitation.

In the ritual, however, it appears that Bhadra was actually involved with her husband's death and possibly even responsible for it. This suggestion is rapidly discounted, and it is decided that a sacrificial offering be made at the temple of Rameshwaram.
On the way there they meet Ninan. Bhadra confesses to him her utter boredom in the village and Ninan, flashy and cheerful, entertains her. Ninan shortly capitalises on his relationship to solve his problem for a house loan.

Vineet, increasingly alienated by this relationship, secretly takes the ceremonial dip in holy water. As the ritual begins he is struck by grief. Bhadra tries to pacify Vineet and Ninan tries divert him. But Vineet, in a rage, throws the sacrificial rice balls at Ninan.
As they return, Vineet's estrangement from his mother is complete.

पुष्पक विमाना

कन्नड़ (मूक)/रंगीन/35 एम.एम./130 मिनट

निर्माण: श्रृंगार नागराज, सिंगीतम श्रीनिवास राव **निर्देशन एवं पटकथा**: सिंगतम श्रीनिवास राव **अभिनय**: **कमल हासन, अमला, के.एस. रमेश छायांकन**: बी.सी. गोरीशंकर **सम्पादन**: टी.वासु **कला निर्देशन**: थोटा थरणी **संगीत निर्देशन**: एल. वैद्यनाथन

कमल एक शिक्षित बेरोजगार नवयुवक है। यद्यपि वह बेरोजगार है परन्तु दौलत के स्वप्न लेता है। एक दिन उसे एक अमीर व्यक्ति फुटपाथ पर नशे की हालात में पड़ा मिलता है। उसकी जेब से उसे पांच सितारा पुष्पक नामक होटल के कमरे की एक चाबी मिलती है। इस पर उसे एक विचार आता है। वह उस धनी व्यक्ति को अपने कमरे में ले जाता है और नशे की हालत में वहां पर कैदी के रूप में रखता है और स्वयं उस धनी व्यक्ति के होटल के कमरे में रहता है।

होटल में वह एक जादूगर की लड़की अमला से मिलता है। उनमें आपस में प्यार हो जाता है। कमल को यह ज्ञात नहीं है कि धनी व्यक्ति की पत्नी का उसके गहरे दोस्त से प्रेम सम्बन्ध है, जिसने उसे मारने के लिए एक व्यक्ति को किराये पर लिया है। चूंकि कमल धनी व्यक्ति के कमरे में रह रहा है और किराये का आदमी उसका छिप कर पीछा करता है, लेकिन उसके प्रयास विफल रहते हैं।

कमल को यह पता चलता है कि कोई उसे मारने की कोशिश कर रहा है। वह उसका पीछा करता है और उसे धनी व्यक्ति के घर की परिस्थिति पता लग जाती है। यद्यपि उसकी पत्नी अब पछताती है और कमल पुराने हालात को ठीक करने की कोशिश करता है। वह धनी व्यक्ति को वापिस उसके कमरे में भेज देता है और साथ-साथ अमला को भी सच्चाई के बारे में लिखता है। धनी व्यक्ति एवं उसकी पत्नी का फिर से मेल हो जाता है। अमला भी होटल छोड़ देती है और कमल जल्द से धनी बनने के स्वप्न छोड़कर फिर से रोजगार की तलाश में लग जाता है।

PUSHPAKA VIMANA

Kannada (without speech)/Colour/35 mm/ 130 mins.

Production : Sringar Nagraj, Singeetam Srinivasa Rao **Direction and Screenplay :** Singeetam Srinivasa Rao **Cast :** Kamal Hasan, Amala, K.S. Ramesh, **Camera :** B.C. Gowri Shankar **Editing :** D. Vasu **Art Direction :** Thotta Tharini **Music Direction :** L. Vaidynathan

Kamal is a young unemployed graduate who dreams of riches as he looks for jobs.
One day, he finds a rich man lying on the pavement in a drunken state. On finding the key to a room in a luxury hotel named "Pushpak" in his pocket, Kamal hits upon an idea. He carries the rich man to his own room and keeps him a prisoner there with the help of forced doses of alcohol, meanwhile moving into the hotel room himself.
In the hotel, he meets Amala, the daughter of a performing magician, and love blossoms between them. But unknown to him, the rich man's wife is having an affair with his best friend, who has hired a killer to kill him. Since Kamal is living in the rich man's room, the killer starts stalking him, but several of his attempts fail.
Kamal discovers that he is being followed by a killer and, on following him, discovers the situation in the rich man's household. However, the wife has now repented and Kamal sets about undoing all he has done. He puts the rich man back in his hotel room and writes to tell him as well as Amala the truth. The rich man and his wife are reunited. Amala leaves the hotel and Kamal, forgoing short cuts, once again joins a queue of job-seekers.

सर्जा

मराठी/रंगीन/35 एम.एम./150 मिनट

निर्माण: सीमा देव **निर्देशन**: राजदत्त, **पटकथा**: राजंकर **अभिनय**: अजिंक्य देव, पूजा, नीलू फूले, रवीन्द्र महाजनी, सीमा देव **छाया**: जयंत पठारे, **ध्वनि आलेखन**: शैम्सन मैनाथम, **सम्पादन**: वामन गुरु, **कला निर्देशन**: गुरु जी ब्रदर्स, **संगीत निर्देशन**: हृदय नाथ मंगेशकर **गीत**: एन.डी. महानर **पार्श्व गायन**: सुरेश वाडकर, लता मंगेशकर

ये फिल्म शिवाजी के समय की है और मुगल सेना के साथ उनकी लड़ाई की पृष्ठभूमि में बनाई गई है। सर्जा और कस्तूरा बचपन से एक दूसरे से विवाहित है। मुगल सेना का एक राजपूत सरदार चन्द्रभान भक्षी कस्तूरा को पकड़ लेता है और सर्जा छुड़ाने की कोशिश करता है। वे दोनों पकड़ लिये जाते हैं, जिन्हें शिवाजी की सेना मुगलों पर हमलों के दौरान छुड़ाती है।

सर्जा शिवाजी की सेवा में रहना चाहता है लेकिन लोग उसका मजाक उड़ाते हैं। फिर भी एक बार वह रायगढ़ के नये किले की दीवार पर चढ़ने की शर्त पूरी करके इनाम प्राप्त करता है।

बाद में जब शिवाजी दो मुगल तोपों को नष्ट करने का काम बहिरजी नायक को सौंपते हैं तो वह इसके लिए सर्जा को चुनता है। लेकिन दुर्भाग्यवश सर्जा और उसके साथी पकड़ लिये जाते हैं। सर्जा को जेल में डाल दिया जाता है। अब कस्तूरा, उसकी माँ तथा बहिरजी सर्जा को छुड़ा लेते हैं। कस्तूरा तोपों को नष्ट करती है और सर्जा अपने साथियों की मौत का बदला लेने के लिए भक्षी को मार डालता है। शिवाजी सबके सामने इन दोनों की तारीफ करते हैं और सर्जा का सपना पूरा हो जाता है।

SARJA

Marathi/Colour/35 mm/150 mins.

Production: Seema Deo **Direction:** Rajdutt **Screenplay:** Rajankar **Cast:** Ajinkya Deo, Pooja, Nilu Phule, Ravindra Mahajani, Seema Deo **Camera:** Jaywant Pathare **Audiography:** Samson Menahem **Editing:** Waman Guru **Art Direction:** Guruji Bros. **Music Direction:** Hridayanath Mangeshkar **Lyrics:** N.D. Mahanor **Male Playback Singer:** Suresh Wadkar **Female Playback Singer:** Lata Mangeshkar

This film is set in the times of Shivaji and takes place against the backdrop of his clashes with the Mughal Army. Sarja and Kastura are Dombarnis married since their childhood. Sarja attempts to save Kastura

from the clutches of Chandra Bhan Baxi, a Rajput sardar in the Mughal Army, who has taken a fancy to her. But in this attempt, both he and Kastura are captured, only to be saved when Shivaji's guards attack the Mughals.

Deeply impressed, Sarja wants to be of service to Shivaji, but is made fun of by people. Nevertheless, in response to an open challenge from Shivaji, he scales the walls of the newly-built fort of Raigadh and receives a reward.

Later, when Shivaji entrusts the task of sabotaging two Mughal cannons to Bahirji Naik, the latter selects Sarja to do the job. Sarja and his colleagues are unfortunately ambushed. Sarja is made a prisoner, while his comrades are hanged. Now Kastura, her mother Gaura and Bahirji mount a daring rescue operation which succeeds. Kastura sabotages the cannons and Sarja kills Baxi to avenge the deaths of his friends. Shivaji publicly acknowledges their feat and Sarja's dream comes true.

स्वामी

हिन्दी/रंगीन/35 मि.मी./112 मिनट

निर्माण : टी.एस. नरसिम्हन **निर्देशन :** शंकर नाग **पटकथा :** मरियम जेतपुरवाला **अभिनय :** गिरीश कर्नाड, वैशाली कासरावल्ली, मास्टर मंजूनाथ **छाया :** एस. रामचन्द्र **ध्वनि आलेखन :** कृष्णमूर्ति **संपादन** सुरेश अर्स **कला निर्देशन :** जान देवराज **वेशभूषा :** अरुंधती राव **संगीत निर्देशन :** सारंग देव.

स्वामी ग्यारह वर्ष का बच्चा है। उसके पिता परम्परागत हिन्दू विचारों वाले एक वकील हैं। स्कूल में जब अध्यापक स्वामी के धर्म को लेकर अपमानजनक शब्द कहता है तो उसका मन दुखी होता है। जब विरोध करता है तो अध्यापक उसके कान मरोड़ता है।

लेकिन राजम के आ जाने से हालात बदल जाते हैं। राजम सब बच्चों में दोस्ती और मेलजोल का भाव पैदा करता है और सब बच्चे मिलकर कई तरह के साहसिक काम करते हैं। इस बीच स्वामी के मन में देशभक्ति की भावना बलवती हो उठती है और वह अंग्रेजी स्कूल छोड़ देता है। मालगुडी में एक ही और स्कूल है लेकिन उसमें भी दाखिला लेने में उसे दिक्कत महसूस होती है क्योंकि वहां का समय इस तरह का है कि वह अपने नए शौक क्रिकेट के लिए समय नहीं निकाल पाएगा। स्वामी बच्चों के दूसरे दल के साथ निर्धारित क्रिकेट मैच के लिए समय निकाल पाने की सारी तरकीबें आजमाता है। जब स्कूल के हैडमास्टर को पता चलता है कि स्वामी ड्रिल की कक्षा में लगातार गायब रहता है तो उसकी बेंत से पिटाई होती है। स्वामी फिर स्कूल से गायब हो जाता है लेकिन इस बार वह नई दुविधा में फंस जाता है और उसे जिस दिन मैच होना होता है उससे एक दिन पहले स्वामी घर से भाग जाता है और कहीं छिप जाता है।

रेलवे स्टेशन का विदाई का अंतिम दृश्य बहुत मार्मिक है और इस बात का परिचायक है कि आर.के. नारायण भारत के बच्चों की मानसिकता की नस-नस पहचानते हैं।

SWAMY

Hindi/Colour/35 mm/112 mins.

Production : T.S. Narasimhan **Direction :** Shankar Nag **Screenplay :** Mariam Jetpurwala **Cast :** Girish Karnad, Vaishali Kasaravalli, Master Manjunath **Camera :** S. Ramachandra **Audiography :** Krishnamurthy **Editing :** Suresh Urs **Art Direction :** Joshn Devraj **Costume Design :** Arundhati Rao **Music Direction :** Sharang Dev

Swamy, the 11 year-old son of a traditional Hindu lawyer, is piqued by the teacher's insulting reference to his religion. A protest, however, leads to a severe wrenching of his ears.

Things take a new turn with the arrival of Rajam. Rajam forges a strong bond of friendship with the boys and leads them into several exciting adventures. Swamy, meanwhile, is possessed with patriotic fervour and leaves his English school. Admission into the only other school in Malgudi is a problem, for the school timings interfere with the boys' new passion: cricket. Swamy tries every trick to find time for the all-important cricket match planned with the rival Young Men's Union team. When his headmaster discovers Swamy's constant absence from drill class, he canes Swamy severly. Swamy escapes from school again and finds himself in a new dilemma. He has now to face his parents.

Swamy runs away from home and gets lost on the eve of the long-awaited match.

The last farewell scene at the railway station is characteristic of R.K. Narayan's masterly handling of children's life in India.

तमस

हिन्दी/कलर/35 एम.एम./300 मिनट

निर्माण : ब्लेज एन्टरटेनमेन्ट प्रा. लि. **निर्देशन और पटकथा :** गोविन्द निहलानी **अभिनय :** ओमपुरी, दीपा साही, भीष्म साहनी, वीरेन्द्र सक्सेना, सुरेखा सीकरी,उत्तर बाओकर **छाया :** बी.के मूर्ति, गोविन्द निहलानी **ध्वनि आलेखन :** चन्द्रकान्त दवे **सम्पादन :** सुतानु गुप्ता **कला निर्देशन :** नितीश राय **वेशभूषा :** माला डे **संगीत निर्देशन :** वनराज भाटिया **पार्श्व गायन :** सुरेन्द्र सिंह सचदेव तेजपाल सिंह सचदेव (सिंह बन्धु) उत्तरा बाओकर

नत्थु को पांच रुपये देकर सुअर मारने को कहा जाता है जो अगले दिन एक मस्जिद की सीडियों पर पड़ा मिलता है। इस घटना से साम्प्रदायिक तनाव भड़क उठता है हिन्दु और मुसलमान से दोनों धर्मों के कट्टर लोग तनाव को भड़काते हैं जबकि ब्रिटिश प्रशासन सख्त कार्रवाई नहीं करता।

जब हिंसा शुरू हो जाती है तो नत्थु और उसकी पत्नी किसी सुरक्षित जगह के लिए निकल पड़ते हैं। एक बूढ़े सिख और उसकी पत्नी को जो जान बचाने के लिए छिपे-छिपे घूम रहे हैं दो मुसलमान औरतें शरण देती हैं और उनके लिए अपने पतियों से झगड़ा तक करती हैं। ये दोनों जोड़े एक गुरुद्वारे में शरण लेते हैं लेकिन तनाव बढ़ जाने पर सारे पुरुष हमला रोकने के लिए निकल पड़ते हैं। जब वें वापस नहीं आते तो महिलायें प्रार्थना करती हुई दूर के कुंए तक जाती हैं और उसमें कूद पड़ती हैं।

अगले दिन एक शांति समिति बनाई जाती है। एक राहत शिविर में लाशों के बीच नत्थु की पत्नी अपने पति की लाश को देखती है। वह बेहोश हो जाती है और उसे उठाकर तम्बू में बनाये गये क्लीनिक में ले जाया जाता है। थोड़ी देर बाद नवजात शिशु के रोने की आवाज सुनाई देती है लेकिन थोड़ी देर बाद आवाज थम जाती है। कुछ क्षणों की चुप्पी के बाद नत्थु की पत्नी की दुख भरी चिल्लाहट हमारे कानों में पड़ती है।

TAMAS

Hindi/Colour/35 mm/300 mins.

Production : Blaze Entertainment Pvt. Ltd. **Direction and Screenplay :** Govind Nihalani **Cast :** Om Puri, Deepa Sahi, Bhisham Sahni, Virendra Saxena, Surekha Sikri, Uttara Baokar **Camera :** V.K. Murthy, Govind Nihalani **Audiography :** Chandrakant Dave **Editing :** Sutanu Gupta **Art Direction :** Nitish Roy **Costume Design :** Mala Dey **Music Direction :** Vanraj Bhatia

Male Playback Singers: Surendra Singh Sachdev, Tejpal Singh Sachdev ("Singh Bandhu") **Female Playback Singer :** Uttara Baokar

Nathu is paid five rupees for a pig, which next day is found dead on the steps of a local mosque. This incident ignites communal tensions and both Hindu and Muslim fanatics inflame the situation, while the British administrators evade taking a firm stand.
When violence breaks out, Nathu and his wife decide to leave for a safer place. An old sikh and his wife, who are also trying to escape, are given shelter by two sympathetic Muslim women, who even fight with their husbands to save them. The two couples take shelter in a gurudwara, but as tension mounts, the men go out to forestall an attack. When they do not return, the women pray, make their way towards a distant well and one by one jump into it.

The next day a peace committee is organised. But at a relief camp, amidst a score of corpses, Nathu's wife finally finds the dead body of her husband. She collapses and is carried into a makeshift medical clinic. Shortly afterwards, the cry of a newborn child is heard, but it suddenly stops. After a few moments of silence, a scream of anguish is heard from Nathu's wife.

ऊन्नीकले ओरू कथा प्रयाम

मलयालम/रंगीन / 35 एम.एम./ 120 मिनट

निर्माण : चीयर्स एनटरनेशनल **निर्देशन** : जान पाल **अभिनय** : मोहन लाल, कार्तिका, तिलकन, सुकुमारी, **छाया** : कुमार एस. **ध्वनि आलेखन** : राधा कृष्णन **वेशभूषा** : एम.एम. कुमार **संगीत निर्देशन** : औस्सेपचन **गीत** : बिचु त्रिमाला **पार्श्व गायन** : के.जे. यसुदास, चित्रा

एबी एक अनाथ लड़का है। लेकिन एक दुर्घटना के कारण थामस अब्राहम नाम का एक धनी व्यक्ति उसे अपने घर ले जाता है और अपने बेटे की तरह उसे पालता है। वह कालेज में पढ़ रहा होता है तो अब्राहम की अचानक मौत हो जाती है और उसकी पत्नी उसे घर से निकाल देती है।

एबी एक बार फिर अनाथ हो जाता है।लेकिन वह कुछ और अनाथ बच्चों को साथ लेकर उनकी देखभाल करने लगता है। इस काम में एक पादरी उसकी मदद करता है जो उनके लिए चर्च की कुछ भूमि का इन्तजाम कर देता है। एबी ओर बच्चे एक फार्म बनाते हैं और इकट्ठे रहने लगते हैं।

एबी की मुलाकात एनी से होती है और वे शादी करके और अधिक बच्चों को गोद लेने का फैसला करते हैं। लेकिन तभी उसे पता चलता है कि उसकी मौत नजदीक आ रही है। वह बच्चों को साथ के एक अनाथालय में भेज देता है। जब एनी को ये पता चलता है तो वह पादरी को साथ लेकर अनाथालय में जाती है और सब बच्चों को वापस लाती है।तब तक एबी की मृत्यु हो जाती है और एनी उसका सपना पूरा करने के लिए बच्चों के साथ फार्म चलाने का काम जारी रखने का फैसला करती है।

UNNIKALE ORU KATHA PARAYAM

Malayalam/Colour/35 mm/120 mins

Screenplay : John Paul **Cast :** Mohanlal, Karthika, Thilakan, Sukumari **Camera :** Kumar S. **Audiography :** Viswanathan **Editing :** K. Narayanan **Art Direction :** Radhakrishnan **Costume Design :** M.M. Kumar **Music Direction :** Ouseppachan **Lyrics :** Bichu Tirumala **Male Playback Singer :** K.J. Yesudass **Female Playback Singer :** Chitra

Aby, a destitute orphan, finds an oasis of love in Thomas Abraham, a rich man whom he meets as the result of a road accident and who treats him like his own son. But his happy days in college end with the sudden death of Abraham and he is thrown out of the house by the latter's divorced wife.

Once again on the footpath, he meets some orphaned children and decides to take care of them. In this he is helped by a priest, who arranges for some church land for them. Aby and the children start a farm and live in a world of brotherhood and love.
On a vacation, Aby meets Annie and soon they decide to marry and adopt more and more children. Suddenly, however, Aby learns that he is dying. He sends the children away to a nearby orphanage. When Annie learns of this, she goes with the priest and brings all the children back to the farm. But by that time, Aby dies and Annie resolves to continue the farm with the children to realise Aby's dream and fulfill his goal.

वेदम पुतितु

तमिल/रंगीन/35 एम.एम./130 मिनट

निर्माण: जनानी आर्ट क्रिएशन **निर्देशन और पटकथा**: भारती राजा **अभिनय**: एस.सत्यराज, अमला, एस.चारु हासन, सरिधा, मास्टर दशरथी **छाया**: बी.कन्नन **ध्वनि आलेखन**: एस.पी. रामानाथन **सम्पादन**: पी. मोहन राज **कलानिर्देशन**: कमल शेखर, कुप्पन **वेशभूषा**: के. शंकर **संगीत निर्देशन**: आर. देवेन्द्रन, **गीत**: वैरा मुत्तू **पार्श्व गायन**: एस.पी. बालासुब्रह्मणयम, मलेशिया वासुदेवन, एस. जानकी, चित्रा.

बालू देवर गांव प्रमुख है।वह पक्का आस्तिक है। और उसके मन में दूसरे के लिए दया है। वह अपनी पत्नी पेची ओर एकलौते लड़के शंकर पांडी के साथ गांव में रहता है।उसी गांव में एक पवित्र ब्राह्मण नील कण्ठ शास्त्री अपनी बेटी वैदेही और बेटे शंकरन के साथ रहता है। वह विधुर है।

वैदही और शंकर पांडी के बीच प्यार हो जाता है।जब वैदही के पिता को ये पता चलता है तो उसे बहुत दुख होता है।वैदही अपने पिता के सामने से भाग जाती है और शास्त्री का शंकर पांडी के साथ झगड़ा होता है जिसमें अचानक दोनों किसी ऊँची जगह से गिर कर मर जाते हैं।

बच्चा शंकरन अकेला रह जाता है। केवल बालू देवर उसे सम्भालने के लिए आगे आता है।जब वैदही को अपने पिता की मृत्यु की खबर मिलती है ओर वह शंकरन को मिलने गांव आती है तो उसे चाहने वाला बदमाश कृष्णअय्यर हो-हल्ला मचा देता है और कहता है कि वैदही का गांव में आना अपशकुन है।

गावं के लोग उसके झांसे में आ जाते हैं और वैदही ओर शंकरन को गांव से निकालने की कोशिश करते हैं। इसमें बालू देवर की मृत्यु हो जाती है। इससे गांव के लोगों को बहुत दुख होता है और वे शर्मिंदा होते हैं।

VEDHAM PUTHITHU

Tamil/Colour/35 mm/130 mins.

Production : Janani Art Creations **Direction and Screenplay :** P. Bharathirajaa **Cast :** S. Sathyaraj, Amala, S. Charu Hasan, Saridha, Master Dhasarathi **Camera :** B. Kannan **Audiography :** S.P. Ramanathan **Editing :** P. Mohanraj **Art Direction :** Kamalasekar, Kuppan **Costume Design :** K. Shanker **Music Direction :** R. Devendran **Lyrics :** Vairamathu **Male Playback Singers :** S. P. Balasubramaniam, Malaysia Vasudevan **Female Playback Singers :** S. Janaki, Chitra

Balu Devar, the headman of a village is a staunch atheist with a golden heart. He lives along with his wife Peychi and only son Shankarapandi. In the same village lives a pious Brahmin widower named Neelakanta Shastri, with a daughter Vaidehi and a son Sankaran.

Vaidehi and Shankarapandi fall in love with each other. But when their love becomes known to her father after a dramatic episode, he is shocked. Vaidehi runs away from her father and he has a confrontation with Shankarapandi in which both accidentally fall off a Cliff and die.

The child Sankaran is left all alone. The only person who comes forward to take care of him is Balu Devar. When Vaidehi learns of her father's death and returns to the village to meet Shankaran, her jilted lover Krishna Iyer creates a furore over several incidents which he says are omens that her coming to the village is most inauspicious.

The villagers fall for his trick and come to chase away Vaidehi and Sankaran from the village for good. In the chaos, Balu Devar is killed. The villagers are shocked and ashamed.

वीडु

तमिल/रंगीन/35 एम.एम./108 मिनट

निर्माण : कला दास **निर्देशन और पटकथा :** बालु महेन्द्रा **अभिनय :** चोकालिंगा भागवाधार, अर्चना, भानुचंदर, सतिया, विजय **छाया :** बालु महेन्द्रा **ध्वनि आलेखन :** मूर्ति, लक्ष्मीनारयणन **सम्पादन :** बालु महेन्द्रा **कला निर्देश :** ए. रामासामी **वेशभूषा :** सेतु **संगीत निर्देशन :** इलयाराजा.

सुधा मध्यम वर्ग की एक कामकाजी अविवाहित युवती है। वह अपनी छोटी बहन और अवकाश प्राप्त दादा के साथ मद्रास में एक पुराने मकान में रह रही है। सुधा का अपने साथ काम करने वाले गोपी से विवाह होने वाला है।

उसके जीवन में संकट तब आता है जब मकान मालिक उन्हें मकान खाली करने का नोटिस भेजता है। नया मकान बहुत महंगा है और मकान ढूंढने के सारे प्रयास बेकार साबित होते हैं।

तभी सुधा का एक सहयोगी कर्मचारी आयंगार उसे नगर के बाहर पड़ी परिवार की जमीन पर छोटा सा मकान बनाने का सुझाव देता है। वह मकान के लिए ऋण दिलाने तथा दूसरे कामों में मदद करता है। मकान बनाने का काम शुरू हो जाता है लेकिन हर कदम पर रुकावट आती है। ठेकेदार उन्हें धोखा देता है और पकड़ा जाता है। जिससे काम रुक जाता है। इस बीच एक कुली वहां आता है और उनकी मदद करता है। छत बनने से पहले सारे पैसे समाप्त हो जाते हैं। तभी गोपी अपने बचाये हुए रुपये खर्च करके छत बनवा देता है। लेकिन पलस्तर फर्श और लकड़ी का काम अभी बाकी है। तभी एक और बड़ी समस्या उनके सामने आ खड़ी होती है।

VEEDU

Tamil/Colour/35 mm/108 mins.

Production : Kala Das **Direction and Screenplay :** Balu Mahendra **Cast :** Chockkalinga Bhagawadhar, Archanaa, Bhanuchandar, Sathiya, Vijaya **Camera :** Balu Mahendra **Audiography :** Murthy, Laxminarayanan **Editing :** Balu Mahendra **Art Direction :** A. Ramasamy **Costume Design :** Sethu **Music Direction :** Ilayaraja

Sudha, twenty-two and unmarried, is a middle class working girl. A school going younger sister and a retired grandfather are the only other members of her family. The three of them live in a portion of an old tenement house in Madras. Sudha is to marry her colleague Gopi, with whom she is in love.

Their life if disrupted one day when the landlord sends a legal notice asking them to vacate the premises. New accomodation is impossibly expensive and the search leads to frustration and despair.

But then Mr. Iyengar, an office colleague, persuades Sudha to build her own small house on a bit of land the the family owns on the outskirts of the city. He helps her get various housing loans and assists in completing all the formalities. The construction work begins, but at every step there is an obstacle. The contractor cheats them, is caught and abandons the work; but then a construction site coolie comes to the rescue. Then the roof has to be put in and all sources of funds have dried up. Tempers run wild and relationships are strained. In the face of various dilemmas, Gopi secretly puts in his saving and finishes the roofing. But the plastering, flooring and woodwork still remain. It is at this stage that a massive problem shocks them.

कथासार :
गैर-कथाचित्र

SYNOPSES :
NON-FEATURE FILMS

अंगोरा फार वूल

अंग्रेजी/रंगीन/35 एम.एम./20 मिनट

निर्माण : डी. गौतमन, फिल्म प्रभाग **निर्देशन** : के जगजीवन राम **छाया** : के जगजीवन राम **सम्पादन** : एम. सुब्रह्मणी **संगीत निर्देशन** : रास बिहारी दत्ता.

यह फिल्म ऊन देने वाले अंगोरा खरगोशों को पालने के बारे में है। यह धंधा पहाड़ी क्षेत्रों के लोगों के लिए बहुत लाभकारी है। इस फिल्म में खरगोशों को पैदा करने, उनको खिलाने पिलाने बिमारियों से बचाने ऊन उतारने तथा ऊन से बनी वस्तुओं की विक्रय के वैज्ञानिक तरीकों की जानकारी दी गई है।

ANGORA FOR WOOL

English/Colour/35 mm/20 mins.

Production : D. Gautaman, Films Division **Direction :** K. Jagajivan Ram **Camera :** K Jagajivan Ram **Editing :** M. Subramani **Music Direction :** Ras Bihari Datta

This film is about rearing of wool-yielding Angora rabbits, which can be a profitable occupation for the people of the cool, hilly regions of our country, as it requires a temperature range of 15 to 20 degrees Celsius. The scientific methods of rabbit management, such as proper breeding selection, housing, feeding, prevention and treatment of diseases, shearing and grading of wool and, finally, marketing of Angora wool products, are depicted in the film.

अंटार्कटिका–ए कन्टीन्यूइंग मिस्टरी (समाचार चित्र संख्या 101)

अंग्रेजी/रंगीन/35 एम.एम./18 मिनट

निर्माण : विजय बी. चन्द्रा, फिल्म प्रभाग **निर्देशन** : महेश काम्बले **छाया** : महेश काम्बले **सम्पादन** : शशि शिंदे **संगीत निर्देशन** : रमानुज दासगुप्ता

यह समाचार चित्र अंटार्कटिका के लिए छठे भारतीय वैज्ञानिक अभियान के बारे में है। इसमें भारतीय वैज्ञानिक के दल को ऊर्जा के गैर परम्परागत साधनों, मौसम विज्ञान, समुद्र विज्ञान, जीव विज्ञान, तथा भू विज्ञान के बारे में खोज और परिक्षण करते हुए दिखाया गया है।

ANTARACTICA — A CONTINUING MYSTERY (NEWS MAGAZINE NO. 101)

English/Colour/35 mm/18 mins.

Production : Vijay B. Chandra, Films Division **Direction :** Mahesh Kamble **Camera :** Mahesh Kamble **Editing :** Shashi Shinde **Music Direction :** Ramanuj Dasgupta

This newsmagazine highlights the Sixth Indian Scientific Expedition to Antarctica. The team of Indian scientists are shown carrying out experiments and research in the fields of non-conventional sources of energy, meteorology, marine resources, oceanography, land biology and geology during their stay on the icy continent.

बैरन हारवैस्ट

अंग्रेजी/रंगीन/16 एम.एम./23 मिनट

निर्माण, निर्देशन और छाया : राजीव महरोत्रा **ध्वनि आलेखन** : शैलेश सक्सैना **सम्पादन** : सीमरा जैन

इस फिल्म में ये दिखाया गया है कि पेड़ काटे जाने और बार-बार बाढ़ आने से किस तरह से पूर्वी उत्तर प्रदेश में आयोडीन की बहुत कमी हो गई है। जिसके फलस्वरूप लोगों की सेहत और मानसिक क्षमता पर बहुत बुरा असर पड़ा है।

BARREN HARVEST

English/Colour/16 mm/23 mins.

Production, Direction and Camera : Rajiv Mehrotra **Audiography :** Shailesh Saxena **Editing :** Sameera Jain

This film shows how deforestation and frequent flooding have led to a serious iodine deficiency in parts of Eastern U.P., which in turn has had a catastrophic effect on the health and mental ability of the local population.

बशीर–द मैन

मलयालम/रंगीन/35 एम.एम./33 मिनट

निर्माण : कन्नमकुलम अब्दुल्ला **निर्देशन और पटकथा** : एम.ए. रहमान **छाया** : दीवाकर मेनन **ध्वनि आलेखन** : टी. कृष्णनउन्नी **सम्पादन** : सुधीश **संगीत निर्देशन** : एस.पी. रमेश

इस फिल्म में केरल के प्रसिद्ध लेखक पदमश्री वोईक्कम मोहम्मद बशीर के जीवन को उनकी अपनी ही आवाज और भाषा में चित्रित करने का प्रयास किया गया है। फिल्म में आजादी की लड़ाई में उनके योगदान, लेखक के रूप में उनकी उपलब्धियों और जेल तथा पागल-खाने में बिताये गये दिनों पर भी प्रकाश डाला गया है। फिल्म में उनके पूर्ण जीवन को प्रस्तुत करने की कोशिश की गई है।

BASHEER — THE MAN

Malayalam/Colour/35 mm/33 mins.

Production : Kannamkulam Abdulla **Direction and Script :** M.A. Rahman **Camera :** Diwakar Menon **Audiography :** T. Krishananunni **Editing :** Sudhish **Music Direction :** S.P. Ramesh

The film tries to bring out the character of Padmashree Vaikkom Mohammed Basheer, the renowned writer from Kerala, in his own voice and words and his unique body language — his involvement in the freedom movement, his writing career, his periods in jail and in a lunatic asylum and even his ritualistic behavioural patterns. It attempts to depict the whole man in all his complexity and humanity.

भोपाल: बियोंड जेनोसाइड

अंग्रेजी/रंगीन/16 एम.एम./80 मिनट

निर्माण : सिनेमार्ट फाउंडेशन **निर्देशन** : तपन के बोस, सुहासिनी मुले, सलीम शेख **छाया** :तपन के घोस,सुहासिनी मुले, सलीम सेख **ध्वनि आलेखन** : जे.पी. दीवान **सम्पादन** : तपन के.बोस

इस फिल्म में दिसम्बर 1984 में हुए भोपाल गैस कांड तथा उसकी बाद की घटनाओं को दिखाया गया है। इसमें गैस के प्रभाव की बजाय उसके लक्ष्णों का इलाज करने,जिम्मेदारी से बचने के प्रयासों और मुआवजे के भुगतान को लेकर अभी तक चल रहे कानूनी दाव पेंच पर प्रकाश डाला गया है।

BHOPAL : BEYOND GENOCIDE

English/Colour/16 mm/80 mins.

Production : Cinemart Foundation **Direction :** Tapan K. Bose, Suhasini Mulay, Salim Shaikh **Camera :** Salim Shaikh, Tapan K. Bose, Suhasini Mulay **Audiography :** J.P. Diwan, **Editing :** Tapan K. Bose

The film records the events of the Bhopal gas leak disaster in December 1984 and its aftermath — the treating of symptoms rather than the diagnosing of the effects of toxins on the local population, the evasions of responsibility and the legal wrangles that still surround the struggle for compensation.

कलर्स ऑफ लाइफ (समाचार चित्र संख्या100)

अंग्रेजी/रंगीन/35 एम.एम./10 मिनट,

निर्माण : प्रीतम अर्शी, फिल्म प्रभाग **निर्देशन** : महेश पी. सिन्हा **छाया** : महेश पी. सिन्हा, सन्तलाल प्रसाद **सम्पादन** : प्रभाकर शिंदे **संगीत निर्देशन** : रामानुज दासगुप्ता

इस समाचार चित्र में विक्लांग कलाकार जयंती लाल शिहोरा की सच्ची कहानी दिखाई गई है। 1957 में एक दुर्घटना में इनके दोनों हाथ कट गए थे। फिल्म में दिखाया गया है कि वे किस तरह मुह से ब्रुश पकड़ कर चित्र बनाते है।

COLOURS OF LIFE (NEW MAGAZINE NO. 100)

English/Colour/35 mm/10 mins.

Production : Pritam S. Arshi, Films Division **Direction :** Mahesh P. Sinha **Camera :** Mahesh P. Sinha, Santlal Prasad **Editing :** Prabhakar Shinde **Music Direction :** Ramanuj Dasgupta

This newsmagazine highlights the true story of Jayantilal Shihora, a handicapped artist, who lost both his hands in an accident in 1957. It shows his art of painting by holding the brush in his mouth.

ए को-ऑपरेटिव फॉर स्नेक कैचर्स

अंग्रेजी/रंगीन/16 एम.एम./19 मिनट

निर्माण : इको मीडिया प्रा० लि० **निर्देशन** : रोमुलस विटकर, शेखर दतात्री **पटकथा** : जाहीदा विटकर **छाया** : शेखर दतात्री **सम्पादन** : शेखर दतात्री, रेवती मुखर्जी **संगीत निर्देशन** : नील चट्टोपाध्याय

इरूला साँप पकड़ने वालों की जनजाति है। पर्यावरण सम्बन्धी कारणों से इन लोगों के साँप पकड़ने पर पाबंदी लगा दी गई लेकिन सहकारी समिति बना कर और जंगलो के बारे में अपने जान के बल पर ये लोग जहर प्राप्त करने के लिए अब साँप पकड़ते है।

A COOPERATIVE FOR SNAKE CATCHERS

English/Colour/16 mm/19 mins.

Production : Eco Media Pvt. Ltd. **Direction :** Romulus Whitaker, Shekar Dattatri **Script :** Zahida Whitaker **Camera :** Shekar Dattatri **Editing :** Shekar Dattatri, Revati Mukherjee **Music Direction :** Neel Chattopadhyaya

The Irulas, a very poor tribe of hunter-gatherers, was deprived of a livelihood when ecological considerations led to the banning of snake catching for the snake skin trade. However, with the formation of a cooperative which utilises their wildlife knowhow to catch snakes for their venom, to be used in making anti-venom serum, about a hundred Irula families have again found a livelihood.

द एट कालम अफेयर

अंग्रेजी/सादी/35 एम.एम./31 मिनट

निर्माण : भारतीय फिल्म और टेलीविजन संस्थान के निदेशक **निर्देशन और पटकथा** : श्रीराम राघवन **अभिनय**: शिव कुमार सुब्रहमणीयम, राचेल रूबेन, **छाया** : हरि नायर **ध्वनि आलेखन** : विश्वदीप चटर्जी **सम्पादन** : राजकुमार हीरानी

जब समाचार पत्र के पहले पृष्ठ पर छपा चित्र अन्तिम पृष्ठ के चित्र से मिलना चाहे तो क्या होता है ? ऐसा करने के लिए उसे अखबार के सारे पृष्ठों में से हो कर गुजरना पड़ता है।

THE EIGHT COLUMN AFFAIR

English/B & W/35 mm/31 mins.

Production : The Director, Film and Television Institute of India **Direction and Screenplay :** Sriram Raghavan **Cast :** Shivkumar Subramanyam, Rachel Reuben **Camera :** Hari Nair **Audiography :** Wishwadeep Chatterjee **Editing :** Raj Kumar Hirani

What happens when a photograph on the front page of a newspaper wants to meet a photograph on the last page? To do this, it must necessarily pass through several pages of the paper. It comes alive and so does the entire newspaper ...
Meet Robi — a marathon winner on the front page. And Shireen — a tennis champion on the last page ... in a zany love story set in a newspaper.

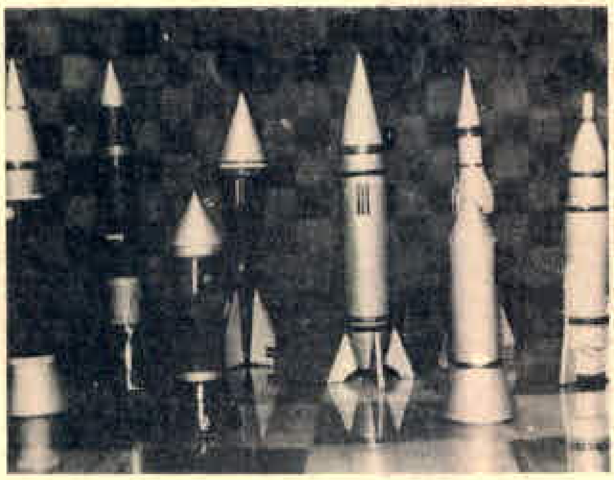

एंडगेम

अंग्रेजी/रंगीन/35 एम.एम./3 मिनट

निर्माण : बी.आर. शेंडगे, फिल्म प्रभाग **निर्देशन और कार्टून** अरूण गोंगडे **छाया** : एम.एस. गंगाधर, एम.एस. पटवारी **ध्वनि आलेखन** : एन. प्रसाद, एफ.ए. वारिस **सम्पादन** : हरीश सुतार **संगीत** : रघुनाथ सेठ

हमारी पृथ्वी अब एक तरह से शतरंज की चौपड़ बन गई है जिसमें बड़ी ताकतों ने आधुनिक परमाणु हथियार सजा दिये हैं। इससे मानवता के अस्तित्व के लिये ही खतरा पैदा हो गया है।

ENDGAME

English/Colour/35 mm/3 mins.

Production : B.R. Shendge, Films Division **Direction :** Arun Gongade **Camera :** M.S. Gangadhar, M.S. Patwari **Audiography :** N. Prasad, F.A. Waris **Editing :** Harish Sutar **Music :** Raghunath Seth **Animation :** Arun Gongade

Now our planet has almost become a chess board on which the super powers have placed sophisticated weapons. This has threatened the very existence of humanity. This short animation film attempts to make us aware that the use of atomic power for peace is the prime necessity now

गोल्डन मुगा सिल्क-द कल्चरल हेरीटेज ऑफ असम

अंग्रेजी/रंगीन/16 एम.एम./30 मिनट

निर्माण : केन्द्रीय रेशम बोर्ड के निर्देशक (उत्तरपूर्व) **निर्देशन** : शिव प्रसाद ठाकुर **पटकथा** : दीपक दुआरा **छाया** : डी.डी. बजोराइया **ध्वनि आलेखन** : जतीन शर्मा, **सम्पादन** : विजय परमार **संगीत निर्देशन** : भूपेन उजीर

इस फिल्म में सुनहरे रंग की मुगा रेशम के उद्योग के बारे में जानकारी दी गई है। ये रेशम सारे विश्व में केवल असम में ही होती है।

GOLDEN MUGA SILK — THE CULTURAL HERITAGE OF ASSAM

English/Colour/16 mm/30 mins.

Production : The Director (NE) Central Silk Board **Direction :** Siba Prasad Thakur **Script :** Deepak Duarah **Camera :** D.D. Bajoria **Audiography :** Jatin Sarma **Editing :** Vijay Parmar **Music Direction :** Bhupen Uzir

A comprehensive look is taken at the industry which has developed around the fabled golden yellow Muga silk, in the production of which Assam has a world monopoly.

द किंगडम ऑफ गॉड

अंग्रेजी/रंगीन/35 एम.एम./72 मिनट

निर्माण : शिल्पभारती पब्लिसिट, फिल्म प्रभाग के लिए **निर्देशन** : रनबीर रे **पटकथा** : एस.वी. वासुदेव, रनबीर रे **छाया** : अशोक गुंजाल **सम्पादन** : सुदांशु चक्रवर्ती **संगीत निर्देशन** : अपूव

इस फिल्म में भारत की लोकचित्र कला और लोक कला की अनेक प्रमुख परम्पराओं को दर्शाया गया है। इन परम्पराओं की गरिमा उनके महत्व तथा अलग-अलग विशेषताओं की जानकारी भी फिल्म में दी गई है।

THE KINGDOM OF GOD

English/Colour/35-mm/72 mins.

Production: Silpabharati Publicity for Films Division **Direction:** Ranabir Ray **Script:** S.V. Vasudev, Ranabir Ray **Camera:** Ashok Gunjal **Editing:** Sudhansu Chakravarty **Music Direction:** Apurva.

Various prominent traditions of the folk painting and art of India are shown in all their glory, with an outline of their significance, context and individual characteristics.

लुकिंग बैक

अंग्रेजी/रंगीन/35 एम.एम./20 मिनट

निर्माता : दृष्टिकोण प्रोडक्शंस, फिल्म प्रभाग के लिए **निर्देशन, पटकथा और छाया** : प्रकाश झा **ध्वनि आलेखन** : जे. कीथ रॉबिन्सन **सम्पादन** : प्रकाश झा

इस फिल्म में अपट्रान कम्पनी की इलैक्ट्रानिक्स वस्तुओं के उत्पादन के क्षेत्र में हुई प्रगति को दर्शाया गया है। इस कम्पनी ने सूचना टक्नौलजी, औद्योगिक डिजिटल प्रणायियों और इंस्ट्रूमेंटेशन प्रणालियों जैसे अनेक आधुनिक क्षेत्रों में पिछले दस वर्षों में जो नये काम किये हैं इनका विस्तृत वर्णन मिलता है।

LOOKING BACK

English/Colour/35 mm/20 mins.

Production : Drishtikon Production for Films Division **Direction and Script :** Prakash Jha **Camera :** Prakash Jha **Audiography :** J. Keith Robinson **Editing :** Prakash Jha

A detailed account of the wide range of electronics production activities of UPTRON and the quantum leap in its diversification into several sophisticated areas, such as industrial digital systems, communications, information technology and highly complex control and instrumentation systems, in the past decade.

पानी

मराठी/रंगीन/16 एम.एम./34 मिनट

निर्माण और निर्देशन : समीत्रा भावे **छाया** : शरद नावले, **ध्वनि आलेखन** : विलियम हन्ट, हेमन्त सालवी **सम्पादन** : जवेद सयाद **संगीत निर्देशन** : श्रीरंग उमरानी

इस फिल्म में एक गांव में महिलाओं द्वारा कुछ कार्यकताओं की मदद से पीने के पानी की समस्या हल करने के सामूहिक प्रयासों की जानकारी दी गई है।

PANI

Marathi/Colour/16 mm/34 mins.

Production and Direction : Sumitra Bhave for 'Srujan' **Camera :** Sharad Navle **Audiography :** William Hunt, Hemant Salvi **Editing :** Javed Saiyad **Music Direction :** Shrirang Umrani

This film tells the story of a group of women's collective effort in solving the problem of drinking water in a village, with the help of a group of activists.

रास्ते बंद हैं सब

हिन्दी/रंगीन/16 एम.एम./54 मिनट

निर्माण :मंजरी डिंगवाने ,रूरल लेबर सैल **निर्देशन** : मंजीरा दत्ता **छाया** : बी.पी. सिंह **ध्वनि आलेखन** : ए.एन.पदमनाबन **सम्पादन** : रीना मोहन

उत्तर प्रदेश में पिछड़े हुए पहाड़ी इलाके में जोनसार बवार गांव की पृष्ठ-भूमि पर बनाई गई इस फिल्म में ये दिखाया गया है कि भारत के गांव में इस समय जो असंतोष और हिंसा का वातावरण बना हुआ है, उसके असली कारण क्या हैं।

RASTE BUND HAIN SUB

Hindi/Colour/16 mm/54 mins.

Production : Manjari Dingwaney, Rural Labour Cell **Direction :** Manjira Datta **Camera :** B.P. Singh **Audiography :** A.N. Padmanavan **Editing :** Reena Mohan

Set in Jaunsar Bawar village in U.P., in neglected hilly terrain which was designated a backward tribal area in post-independence India, this film invites the audience to perceive for themselves the reasons for the quiet violence and resentment which today permeates and divides semi-feudal rural India.

संकल्प

हिन्दी /रंगीन/16एम.एम./27 मिनट/

निर्माण : मध्य प्रदेश फिल्म विकास निगम **निर्देशन** : राजेन्द्र जांगले **पटकथा** : परेश कामदार, राजेन्द्र जांगले **छाया** : राजेन्द्र जांगले **ध्वनि आलेखन** : दिलीप सुब्रह्मण्यम **सम्पादन** : राजेश परमार **संगीत निर्देशन** : रजत ढोलकिया

इस फिल्म में सोन नदी पर बाण सागर प्रयोजना तथा उससे सम्बन्धित अन्य योजनाओं के निर्माण और इनसे वहाँ के लोगों के होने वाले लाभों को काव्यात्मक ढंग से प्रस्तुत किया गया है।

SANKALP

Hindi/Colour/16 mm/27 mins.

Corporation Ltd. **Direction :** Rajendra Janglay **Script :** Paresh Kamdar, Rajendra Janglay **Camera :** Rajendra Janglay **Audiography :** Dileep Subramanium **Editing :** Rajesh Parmar **Music Direction :** Rajat Dholakiya

The film explores poetically the construction of the Bansagar Project dam on the river Sone, various allied schemes and their benefits to the population of the area.

द स्टोरी ऑफ देहली

उर्दू, हिन्दी (अंग्रेजी शीर्षक के साथ)/रंगीन/35 एम.एम./60 मिनट

निर्माण : सरबजीत इन्टरनेशनल, फिल्म प्रभाग के लिए **निर्देशन और पटकथा** : सरबजीत सिंह **अभिनय** : मनोहर सिंह, नीलम मान सिंह **छाया** : जहांगीर चौधरी **ध्वनि आलेखन** : विजय चौपड़ा, **सम्पादन और कला निर्देशन** : करमजीत सिंह **वेशभूषा** : डोली आहलूवालिया **संगीत निर्देशन** : लूइस बैंकस

इस फिल्म में देहली के 3000 वर्ष के इतिहास की झाँकी प्रस्तुत की गई है। ये कहानी पाँच व्यक्तियों के माध्यम से कहीं गई है जो ऐतिहासिक पात्रों के रूप में प्रकट होते हैं।

THE STORY OF DELHI

Urdu, Hindi (with English titles)/ Colour/35 mm/60 mins

Production : Serbjeet International, for Films Division **Direction and Screenplay :** Serbjeet Singh **Cast :** Manohar Singh, Neelam Mansingh **Camera :** Jehangir Chaudhary **Audiography :** Vijay Chopra **Editing and Art Direction** Karamjeet Singh **Costume Design :** Dolly Ahluwalia **Music Direction :** Louis Bank

The film traces the 3000 years of the history of the city of Delhi, through five characters that appear in various sequences as historical persons.

फिल्म समारोह निदेशालय, राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम लिमिटेड द्वारा संकलित, विज्ञापन एवं दृश्य प्रचार निदेशालय, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा सुसज्जित एवं निर्मित तथा वीरेन्द्रा प्रिंटर्स नई दिल्ली द्वारा मुद्रित।

सं. 2/1/88 PPIV हिन्दी/अंग्रेजी – 2,500 April 88

Compiled by the Directorate of Film Festivals, NFDC Ltd. designed and produced by the Directorate of Advertising and Visual Publicity, Ministry of I&B, Government of India and Printed at Veerendra Printers, New Delhi

No. 2/1/88-PPIV Hindi/English-2,500 April 88